Contact
Corporate Office:
Office Building, Opp. Deepak Builders
Lodhi Club Road,
Shaheed Bhagat Singh Nagar,
Ludhiana-141012 (Punjab)

Email :
write2henna@gmail.com
info@e9news.in

Website :
www.e9news.in

Contact Numbers :
98729-44011, 99149-02484
98763-61111, 73077-77740

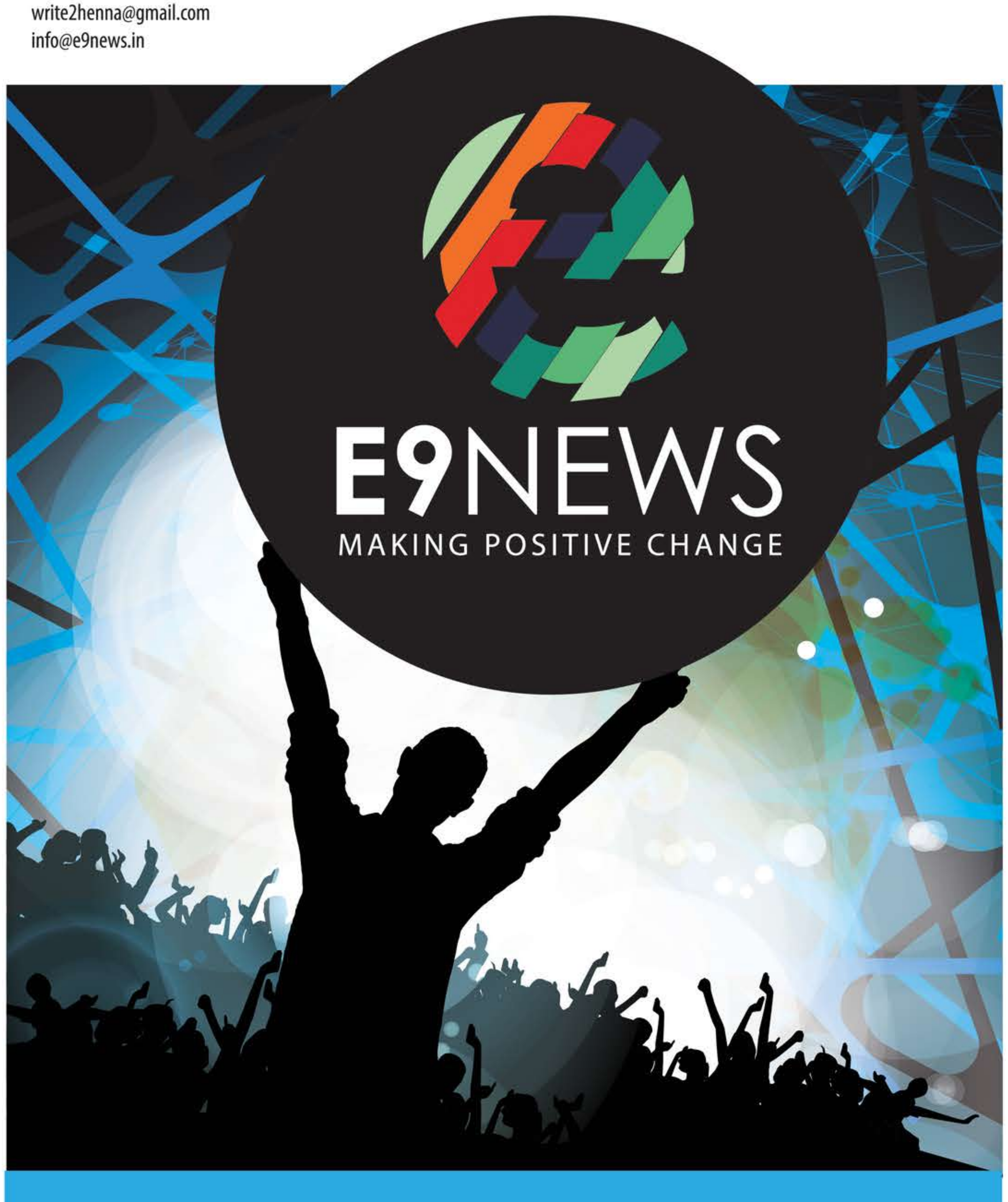

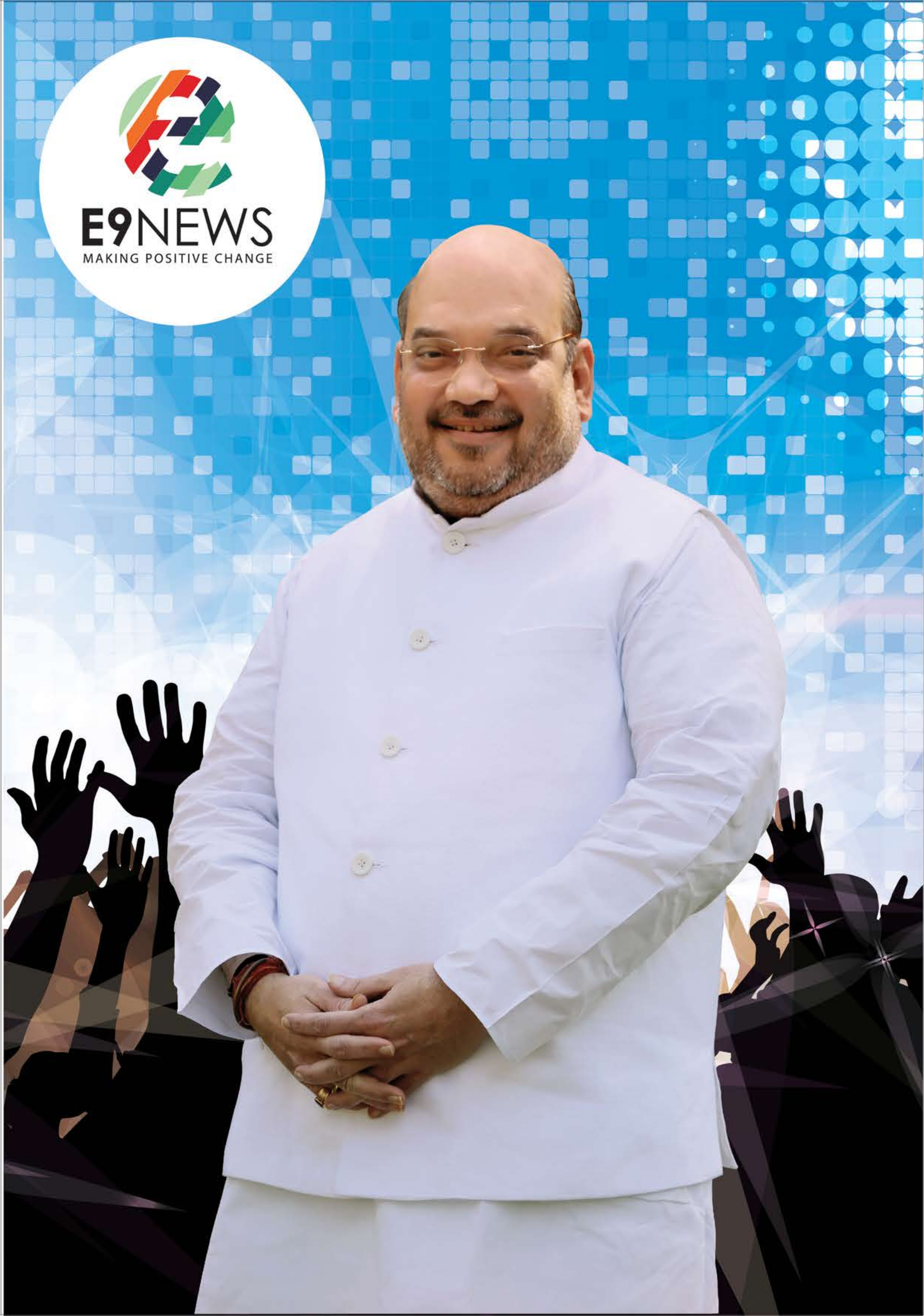

E9NEWS
MAKING POSITIVE CHANGE

Corporate Office: Office Building, Opp. Deepak Builders, Lodhi Club Road, Shaheed Bhagat Singh Nagar, Ludhiana-141012

Email : info@e9news.in | Website : www.e9news.in

Contact Numbers :
98729-44011, 99149-02484, 98763-61111, 73077-77740

E9NEWS
MAKING POSITIVE CHANGE

5 राज्यों में सत्ता का संग्राम

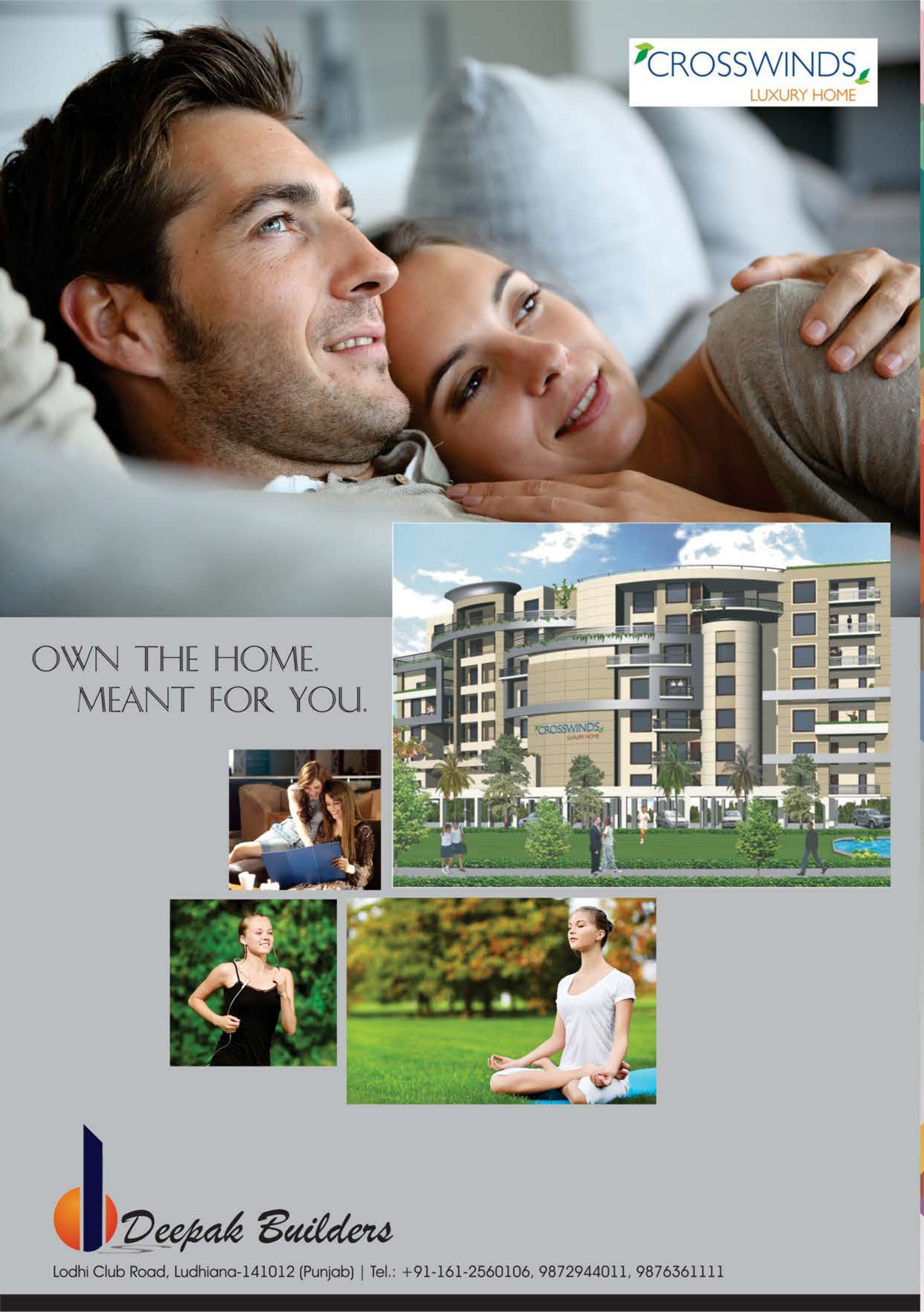

E9NEWS
MAKING POSITIVE CHANGE

MONTHLY MAGAZINE
YEAR-1 VOL. 01

JANUARY, 2017

CHIEF EDITOR
HENNA SINGAL

RESIDENT EDITOR
AKASH SINGAL

MANAGING EDITOR
DALJIT SINGH ARORA
R. SHARMA

JOINT EDITOR
JAGMOHAN SINGH

PICTURE EDITOR
MANOJ SHARMA MONA

BUSINESS EXECUTIVE
ASHOK KUMAR CHOUDHARY
SUNIL KUMAR
HARMINDER CHAUHAN

LEGAL ADVISOR
KARAN KALIA
B.COM, LLB, LLM
UNIVERSITY OF PENSYLVANIA
(FORMER SENIOR ASSOCIATE RAM JETHMALANI LAW CHAMBER)

INTERNATIONAL MARKETING HEAD
HARPREET SINGH GANDHOK

TEAM ASSOCIATES
SHRIDHAR AGGARWAL
SHIVANGI SHARMA
RAVIRANJAN KUMAR

BUSSINESS OFFICE
2ND FLOOR, OPP. DEEPAK BUILDERS NEAR LODHI CLUB,
SHAHEED BHAGAT SINGH NAGAR,
LUDHIANA-141012 (PUNJAB)
Ph. 0161-2560106

(M) 98729-44011, 99149-02484,
98763-61111, 73077-77740

e-mail : e9newsglobal@gmail.com
e-mail : info@e9news.in

वामित्व, प्रकाशक व मुद्रक हिना सिंघल द्वारा

जालंधर से मुद्रित और सामने दीपक बिल्डर्स, लोधी क्लब रोड, शहीद भगत सिंह नगर, लुधियाना (पंजाब) से प्रकाशित।

RNI REGD. NO.
PUNMUL01224/19/1/2011-TC

E9NEWS
MAKING POSITIVE CHANGE

This magazine
is an initiative to change
people's mindset for
**making positive
change...**

E9NEWS
MAKING POSITIVE CHANGE

संपादकीय.Com

यूपी के रण को जीतने का शाह का मेगा प्लान

उत्तर प्रदेश में चुनाव के बिगुल के साथ ही भारतीय जनता पार्टी अपनी पूरी ताकत झोंकने लगी है। इस चुनाव में भाजपा का एक चुनावी नारा हाथी जम गया जाड़े में, पंजा गया भाड़े में, साइकिल गई कबाड़े में, अब बस कमल बचा अखाड़े में काफी लोकप्रिय हो रहा है। इस चुनाव में अमित शाह भाजपा की जीत के लिए कई ऐसी रणनीति बना रहे हैं जिसे इससे पहले यूपी भाजपा के कार्यकर्ताओं ने सुना नहीं है। अमित शाह इस बार के चुनाव में प्रदेश के जातीय समीकरण को देखते हुए जिलेवार एक एक लिस्ट बना रहे हैं और यह लिस्ट उनके स्मार्ट फोन में मौजूद है। उत्तर प्रदेश के चुनावी रण में भारतीय जनता पार्टी एकलौती ऐसी पार्टी है जो बिना सीएम उम्मीदवार के मैदान में उतरी है, पार्टी पूरी तरह से प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे पर निर्भर है, माना जा रहा है कि यूपी में आगामी चुनाव तक तकरीबन हर हफ्ते पीएम मोदी विशान जनसभा को संबोधित करेंगे, इसकी पूरी योजना शाह ने तैयार भी कर ली है। सूत्रों की मानें तो इसके लिए शाह ने अपनी भरोसेमंद टीम गुजरात से बुलाई है और वह इसपर काफी हद तक निर्भर भी हैं और इस पर बहुत की करीबी से नजर भी रख रहे हैं। शाह ने इसके अलावा आरएसएस से भी इस चुनाव में मदद की अपील की है। शाह की अपील पर आरएसएस ने तमाम जगहों पर अपने कार्यकर्ता मैदान में उतार दिए हैं जो तकरीबन हर बूथ पर मौजूद हैं। इससे पहले भी संघ ने 2014 के चुनाव में तमाम साधू और संतो की फौज को चुनावी मैदान में उतारा था और पार्टी को 71 सीटों पर जीत हासिल हुई थी, उस वक्त मैदान में साध्वी निरंजन ज्योति, साक्षी महाराज मैदान में थे, लेकिन जिस तरह से इन लोगों ने राम जादे हरामजादे जैसे बयान दिए थे उसपर इस बार अमित शाह ने पूरा नियंत्रण कर रखा है और किसी भी तरह का कोई विवादित बयान सामने नहीं आया है। अभी तक किसी भी भाजपा के सांसद, व यूपी के मंत्री को चुनाव मैदान में उतरने को नही कहा गया है। दिलचस्प बात यह है कि सूत्र कहते हैं कि अगले लोकसभा चुनाव में लाल कृष्ण आडवाणी गांधीनगर से चुनाव नही लड़ेंगे और अमित शाह इस चुनाव में मैदान में उतरेंगे और पार्टी के कार्यकर्ता यहां तक कहते हैं कि अगले चुनाव में जीत के बाद अमित शाह देश के अगले गृहमंत्री बनेंगे। ऐसे में जो बात काफी दिलचस्प है वह यह कि ऐसे में मौजूदा गृहमंत्री राजनाथ सिंह कहां जाएंगे जिन्हे इस बार के यूपी चुनाव में उस तरह की महत्ता नहीं दी गई है जिसकी उन्हें अपेक्षा थी। समाजवादी पार्टी में कलह की जड़ माने जाने वाले अमर सिंह को जिस तरह से केंद्र ने जेड श्रेणी की सुरक्षा मुहैया कराई है उसने अलग तरह के संकेत दिए हैं। गृह मंत्रालय में वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि यह सुरक्षा काफी जल्दबाजी में मुहैया कराई गई है, महज 24 घंटों के भीतर इस फैसले पर मुहर लगाई गई , यहां तक की मूलभूत जांच और ऑडिट भी इस फैसले से पहले नही की गई।। अमर सिंह अब 24 जवानों की सुरक्षा के घेरे में रहेंगे जिसमें चार से पांच एनएसजी के कमांडो भी होंगे। सपा के भीतर इस श्रेणी की सुरक्षा पाने वाले वह दूसरे नेता है, अमर सिंह के अलावा यह सुरक्षा मुलायम सिंह यादव को भी प्राप्त है। इस फैसले के तुंरत बाद अखिलेश के खेमे ने यह आरोप लगाया कि सपा के भीतर शकुनी की भूमिका अमर सिंह ही निभा रहे हैं। कई ऐसे पोस्टर भी प्रदेश में लगाए गए जिसमें अमर सिंह और शाह के बीच अपवित्र सांठगांठ की बात कही गई है। माना जा रहा है कि अखिलेश यादव इस फैसले को भाजपा और अमर सिंह के बीच गठबंधन के पुख्ता सबूत के तौर पर चुनावी मैदान में रखेंगे। नरेश अग्रवाल यह कह चुके हैं कि अमर सिंह शकुनी की भूमिका निभा रहे हैं और इसका इनाम उन्हें भाजपा की ओर से मिला भी है। मुलायम सिंह यादव ने भी हाल में अखिलेश यादव के सामने अपनी कमजोरी को जाहिर करते हुए कहा कि अखिलेश मेरा बेटा है और वह जो कर रहा है सही कर रहा है। हाल में अखिलेश यादव की ओर से चुनाव आयोग को जो दस्तावेज दिए गए हैं उसमें अमर सिंह की भूमिका का जिक्र भी किया गया है। माना जा रहा है कि इन दस्तावेजों में उन्होंने मुरली देवड़ा की बात का भी जिक्र किया है जिसमें उन्होंने कहा था कि अमर सिंह परिवार में सिर्फ विवाद पैदा करते हैं। इसके लिए उन्होंने अंबानी परिवार में अंबानी बंधू के बीच अलगाव, संजय दत्त और प्रिया दत्त के बीच अलगाव का उदाहरण दिया है। अखिलेश यादव ने अपने पिता को यह भी कहा कि अमर सिंह मुलायम सिंह यादव के जरिए खुद देश के राष्ट्रपति के पद पर पहुंचना चाहते हैं और वह नेताजी को बरगला रहे हैं। माना जा रहा है कि मुलायम को उनके रणनीतिकारों ने यह बताया है कि अगर पार्टी दो टुकड़ों में बंटी और पार्टी का चुनाव चिन्ह छिना तो पार्टी टूट जाएगी और आगामी चुनाव में यह धराशाई हो जाएगी। इलेक्शन कमिशन ने अब सपा का चुनाव चिन्ह मौजूदा मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को जारी कर दिया है। अखिलेश बहुत जल्द ही महागठबंधन की तैयारी कर रहे हैं। जिसमें कांग्रेस भी शामिल है। अब यह तो समय ही बताऐगा कि यह गठबंधन क्या गुल खिलाता है। आजम खान और शिवपाल यादव ने मुलायम सिंह से इस बात को एक बार फिर से दोहराया है कि पार्टी के भीतर विवाद है और चुनाव को महज कुछ हफ्ते ही रह गए हैं, लेकिन पार्टी की ओर से एक भी बड़ी रैली नहीं हो सकी है, ऐसे में पार्टी खुद के लिए गड्ढा खोद रही है, लेकिन दूसरी तरफ अमित शाह तमाम पीएम मोदी की बड़ी रैलियों के जरिए लगातार अपनी पैठ बना रहे हैं, भाजपा नोटबंदी का जमकर प्रचार कर रही है और उसको इसका लाभ भी हो रहा है, इसके पीछे उन्होंने अमर सिंह और शाह की जोड़ी को जिम्मेदार भी बताया है।

–हिना सिंघल, मुख्य संपादक

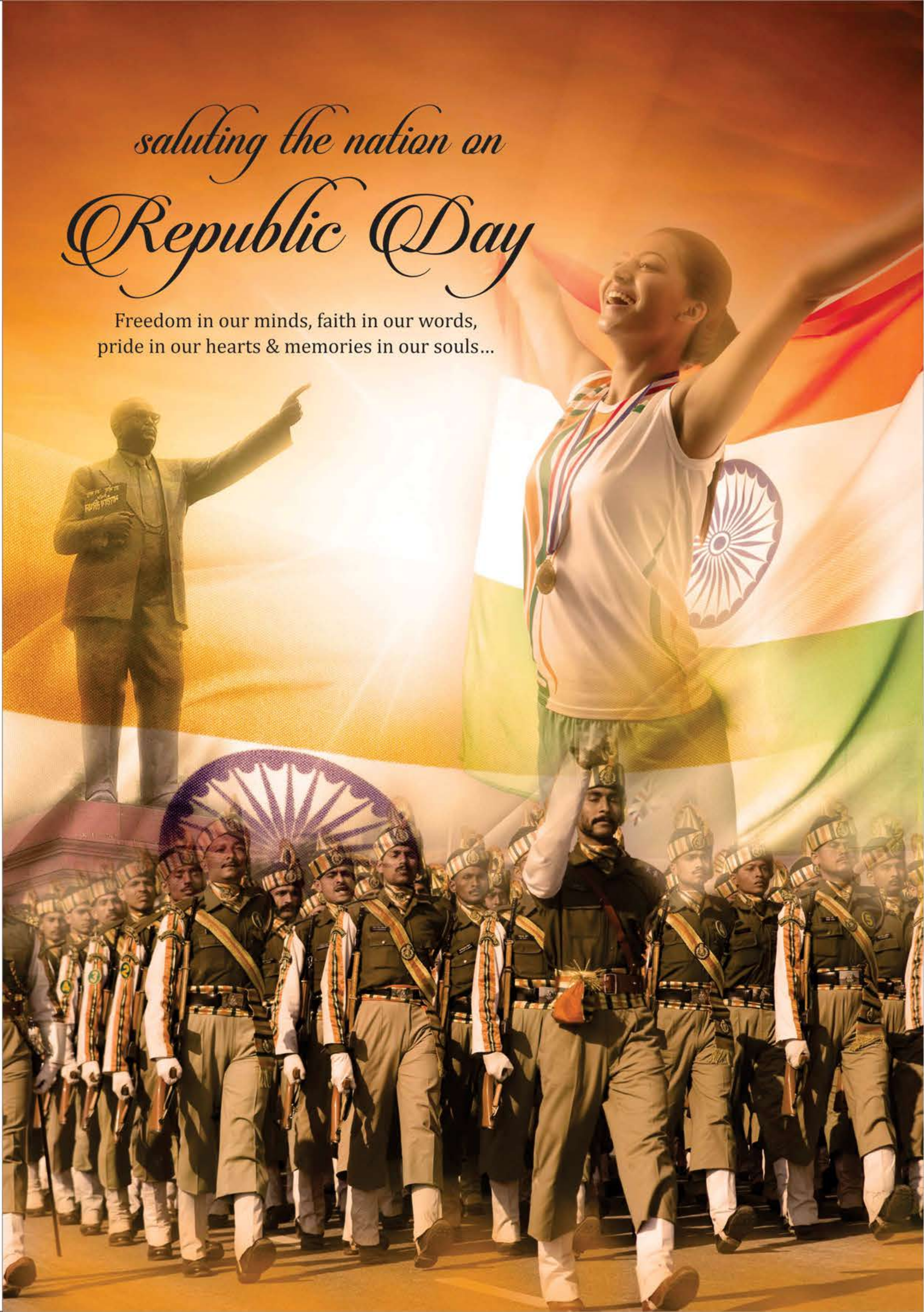

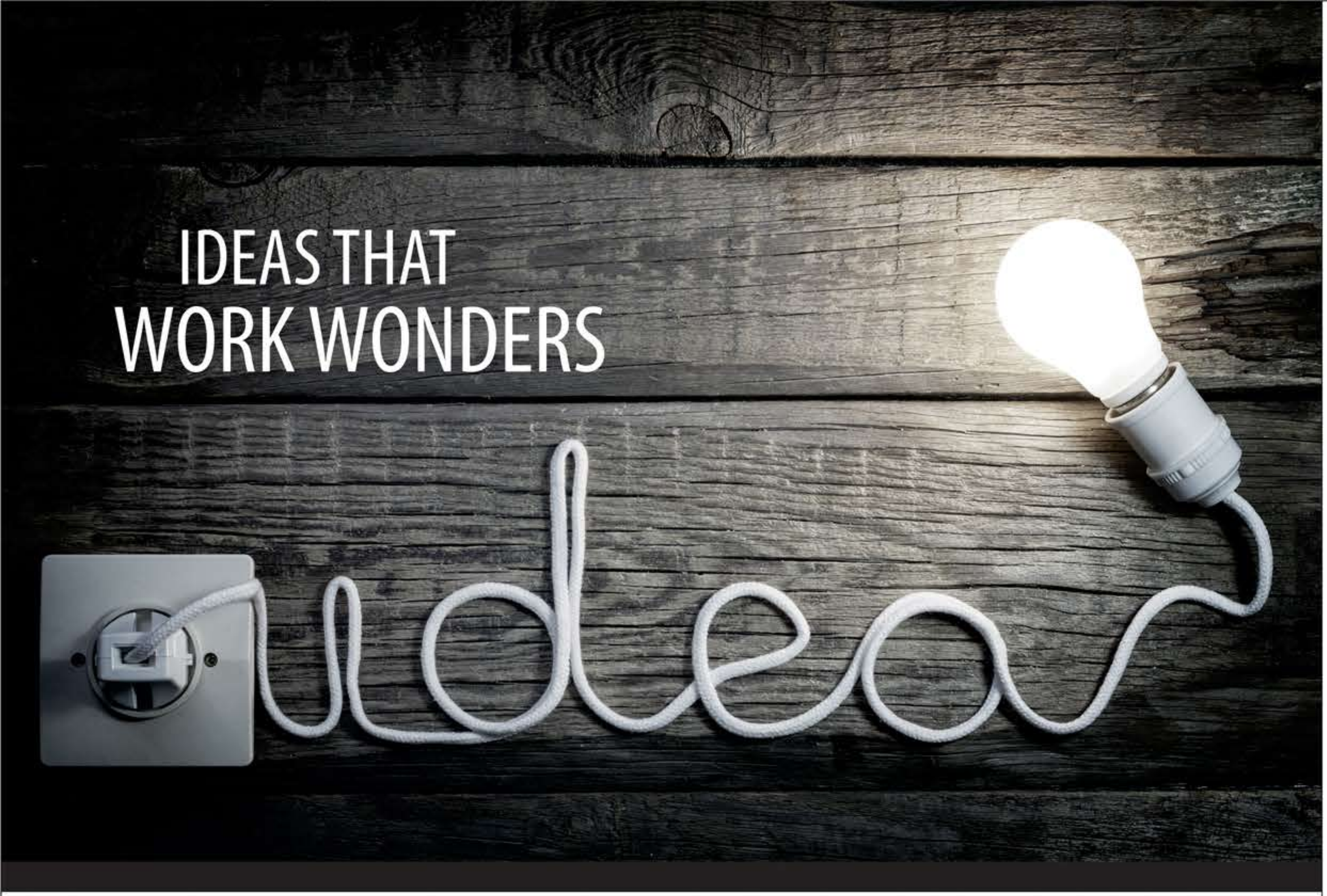

Is your brand communication on the right track with your business vision?
Have any doubt? It's the right time to take a fast re-check and partner with us!
We are a fully integrated advertising agency, with more than 23 years of diverse expertise in offering A to Z branding solutions to valued clients PAN India.

sage designs
pure ideas perfect execution

Ravi Dutt Sharma 98100 38907 | www.sagedesigns.in

Branding, Advertising, Design, Print, Electronic, Outdoor, Digital

Why Sheila Dikshit is happy to step down as Congress' CM candidate

UP ELECTION 2017

Ghulam Nabi Azad, Leader of Opposition in Rajya Sabha and Congress's poll strategy in-charge of Uttar Pradesh appeared buoyant in announcing that his party was going to have an alliance with Akhilesh Yadav's Samjawadi Party for elections in Uttar Pradesh. He showed no sign of anxiety, or cared to explain, now even asked (from what was shown on TV news channels) would happen to their pre-poll catch phrase "27 Saal UP Behal" (27 years UP in disarray). On 5 December, 1989 ND Tiwari relinquished chief minister's post after Congress was badly defeated in assembly elections, heralding entry of Mulayam Singh Yadav as a heavy weight politician to be at the helm of UP in times to come. Since then Congress has become Behal in Uttar Pradesh, which has a 403 member strong assembly and sends 80 Lok Sabha and 31 Rajya Sabha MPs. Azad added that so far the number of seats Congress would fight and names of constituencies which it would fight in alliance with Samjawadi Party. Ironically, Congress is dumping its much thought after pre-poll "UP Behal" slogan to boost poll prospect of Mulayam Singh Yadav's son Akhilesh Yadav and in turn hope to boost its own prospects, whatever numbers it could add to its otherwise doomed poll prospect by riding pillion to Samajwadi cycle. The only difference between 27 years ago and now is that Mulayam was then leader of Janata Dal and now is "mentor" of Samajwadi Party. The alliance between Akhilesh's Samajwadi Party and Congress have gone through rounds of discreet meetings between Samajwadi and Congress party leaders, with Rahul Gandhi in the loop. Rahul too would be looking forward to this alliance, for it will provide him and his party some saving grace, as also keep Congress relevant in UP politics. But no one would ever know whether he pondered even for minute that he went on a month-long tour of UP, 'Kisan Yatra' with this 27 Saal UP Behal slogan, coined by his the then poll strategist Prashant Kishor who in turn had borrowed it from BJP's 2005 Bihar poll catch phrase "15 saal bura haal" (against Lalu Yadav- Rabri Devi regime). Rahul has now discarded both, Kishor and his slogan. Azad and rest of Congress leadership is confident of the belief that public memory is short and thus people would not ask them uncomfortable questions when they go out for campaigning. One person who seems to be happiest over latest turn of events – Election Commission's verdict giving Akhilesh ownership of Samajwadi Party name and cycle symbol, reported truce call between father Mulayam and son Akhilesh and imminent tie-up between SP and Congress – is Congress's chief ministerial candidate, Sheila Dikshit. She is over enthused over developments and more than eager to do a sacrificial act. Dikshit's happiness seemed genuine. In anticipation of an electoral tie-up between Samajwadi Party, Congress and Rashtriya Lok Dal for Uttar Pradesh assembly elections, she gave a sound bite to a news agency publicly announcing her "graceful withdrawal" of her chief ministerial claim. She looked relieved and much happier than the day Congress party had months ago announced her their chief ministerial candidate in one of the most populous and politically most critical state of India. She had reasons to be happy. Even though she was married to a well known political significant Brahmin family, Uma Shankar Dikshit, and had been an MP from UP, the state remained an unchartered, unknown territory for her. She was suddenly made to be face of the Congress party, was made to bear a responsibility for which she was neither equipped nor inclined. She was to lead Congress to a battle which the party had lost decades ago. Her close supporters knew she was brought out from a peaceful retirement at age of 78 — after having served Delhi chief minister thrice, briefly as Kerala Governor and total decimation of party in Delhi — to ring fence Rahul Gandhi and Sonia Gandhi and be a shield for them when time comes. Her argument is there couldn't be two chief ministerial candidates in an alliance and thus she was being gracious in sacrificing her position of presumptive chief minister from Congress. The tie-up between Congress and Samajwadi Party are being made the in name of much maligned "secular" term. They are joining hands to protect secularist ethos against communalist forces (BJP). The implicit messaging is for the Muslim community that they should stay together to vote for the so called secularist forces SP-Congress-RLD which have combined together to stall onward march of communalist BJP. The BSP too is eyeing at Muslim votes and Mayawati has openly talked about it. Only a day ago, Mulayam Singh Yadav had termed son Akhilesh as anti-Muslim and Rahul saw Congress's hand in Gods of all religions, Shiva, Guru Nanak, Jesus Christ and Hazrat Ali.

UP ELECTION 2017

AKHILESH'S TIE UP WITH CONGRESS is a play to keep THE MUSLIM VOTES intact

Both Rahul Gandhi and Akhilesh Yadav appear to have, at long last, found merit in Elizabeth Foley's well-known maxim: "The most beautiful discovery true friends make is that they can grow separately without growing apart." Indeed, the two young leaders seem to have understood three things rather clearly: First, they can grow separately without getting apart. Second, they need each other to beat the combined might of Narendra Modi-Amit Shah-RSS trio in battleground Uttar Pradesh. And third, it would be much easier for them to rope in more anti-BJP forces for the final showdown against Modi at the national level in 2019, should they win the 2017 convincingly. Now that they have finally decided to fight the ensuing election together as allies, let's try to define this mahagathbandhan: It's an alliance of disparate, if not desperate, forces in which you retain your independent identity even as you fight together for a common cause against a common enemy. And the common enemy happens to be a larger-than-life Modi – and not just the BJP. Who else?

If signals emanating from the 'warrooms' of both the Congress and the Samajwadi Party can be taken as pointers, the UP election is likely to present a colourful spectacle this time with Rahul's sister Priyanka Gandhi and Akhilesh's wife Dimple Yadav doing roadshows all over the state. These ladies apart, other leading campaigners such as Laloo Prasad Yadav, Nitish Kumar, Mamata Banerjee and Sharad Pawar may also address rallies at different places lending support to the mahagathbandhan. No doubt, Akhilesh appears to be 'looking at things rather realistically' even as all his supporters are riding high in the aftermath of the Election Commission's verdict allotting him the 'cycle' symbol. Away from the scenes of jubilation, he thought it fit to visit father Mulayam Singh Yadav. What transpired between them is not known but there were enough indications emanating from within the four walls of the Yadav household that 'the winner' was taking extra-care to look humble and magnanimous in victory. Even supporters of the young victor said that they would fight the election under Mulayam's guidance. They raised slogans in favour of both Akhilesh and Mulayam. But these niceties apart, it's clear that Akhilesh is sprinting ahead with a cool and calculative head. He wanted to stitch the deal with the Congress as fast as possible to ensure that there is no division in the Muslim votebank, particularly in western UP. And, on its part, the Congress wanted to escape from the spectre of ignominy in UP. Now that the deal is done, Rahul would be free to focus his attention on four other states as well – Punjab, Goa, Uttarakhand and Manipur. There is another player who is equally eager to join the alliance bandwagon – Jayant Choudhary of Rashtriya Lok Dal (RLD). Chances are that the RLD would, in all probability, join the mahagathbandhan. Jayant, who happens to be Ajit Singh's son and Choudhary Charan Singh's grandson, has a different vision: He wants to recreate the MAJGAR in the Jat-land once again. During Charan Singh's heydays, MAJGAR stood for socio-political alliance between Ahirs, Jats, Gujjars, Rajputs and Muslims. This alliance had withered away following Charan Singh's death. In later years, Ahirs tilted towards SP while Gujjars went almost whole hog with BSP. And Rajput and Jats were divided in their loyalty between the BJP and RLD. The Muslim votebank too in western UP was divided between three camps – the Congress, the SP and the BSP. The 2014 Lok Sabha elections that catapulted the BJP to power thanks to their performance in this all important state presented a different trend: All the Jats and other majority communities voted for Modi's party in the aftermath of Muzaffarnagar riots. The protagonists of the mahagathbandhan theory seem to be hoping against hope that MAJGAR would reappear on the socio-political landscape once again. It may, or may not happen. But there is no harm in keeping hopes alive.

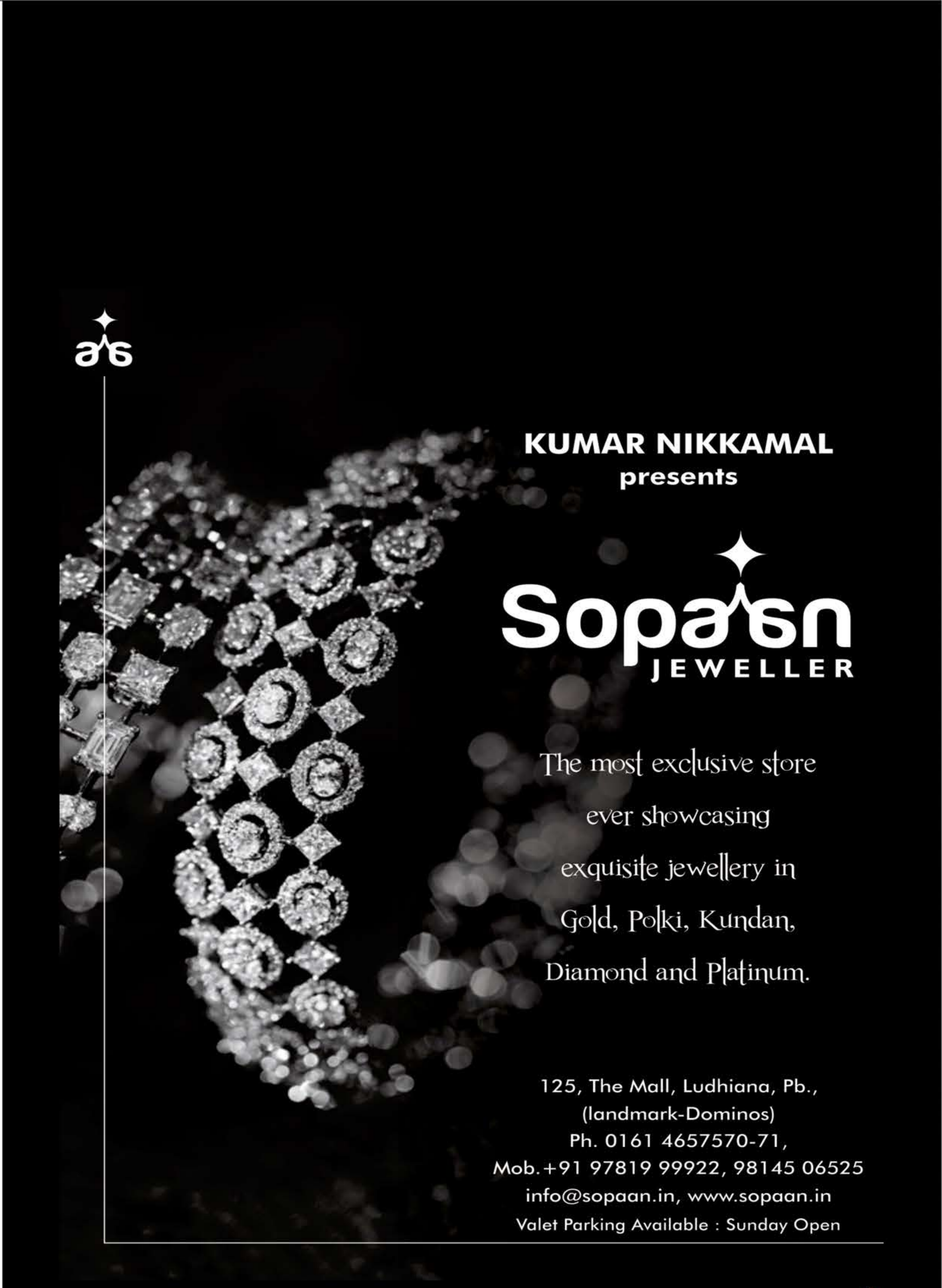

Cinema

is a language. It can explain things to anyone.

Cinema has an incredibly tremendous impact on our minds and as a result contributing to a significant social change. Probably, cinema has the greatest potential to be the most influential mass media source. It has various clear advantages over other media. It combines both audio and video and is thus quite mesmerizing to our senses. It can effortlessly become a wonderful source of mass education, if sensibly used by our new generation.

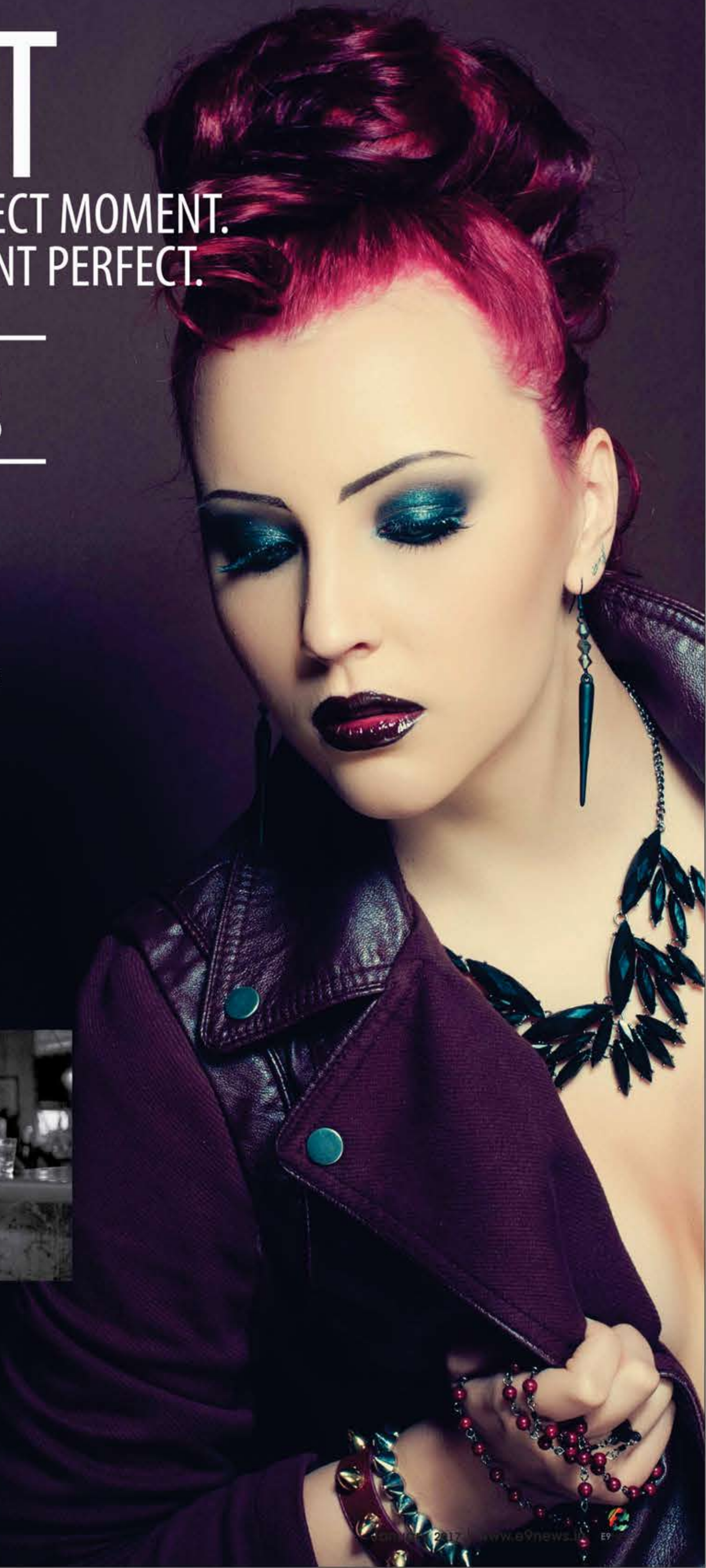

DON'T

WAIT FOR THE PERFECT MOMENT. MAKE THE MOMENT PERFECT.

"The joy of dressing is an art." John Galliano

Fashion is spread in all the walks of our life. Apparels are designed to complement each occasion of life and surpass the aspirations of different generations. More often than not, teenagers try to imitate fashion trends from the entertainment industry. Sometimes, they start cultivating many bad habits i.e. they take to smoking and drinking in the name of fashion while failing to understand that these adversely affect their health. Today, late night parties also have become a part of fashion.

But, the youngsters should focus on the positive facets of fashion as it instills confidence in the minds and adds charm to their personality. Therefore, we should promote fashion as an essential tool to enrich our life, not devalue it

अभिनेता नहीं, रेल ड्राइवर बनना चाहते थे ओम पुरी

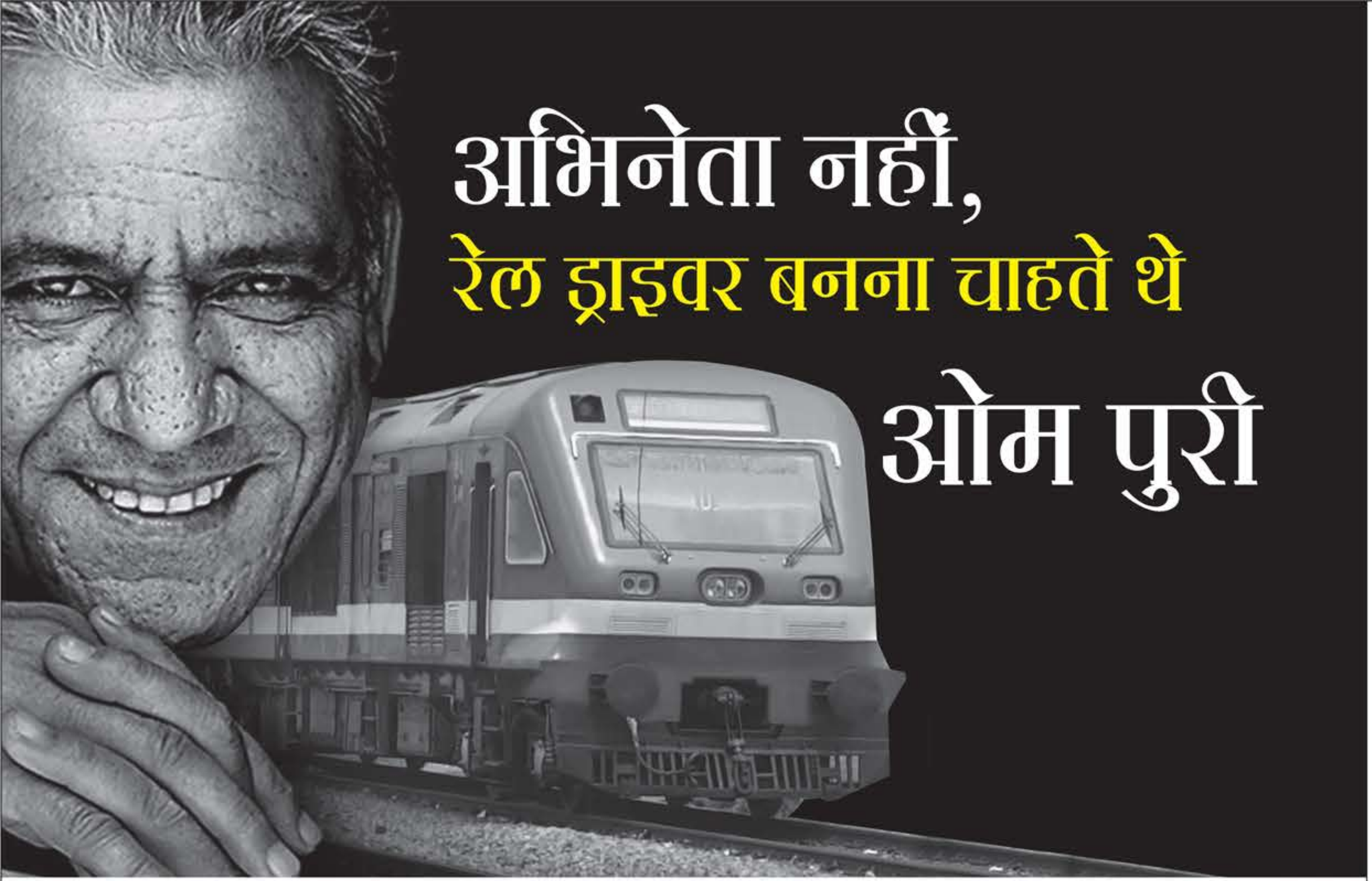

जाने-माने अभिनेता ओम पुरी के निधन की खबर से फिल्म जगत को बड़ा धक्का लगा है। वे फिल्मी दुनिया ही नहीं, उसके अलावा भी सक्रिय रहते थे और यही कारण है कि देश-दुनिया में उनके प्रशंसक फैले हैं। एक नजर ओम पुरी साहब के जीवन से जुड़ी खास बातों पर : बहुत कम लोगों को पता है कि ओम पुरी अभिनेता नही, बल्कि रेलवे ड्राइवर बनना चाहते थे।

दरअसल, ओम पुरी का जन्म हरियाणा के अंबाला के एक गरीब परिवार में हुआ था। आर्थिक जरूरतों की पूर्ति के लिए उन्हें शुरू में ढाबे पर भी काम करना पड़ा। वह नौकरी भी छोड़ना पड़ी, क्योंकि ढाबा मालिक ने चोरी का आरोप लगा दिया था। उन दिन ओम पुरी जहां रहते थे, उसके पीछेही ट्रेन यार्ड था। इसकारण उनका ट्रेनों से बड़ा लगाव था। कई बार वे वही किसी ट्रेन में जाकर सो जाते थे। बरहाल, पढ़ाई के लिए नाना-नानी के पास पटियाला आए तो वहां भी अपना खर्च निकालने के लिए एक वकील के यहां मुंशीगिरी करने लगे। एक बार नाटक करना था तो वकील के यहां नही जा पाए और यह नौकरी भी चली गई। इसके बाद उन्होंने कैमिस्ट्री लैब में सहायक की नौकरी की। दो पत्नियों की खीचतान और बिगड़े बोल से विवादित रहे ओम : हिंदी फिल्म जगत के बेहतरीन अभिनेताओं में शुमार अभिनेता ओम पुरी का शुक्रवार को 66 साल की उम्र में देहांत हो गया। दिल का दौरा पड़ने से हुई पुरी की मौत के बाद बॉलीवुड सदमे में है।

फिल्म मेकर्स से लेकर एक्टर्स तक अचानक हुई इस घटना से स्तब्ध हैं। बीते कुछ सालों से ओम पुरी का निजी जीवन भी विवादों में था। कभी राजनीति तो क भी किसी सामाजिक मुद्दे पर कही गई बात के कारण वो विरोध का सामना कर रहे थे। बात ऐसे ही कुछ वाकयों की। वैसे तो बीते साल बॉलीवुड में कई रिश्ते टूटे। इनमें से एक नाम ओम पुरी और नंदिता का भी था। दोनों ने अपनी 26 साल पुरानी शादी तोड़ ली। दोनों का एक बेटा ईशान भी है। नंदिता पेशे से एक पत्रकार हैं। यह ओम पुरी की दूसरी शादी थी। उनकी पहली पत्नी एक्ट्रेस सीमा कपूर हैं। लंबे समय यह चर्चा रही कि ओम पुरी और नंदिता के बीच सालों से चीजें खराब हो चुकी हैं। नंदिता का आरोप था कि ओम पुरी उनके साथ मारपीट करते थे। उन्हें कोई घर खर्च तक नही देते। नंदिता ने तो यह तक कहा था कि पुरी के अपनी पहली पत्नी सीमा कपूर के साथ शारीरिक संबंध हैं। वो तो उनके साथ ही रहते हैं। हालांकि पुरी ने इन सब बातों को सिरे से खारिज कर दिया था।

इसके पहले ओम पुरी अन्ना आंदोलन में सार्वजनिक मंच पर लोगों से मुखातिब हुए तो यहां भी उनकी जुबान फिसली। नेताओं को लेकर कहे गए अपशब्दों के लिए पुरी को माफी भी मांगना पड़ी थी। बीते दिनों ओम पुरी ने सैनिकों को लेकर भी एक बयान दे दिया था। इसके बाद मामला और भी ज्यादा बिगड़ गया था। आलम यह था कि पुरी के इस बयान से बॉलीवुड सितारों ने ही किनारा करना शुरू कर दिया था। पाकिस्तानी कलाकारों को बॉलीवुड में बैन करने के मामले पर भी ओम पुरी ने अपनी बात बेबाकी से सभी के बीच रखी थी। हालांकि इन पूरे विवादों के दौरान ओम पुरी लगातार फिल्मों में बेहतर काम करते रहे। ईश्वर से उनकी आत्मा को शांति दें। हमारी यही प्रार्थना है।

-मीडिया डेस्क

पांच राज्यों में बज गई चुनावी रणभेरी

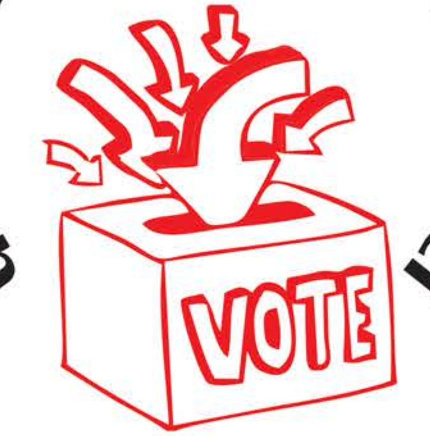

यह धारणा लंबे राजनीतिक अनुभव से बनी है कि दिल्ली की सत्ता का रास्ता लखनऊ से होकर निकलता है। इस सियासी हकीकत के इक्का-दुक्का अपवाद ही होंगे। इसीलिए उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को हमेशा ही उसके बाद होने वाले लोकसभा चुनाव से जोड़कर देखा जाता है। यह इतिहास गवाह है कि जितने भी प्रधानमंत्री जनता द्वारा चुने गए हैं वह अधिकतर यूपी से ही बने हैं लेकिन दलगत राजनीति के चलते देश की बड़ी विधानसभा होने के बावजूद भी देश का प्रधानमंत्री देने में यूपी पिछड़ रहा है। इस बार भी स्थिति उससे अलग नही है। आम समझ है कि इस बार वहां का जो नतीजा आएगा, उसकी 2019 के राष्ट्रीय आम चुनाव के लिए माहौल बनाने में बहुत बड़ी भूमिका होगी। ध्यानार्थ है कि चार अन्य राज्यों के साथ उप्र में होने वाला सात चरणों का मतदान नोटबंदी से बने हालात के साये में होगा। देखने की बात होगी कि मतदाताओं का फैसला नोटबंदी के उद्देश्य से प्रभावित होगा या इसकी वजह से हुई रोजमर्रा की दिक्कतों से? भारतीय जनता पार्टी की तकदीर काफी कुछइसी प्रश्न के उत्तर से तय होगी।

ढाई साल पहले भाजपा ने अपनी सहयोगी पार्टी (अपना दल) के साथ मिलकर उप्र में लगभग 43 फीसदी वोट और 80 में से 73 सीटें जीत ली थीं। स्वाभाविक है कि 11 फरवरी से 8 मार्च तक होने वाले मतदान के परिणाम को उसी सफलता के बरक्स रखकर देखा जाएगा। फिलहाल समाजवादी पार्टी में जारी अंतर्कलह के कारण राज्य में मुख्य मुकाबला भाजपा और बसपा के बीच ही सिमटता दिखता है। जिन पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव के कार्यक्रम का एलान निर्वाचन आयोग ने बुधवार को किया, उनमें उप्र के बाद दूसरा सबसे बड़ा राज्य पंजाब है। यहां कसौटी पर कांग्रेस है। अकाली दल-भाजपा गठजोड़ के लगातार दो कार्यकाल तक राज करने के बाद क्या कांग्रेस अब सत्ता-विरोधी माहौल का लाभ उठाते हुए निर्णायक जीत दर्ज करेगी? अथवा, अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी ('आप) उसके मंसूबों पर पानी फेर देगी? केजरीवाल ऐसा कर पाए, तो बेशक वे अपने इर्द-गिर्द फिर आभामंडल बनाने में कामयाब हो सकते हैं, जैसा 2013 में दिल्ली विधानसभा चुनाव में 'आप को अप्रत्याशित सफलता दिलवाकर उन्होंने कर लिया था।

पंजाब के अलावा गोवा भी ऐसा राज्य है, जहां भाजपा के मुकाबले मुख्य विकल्प के रूप में उभरने की कांग्रेस और 'आप के बीच होड़ होगी। कांग्रेस का बड़ा दांव 70 सीटों वाले उत्तराखंड और 60 सीटों वाले मणिपुर में भी है। वहां अपने किले को वह नही बचा पाई और पंजाब तथा गोवा में मजबूत वापसी करने में विफल रही, तो उसका और उसके नेता राहुल गांधी का राष्ट्रीय भविष्य संदिग्ध हो जाएगा।

उस हाल में भाजपा की 2019 में दिल्ली के तख्त पर वापसी की धारणा खासी मजबूत हो जाएगी। यानी 11 मार्च को आने वाले चुनाव नतीजों का मतलब सिर्फ संबंधित राज्यों तक सीमित नही होगा। बल्कि उससे राष्ट्रीय संदेश ग्रहण किए जाएंगे। इसलिए ये लाजिमी ही है कि अब तमाम पार्टियां अपनी पूरी ताकत इन पांच राज्यों में झोंकेंगी। और देश का ध्यान भी वही सजी बिसात पर लगा होगा।

''पंजाब के अलावा गोवा भी ऐसा राज्य है, जहां भाजपा के मुकाबले मुख्य विकल्प के रूप में उभरने की कांग्रेस और 'आप के बीच होड़ होगी। कांग्रेस का बड़ा दांव 70 सीटों वाले उत्तराखंड और 60 सीटों वाले मणिपुर में भी है। वहां अपने किले को वह नही बचा पाई और पंजाब तथा गोवा में मजबूत वापसी करने में विफल रही, तो उसका और उसके नेता राहुल गांधी का राष्ट्रीय भविष्य संदिग्ध हो जाएगा। उस हाल में भाजपा की 2019 में दिल्ली के तख्त पर वापसी की धारणा खासी मजबूत हो जाएगी। यानी 11 मार्च को आने वाले चुनाव नतीजों का मतलब सिर्फ संबंधित राज्यों तक सीमित नहीं होगा। ''

मनमानी पर लगे अंकुश

समाज के बदलते स्वरूप और बहुत सारे परिवारों की बढ़ती व्यस्तताओं के बीच अब उनके बच्चों के स्कूल जाने की उम्र पांच साल या इससे ऊपर नहीं रही, बल्कि शहरों-महानगरों में यह घट कर महज तीन साल रह गई है। लेकिन इतने छोटे बच्चों की पढ़ाई-लिखाई और देखरेख के लिए कोई पाठ्यक्रम या नियमन तय नही हैं। अलबत्ता लोगों की बदलती और बढ़ती जरूरतों को देखते हुए तीन से छह साल तक के बच्चों के लिए प्ले या प्री स्कूल खुलने शुरू हुए जिन्हें औपचारिक पढ़ाई की शुरुआत के पहले बच्चों को मानसिक रूप से तैयार करने के उद्यम के रूप में पेश किया गया। इसके बढ़ते दायरे का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि पिछले कुछ सालों के भीतर इसने एक बड़े कारोबार का रूप ले लिया है। मगर विडंबना यह है कि इतनी कम उम्र के बच्चों के कोमल मन और जरूरतों के मुताबिक शायद ही ऐसे किसी स्कूल में व्यवस्था की जाती है। जबकि फीस के नाम पर मोटी रकम की वसूली से लेकर बच्चों के साथ बर्ताव तक के मामले में अक्सर कई तरह गड़बड़ियां सामने आती रही हैं। इसके अलावा, कई जगहों पर सिर्फ एक कमरे या किसी बेसमेंट तक में ऐसे स्कूल चलाए जाते हैं। कर्मचारियों को कम पैसे देना एक आम शिकायत है।

चूंकि प्ले स्कूलों पर नियंत्रण या निगरानी के लिए अब तक कोई संस्थागत व्यवस्था नही है, इसलिए इनके संचालकों की मनमानी की शिकायतें लगातार आती रही हैं। इसी के मद्देनजर इन्हें नियमन के दायरे में लाने की जरूरत लंबे समय से महसूस की जा रही थी। अब देर से सही, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने इन स्कूलों की खातिर बाकायदा दिशा-निर्देश जारी किया है।

इसके तहत अब किसी भी प्ले या प्री-स्कूल को चलाने के लिए मान्यता अनिवार्य होगी। इसमें संबंधित प्राधिकार से अनुमति, बीस बच्चों पर एक शिक्षक, देखभाल के लिए सहायक-सहायिका, इमारत में चारदिवारी, रोशनदान, बेहतर बुनियादी सुविधाएं, सुरक्षा-व्यवस्था और सीसीटीवी जैसी शर्तें शामिल हैं। बच्चों को किसी भी तरह का शारीरिक या मानसिक दंड देना अपराध होगा। वहां काम करने वाले सभी कमर्चारियों को न्यूनतम योग्यता और पुलिस जांच की तय प्रक्रिया से गुजरना होगा। ऐसा देखा गया है कि शहरों-महानगरों की तेज जीवनशैली से प्रभावित कई माता-पिता जल्दी से जल्दी पढ़ाई शुरू कराने के चक्कर में दो साल की उम्र में ही अपने बच्चे को प्ले या प्री स्कूल में भेजना शुरू कर देते हैं। जबकि इतनी छोटी उम्र के बच्चों के कोमल मन-मस्तिष्क को भावनात्मक संरक्षण और बाल मनोविज्ञान की समझ रखने वाले प्रशिक्षित कर्मी की जरूरत ज्यादा पड़ती है। इसलिए यह तय किया गया है कि प्ले स्कूल तीन साल से छोटे बच्चे को दाखिला नही दे सकेंगे। एक और अच्छी बात यह है कि इन स्कूलों के लिए मॉड्यूल और पाठ्य-पुस्तकें तैयार की जा रही हैं, ताकि वहां आने वाले बच्चों को नियमित शिक्षा के ढांचे के तहत आगे की दिशा मिल सके। उम्मीद की जानी चाहिए कि आयोग सिफारिशें देकर खामोश नही बैठ जाएगा, बल्कि उन पर अमल का संज्ञान भी लेगा।

यह एक जरूरी फैसला

लोढ़ा समिति का राजनीतिकों की महत्त्वाकांक्षाओं का खेल होने से बचाने के लिहाज से

बीसीसीआई यानी भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड और उसकी गतिविधियों में सुधार के मसले पर नजर रखे हुए सुप्रीम कोर्ट ने एक बार यहां तक कहा था कि आप लोग सुधर जाएं, नहीं तो हम अपने आदेश से इसे सुधार देंगे। लेकिन बोर्ड के अध्यक्ष अनुराग ठाकुर और सचिव अजय शिर्के ने सुप्रीम कोर्ट के आदेशों को मानना जरूरी नहीं समझा और एक तरह से अवमानना करने पर उतारू रहे।

इसलिए सुप्रीम कोर्ट ने बीसीसीआई के इन दोनों उच्चपदस्थ लोगों को उनके पद से बर्खास्त करने का फैसला सुनाया है तो स्वाभाविक है। भारतीय क्रिकेट को राजनीतिकों की महत्त्वाकांक्षाओं का खेल होने से बचाने के लिहाज से भी यह एक जरूरी फैसला है। गौरतलब है कि अदालत ने पिछले साल अठारह जुलाई को दिए अपने फैसले में क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में मंत्रियों, प्रशासनिक अधिकारियों और सत्तर साल से ज्यादा उम्र वाले लोगों के पदाधिकारी बनने पर रोक लगा दी थी। जाने क्यों बीसीसीआई के हटाए गए अध्यक्ष और सचिव यह समझ नही सके कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर अमल करना उनकी जिम्मेदारी और बाध्यता, दोनों हैं।

दोनों ने राज्य क्रिकेट संघों का हवाला देकर सुधारों को लागू न करने का बहाना बनाए रखा। यही नहीं, कुछ समय पहले सुप्रीम कोर्ट ने अनुराग ठाकुर को चेतावनी देते हुए कहा था कि झूठा हलफनामा दायर करने के लिए उन्हें सजा क्यों न दी जाए! इसके अलावा, उन पर सुधार प्रक्रिया को बाधित करने का भी आरोप था। सवाल है कि आखिर अनुराग ठाकुर के अपने पद पर बने रहने की जिद और उसके लिए अदालत तक में झूठ बोलने की क्या वजह हो सकती है! दरअसल, जैसे-जैसे क्रिकेट एक लोकप्रिय खेल से अकूत पैसे के तमाशे में तब्दील होता गया है, इसके संचालन के उच्च पदों पर कब्जा जमाने की होड़ बढ़ती गई है। इसमें सबसे ज्यादा कामयाबी ऊंचे राजनीतिक रसूख वाले लोगों को मिली, जो राज्य खेल संघों से लेकर बीसीसीआई तक के शीर्ष पदों पर कब्जा जमा कर अपने मुताबिक उसे चलाने लगे। इससे सबसे ज्यादा नुकसान क्रिकेट संघों के प्रशासनिक पहलू को हुआ। इनमें वैसे लोगों को जगह नही मिल सकी जो पेशेवर खिलाड़ी रहे हैं और क्रिकेट से जुड़े सारे पहलुओं को समझते हैं। इसका स्वाभाविक असर खिलाड़ियों के चयन, उनके प्रशिक्षण, खेलों के आयोजन और उनके प्रसारण के अधिकार आदि देने की स्थितियों पर पड़ा। यह कोई छिपी बात नही है कि जब से क्रिकेट में आइपीएल प्रतियोगिताओं की शुरुआत हुई है, उसमें खिलाड़ियों की खुली नीलामी से आगे बढ़ते हुए स्पॉट मैच फिक्सिंग तक के मामले सामने आने लगे। इन सब पर लगाम लगाने के बजाय बीसीसीआई सहित तमाम खेल संघों के पदाधिकारियों की रुचि पद पर कब्जा बनाए रखने में रही। सवाल है कि क्या क्रिकेट में हो रहे पैसे के खेल में परदे के पीछे कुछ और लोगों का हिस्सा भी बन रहा था? अगर नही तो आखिर किन वजहों से एक लोकप्रिय खेल को पैसे बनाने के खेल में तब्दील किया जाता रहा? सुप्रीम कोर्ट के ताजा फैसले का संदेश साफ है कि खेल संगठनों के समूचे ढांचे में वैसे ही लोग मौजूद हों जो इसे खेल बनाए रखने के प्रति अपनी जिम्मेदारी निबाहें।

"कुछ समय पहले सुप्रीम कोर्ट ने अनुराग ठाकुर को चेतावनी देते हुए कहा था कि झूठा हलफनामा दायर करने के लिए उन्हें सजा क्यों न दी जाए! इसके अलावा, उन पर सुधार प्रक्रिया को बाधित करने का भी आरोप था। सवाल है कि आखिर अनुराग ठाकुर के अपने पद पर बने रहने की जिद और उसके लिए अदालत तक में झूठ बोलने` की क्या वजह हो सकती है! दरअसल, जैसे-जैसे क्रिकेट एक लोकप्रिय खेल से अकूत पैसे के तमाशे में तब्दील होता गया है, इसके संचालन के उच्च पदों पर कब्जा जमाने की होड़ बढ़ती गई है। इसमें सबसे ज्यादा कामयाबी ऊंचे राजनीतिक रसूख वाले लोगों को मिली, जो राज्य खेल संघों से लेकर बीसीसीआई तक के शीर्ष पदों पर कब्जा जमा कर अपने मुताबिक उसे चलाने लगे।"

अवैध पार्किंग विकराल समस्या

केंद्र सरकार ने महानगरों में निजी वाहनों के पंजीकरण के लिए पार्किंग की उपलब्धता को अनिवार्य करने का इरादा जताया है। देखा जा रहा है कि न केवल महानगरों, बल्कि अन्य शहरों और बस्तियों में भी अवैध पार्किंग विकराल समस्या की शक्ल अख्तियार करती जा रही है। बस्तियों, बाजारों और दफ्तरों के आसपास लोगबाग कहीं भी बेतरतीब ढंग से अपनी गाड़ियां खड़ी कर देते हैं, सड़कें घिरती हैं और तमाम जगहों पर तो लगातार जाम की स्थिति बनी रहती है। दुर्घटनाएं भी होती हैं। मुहल्लों-कॉलोनियों में तो हालत यह हो गई है कि सड़कों के दोनों तरफ कारों की टेढ़ी-मेढ़ी कतारें लगी रहती हैं, जो कई बार कहासुनी और मारपीट का सबब बन जाती है। अभी पिछले महीने की ही बात है, दिल्ली के विष्णु गार्डन में कार पार्किंग विवाद में एक व्यक्ति ने अपने पड़ोसी की गोली मारकर हत्या कर दी। फरवरी 2015 में हरिनगर आश्रम क्षेत्र में एक वरिष्ठ नागरिक को कुछ लोगों ने इसी तरह के विवाद में पीट- पीट कर घायल कर दिया था।

सिर्फ दिल्ली में करीब 91 लाख वाहन पंजीकृत हैं, जिनमें करीब तीस प्रतिशत कारें, साठ प्रतिशत मोटर साइकिलें और दो प्रतिशट ऑटो रिक्शा और टैक्सियां हैं। इसके अलावा हर साल करीब चार-पांच लाख वाहन दिल्ली की सड़कों पर और उतर जाते हैं।

अन्य महानगरों और शहरों में वाहनों की तादाद तेजी से बढ़ रही है। पार्किंग को लेकर झगड़े और रोडरेज की घटनाएं भी लगातार बढ़ रही हैं। हमारी गाड़ी, तुम्हारी गाड़ी से महंगी वाला भाव भी समाज में तेजी से बढ़ रहा है। अक्टूबर में बिहार की राजद विधायक के बेटे ने एक छात्र की सरेआम रोडरेज में गोली मारकर हत्या कर दी थी। दिल्ली में अभी पिछले पखवाड़े न्यू अशोक नगर इलाके में एक प्रापर्टी डीलर ने एक व्यापारी की सिर्फ इसलिए गोली मार कर हत्या कर दी, क्योंकि उनकी कारें आपस में कहीं छू गई थीं। इन स्थितियों को देखते हुए अगर केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय ने पार्किंग की उपलब्धता होने पर ही वाहनों के पंजीकरण का प्रस्ताव किया है, तो यह स्वागत-योग्य है। कई देशों में ऐसा नियम लागू है। केंद्रीय शहरी विकास मंत्री वेंकैया नायडू ने दो दिन पहले कहा कि उनका मंत्रालय, भूतल परिवहन मंत्रालय से विचार विमर्श कर चुका है और जल्द ही इस दिशा में कोई नियमावली तैयार की जाएगी। अगर सरकार अपने इरादे को अमल में लाती है तो गाड़ियों की अनाप-शनाप खरीद फरोख्त पर भी रोक लगेगी।

गाड़ियों का बढ़ता काफिला पर्यावरण के लिहाज से भी खतरनाक है। पर्यावरणविद तो बहुत पहले से और अब तो न्यायालय वाहनों को सीमित करने में ही भलाई देख रहे हैं। दिल्ली सरकार ने कुछ महीने सम-विषम का फार्मूला लागू किया था, पर वह फौरी प्रयोग भर था। अभी तक हिमाचल ही ऐसा राज्य है, जहां वाहनों की खरीद के लिए पार्किंग की जगह होना अनिवार्य बनाया गया है। हालांकि यह राज्य सरकार के निर्णय के बजाय उच्च न्यायालय के दखल से हुआ। उच्च न्यायालय ने 2015 में अवैध पार्किंग की बढ़ती प्रवृत्ति को देखते हुए यह आदेश दिया था। इसके बाद राज्य सरकार को इस दिशा में नियमावली तैयार करनी पड़ी। आदेश के मुताबिक वाहन का पंजीकरण करने से पहले संबंधित थाने से पार्किंग उपलब्धता का प्रमाणपत्र लेना पड़ता है, इसके बाद ही वाहन का पंजीकरण होता है। लेकिन पूरे देश के पैमाने पर इसे लागू करना आसान नहीं होगा।

DIGITAL REVOLUTION IN REAL ESTATE

We offer products that not just optimize profitability but also leverage business process. It's no coincidence that the products we have built are poised to boost real estate sales by more than 30% and decrease sales expenses by not less than 50%.
Our products are exclusively developed to cater to the various operations in real estate, and henceforth creating a promising marketplace for builders and buyers. So, can you afford to wait on the next real estate boom?

the real company
Transforming Real Estate

SCHEDULE A FREE DEMO

For enquiry, call: +91- 9871777335, 8010470077, 9999168971 Write to us at: info@therealcompany.in www.realcompany.in

सोशल मीडिया में लाइक्स

के चक्कर में आत्मघाती करतब

दिल्ली में अपनी स्टंटबाजी का वीडियो बनाते वक्त दो किशोर छात्रों की ट्रेन से कट कर मौत हो गई। यह स्टंट वे अपनी वीडियो क्लिपिंग फेसबुक पर डालने के मकसद से कर रहे थे। इसे सामान्य दुर्घटना इसलिए नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसमें दोनों छात्र जानते-बूझते एक जोखिम-भरे करतब में खुद शामिल थे। यह असल में एक ऐसा हादसा है जो समाज में पसर रही एक ऐसी आदत या मनोवृत्ति की देन है जो यों तो खेल-खिलवाड़ की तरह दिखती है, पर कई बार खतरनाक शक्ल अख्तियार कर लेती है। गौरतलब है कि दुनिया में सेल्फी और स्टंटबाजी के चक्कर में मरने वालों की संख्या भारत में सबसे ज्यादा है। एक अध्ययन में यह पाया गया है कि सोशल मीडिया पर 'लाइक्स' और 'कमेंट्स' की भूख ऐसे कारनामों की पृष्ठभूमि में होती है।

हाल के दिनों में सेल्फी लेते हुए या स्टंटबाजी करते हुए मौत की घटनाओं में इजाफा हुआ है। जनवरी 2015 में मथुरा में तीन छात्रों की चलती ट्रेन के सामने बाइक पर सवार होकर सेल्फी लेने के चक्कर में मौत हो गई थी। कानूनी तौर पर इस तरह के करतब करने या उसकी शूटिंग करने आदि की मनाही है। लेकिन जब कोई व्यक्ति खुद ऐसी हरकतें करने पर आमादा हो तो भले उसे कौन रोक सकता है। यह एक तरह की आत्मघाती प्रवृत्ति ही कही जाएगी। ताजा घटना के बारे में खबर है कि अक्षरधाम मेट्रो स्टेशन के बगल से गुजरने वाली रेलवे लाइन पर पड़ोस में रहने वाले क्रमशः चौदह और पंद्रह साल के दो छात्र ट्रेन के सामने पटरियों पर खड़े होकर एक-दूसरे का वीडियो बना रहे थे। उनके साथ चार- पांच बच्चे दर्शक की भूमिका में थे। दोनों की योजना थी कि स्टंट शूट करने के बाद वे इसे फेसबुक पर डालेंगे। लेकिन वीडियो बनाते वक्त सामने से आ रही ट्रेन से बचने के लिए दोनों बगल में दूसरे रेलवे ट्रैक पर कूदे। उन्हें यह ध्यान नहीं रहा कि दूसरे ट्रैक पर भी ईएमयू ट्रेन आ रही थी। यही लापरवाही उन दोनों की मौत की वजह बनी।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि दोनों में से एक बच्चा अपने घर से ट्यूशन पढ़ने का बहाना बना कर निकला था और उसने कहीं किराए पर कैमरे का भी जुगाड़ किया था। यह घर-परिवार में बढ़ती झूठ की संस्कृति की तरफ भी इशारा करता है। चाहे फिल्में हों या टीवी धारावाहिक, या माता-पिता और अन्य बड़ों का व्यवहार, बच्चों के लिए ईमानदारी और सच्चाई का पाठ पढ़ने के मौके लगातार कम होते जा रहे हैं। जहां तक स्टंटबाजी या सेल्फी के सम्मोहन का सवाल है तो इसे सोशल मीडिया पर मिलने वाली वाहवाही ने बढ़ावा दिया है।

फिल्मों, सर्कसों या धारावाहिकों में स्टंटबाजी देख कर किशोरों और बच्चों में उत्सुकता और जिज्ञासा भाव प्रबल हो उठता है। वे इसकी नकल करने की कोशिश करते हैं। लेकिन घरों के बड़े- बूढ़ों की तरफ से अक्सर उन्हें खबरदार भी किया जाता है। इस घटना का कोई सबक हो सकता है तो यही कि इसे कानून-व्यवस्था के मसले में न उलझा कर अपने घरेलू वातावरण को दुरुस्त करने, बच्चों की हरकतों पर नजर रखने और मां-बाप को अपना आचरण बेहतर करने की जरूरत है।

"Enthusiasm moves the world."

Arthur Balfour

Making excuses burns zero calories per hour.

"Healthy Living" is a fine balance of both physical and mental health. So a change in one directly / indirectly affects the other. Imbalance in any of the two may lead to serious health concerns. Cultivating healthy habits is the key to attain this balance.

Most of the methods to improve your health are pretty simple: sleep more to boost energy, eat less and exercise more for losing weight, drink more water to prevent dehydration etc. Here is a list of habits that will lead to a Healthy Living.

- Exercise
- Quit smoking! ASAP
- Drink water but only in moderation
- Cut out red & processed meats
- Have a go-getter attitude for reducing stress
- Include fruits & veggies in your everyday diet
- Reduce salt, and saturated/trans fats

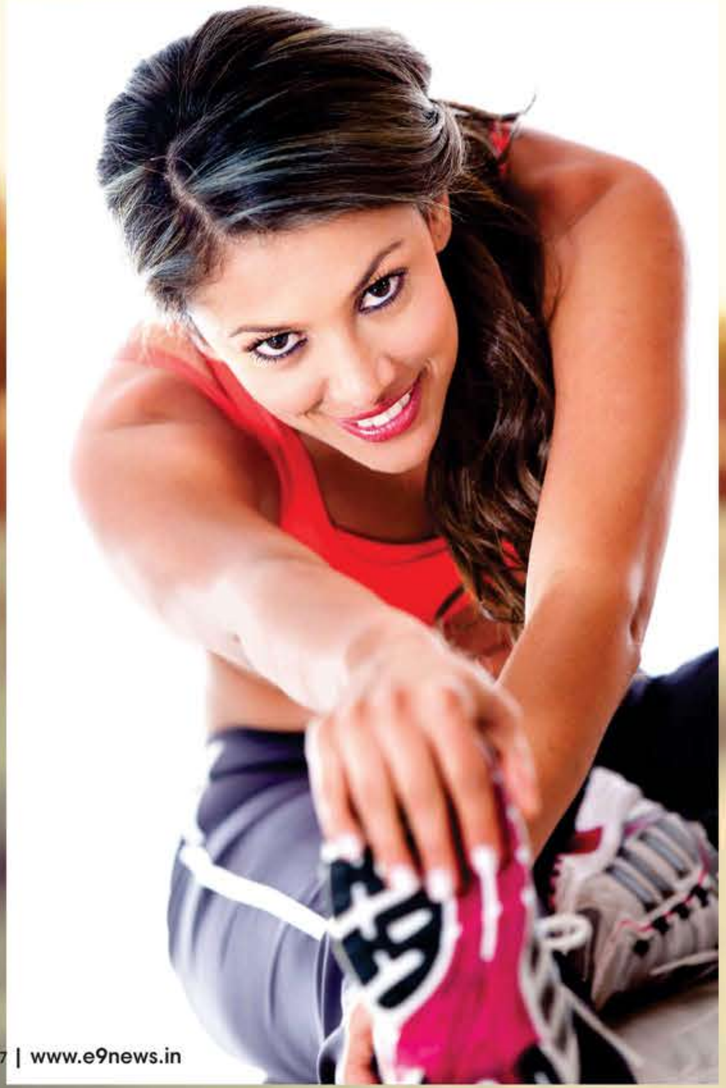

घपले की उड़ान

कुछ सालों से जो घोटाले या संदिग्ध सौदे चर्चा में रहे हैं उनमें अगस्ता-वेस्टलैंड हेलिकॉप्टर की खरीद का मामला भी शामिल है। एक बार फिर यह मामला सुर्खियों का विषय बना, जब सीबीआइ ने पूर्व वायुसेना प्रमुख एसपी त्यागी, उनके चचेरे भाई संजीव उर्फ जूली त्यागी और उनके सहयोगी रहे गौतम खेतान को शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया। यह पहला मौका है

जब सेना के किसी अंग के पूर्व प्रमुख की गिरफ्तारी हुई है। लिहाजा, यह गिरफ्तारी बताती है कि रिश्वतखोरी और कमीशनखोरी से हमारे राज्यतंत्र का कोई भी हिस्सा अछूता नही रह पाया है। अगस्ता-वेस्टलैंड घोटाला बारह वीवीआइपी हेलिकॉप्टरों की खरीद से जुड़ा है। इसमें रिश्वत लिये जाने की बात उजागर होने पर यूपीए सरकार ने 2013 में इस सौदे को रद्द कर दिया था। पर सौदे को लेकर उठा विवाद कांग्रेस का पीछा अब भी नही छोड़ रहा है। यों सौदे की बातचीत 2003 में यानी वाजपेयी सरकार के दौरान ही शुरू हो गई थी, पर इसकी अधिकांश प्रक्रिया चली और पूरी हुई यूपीए सरकार के समय।

एसपी त्यागी 2004 से 2007 तक वायुसेना के प्रमुख रहे। आरोप है कि उन्होंने वीवीआइपी हेलिकॉप्टरों की खरीद की खातिर ऊंचाई की सीमा घटा दी थी, ऐसा इसलिए कि अगस्ता-वेस्टलैंड निविदा-प्रक्रिया में शामिल हो सके। कसौटी हल्की करने का फैसला उन्होंने क्यों किया, इसका कोई संतोषजनक जवाब त्यागी के पास शायद अब भी नही है, पर उन्होंने कहा है कि यह फैसला उनका अकेले का नही बल्कि सामूहिक था। सीबीआइ के मुताबिक अगस्ता-वेस्टलैंड सौदे में कुल भुगतान 3767 करोड़ रुपए का रहा और इसके लिए बारह फीसद रकम बतौर रिश्वत चुकाई गई। ऊंचाई की सीमा घटाने के अलावा कई और बातों ने भी एसपी त्यागी को संदेह के घेरे में ला दिया था। मसलन, वे अगस्ता-वेस्टलैंड की मूल कंपनी फिनमेकेनिका के अधिकारियों से मिले थे।

उनके चचेरे भाई संजीव त्यागी ने बिचौलियों को साधा और रिश्वतखोरी को अंजाम तक पहुंचाने में गौतम खेतान की अहम भूमिका रही। सीबीआइ के मुताबिक खेतान ने कुछ महीने पहले पूछताछ में माना था कि उन्होंने अपनी कंपनी आइडीएस इंफोटेक की ट्यूनीशिया स्थित सहयोगी कंपनी के जरिए दलाली की रकम ली थी। शुरू में त्यागी इस बात से इनकार करते रहे कि उन्होंने फिनमेकेनिका के अधिकारियों से मुलाकात की थी। पर जब जांच कर रहे सीबीआइ के अधिकारियों ने विजिटर्स डायरी समेत कई और सबूत उनके सामने रखे तो उन्हें मुलाकात का तथ्य कबूल करना पड़ा। मिलान (इटली) की एक अदालत ने भी अपने फैसले में माना था कि सौदे में भ्रष्टाचार हुआ और इसमें त्यागी शामिल थे।

बहरहाल, एसपी त्यागी की गिरफ्तारी के बाद अगस्ता-वेस्टलैंड को लेकर एक बार फिर सियासी तापमान चढ़ सकता है। संसद के पिछले बजट सत्र में इस मामले को लेकर काफी हंगामा हुआ था। तब रक्षामंत्री मनोहर परीकर ने कहा था कि एसपी त्यागी और गौतम खेतान तो छोटे नाम हैं, जिन्होंने भ्रष्टाचार की बहती गंगा में हाथ धोए हैं, सरकार यह पता लगाने की कोशिश करेगी कि यह नदी बह कर कहां जा रही है। भाजपा एक बार फिर कांग्रेस को कठघरे में खड़ा करने की भरपूर कोशिश करेगी।

कांग्रेस अपने बचाव में यह कहती आई है कि रिश्वतखोरी की भनक लगने पर यूपीए सरकार ने ही सौदा रद्द किया था और उसी ने जांच शुरू कराई थी। अगस्ता-वेस्टलैंड मामले को लेकर एक बार फिर वैसी ही रस्साकशी दिख सकती है।

नए साल में पाक की दहशतगर्दी

पठानकोट की तरह एक बार फिर साल की शुरुआत में ही दहशतगर्दी ने दस्तक दी है। खबर है कि सोमवार को तड़के आतंकियों ने जम्मू के अखनूर सेक्टर में जीआरईएफ यानी जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स के शिविर पर पहले हथगोले फेंके, फिर अंधाधुंध गोलियां चलाईं, वहां रखे वाहनों और दफ्तरी दस्तावेजों में आग भी लगाई और अंधेरे तथा कोहरे का फायदा उठा कर भाग गए। उस वक्त शिविर में दस कमर्चारी और दस मजदूर मौजूद थे। आतंकी हमले में तीन मजदूर मारे गए। इससे पहले, आतंकियों ने जम्मू के ही नगरोटा क्षेत्र में सेना के एक शिविर पर हमला बोला था, जिसमें दो अधिकारियों समेत सात जवानों की जान गई थी। उसी दिन सांबा जिले में सीमा सुरक्षा बल के एक शिविर पर भी आतंकी हमला हुआ था। तब सेना ने जल्दी ही इन हमलों का कड़ा जवाब देने का इरादा जताया था। जवाबी कार्रवाई क्या हुई, किसे मालूम! पर दहशतगर्दों ने चालीस दिन बाद फिर हमला बोल कर यह जता दिया कि उनकी सक्रियता न सिर्फ बनी हुई है, बल्कि शायद और बढ़ गई है।

इससे आंतरिक सुरक्षा बंदोबस्त के मुकम्मल होने पर एक बार फिर सवाल उठे हैं। दूसरे, नोटबंदी से आतंकवाद की कमर टूट जाने के सरकार के दावे पर भी सवालिया निशान लगा है। पिछले साल सितंबर में सेना की सर्जिकल स्ट्राइक के बाद खूब बढ़-चढ़ कर ये दावे किए गए थे कि अब घुसपैठ करने और यहां आकर कोई वारदात करने से पहले आतंकी सौ बार सोचेंगे। अड़तीस आतंकियों को ढेर कर देने तथा सीमापार स्थित आतंकी ढांचा नष्ट कर देने के दावे से यह भी लगा था कि अब आतंकियों की ताकत बहुत कम हो गई होगी। लेकिन ये उम्मीदें अब धूमिल जान पड़ने लगी हैं।

आंतरिक सुरक्षा के मामले में जवाबदेही का आलम अब भी बहुत कुछ रस्मी दिखता है। हर ऐसी वारदात के बाद स्कूल, कॉलेज फौरन बंद कर देने तथा आसपास के इलाके की घेराबंदी करने व तलाशी तेज करने की कवायद की जाती है। सरकार ने यह कहने में देर नही लगाई कि हमलावर, अनुमान है कि जो दो या तीन थे, सीमापार से आए थे। इसका अर्थ है कि घुसपैठ का सिलसिला बदस्तूर जारी है। ताजा मामले में इसका कारण मौसम को बताया जा सकता है, लेकिन तब इससे पहले, पिछले कुछ महीनों में हुई घुसपैठ की बाबत क्या सफाई दी जाएगी? यानी, दहशतगदी का स्रोत सीमा पार बता कर और पाकिस्तान को कठघरे में खड़ा कर हर बार सरकार अपनी जिम्मेवारी से पल्ला नही झाड़ सकती। इसलिए उसे सोचना चाहिए कि आंतरिक सुरक्षा प्रबंध और उससे जुड़ी खुफिया एजेंसियों के काम में ढिलाई या चूक कहां है।

पिछले हफ्ते जब पाकिस्तान ने उसकी जेलों में बंद रहे दो सौ भारतीय मछुआरों को रिहा किया, तो ऐसा लगा कि दोनों देशों के बीच तनाव कम करने और बातचीत की पृष्ठभूमि तैयार करने की कोशिश चल रही है। इस धारणा को पहले के ऐसे कुछ और वाकयों से भी बल मिला था। पिछले एक पखवाड़े में चार सौ उनतालीस भारतीय मछुआरे पाकिस्तान की जेलों से रिहाई पा चुके हैं। तो क्या किसी आतंकी गुट ने ताजा हमला सौहार्द की पहल को पलीता लगाने की मंशा से किया है, या पाकिस्तान सरकार अब भी आतंकवाद को लेकर संजीदा नही है?

जो हो, आतंकवाद के मामले में पाकिस्तान को कूटनीतिक रूप से घेरना काफी नही है; आंतरिक सुरक्षा की अपनी खामियों पर भी गौर करना होगा।

करियर को एक नया स्वरूप देता है

पैकेजिंग कोर्स

आज जमाना पैकेजिंग का है, किसी भी उत्पाद की बिक्री काफी हद तक उसकी पैकेजिंग पर निर्भर करती है। पैकेजिंग जितनी आकर्षक होगी, वह ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करेगी। यही कारण है कि कई बार बेहतर उत्पाद भी घटिया पैकेजिंग के कारण बाजार में अपनी पहचान बनाने में असफल हो जाते हैं, वहीं दूसरी ओर कम गुणवत्तायुक्त उत्पाद अपने बेहतरीन डिजाइनिंग एवं पैकेजिंग के कारण बाजार में छा जाते हैं।

पैकेजिंग का महत्व केवल आकर्षण के लिए ही नहीं होता बल्कि उत्पाद की सुरक्षा के लिए भी उतना ही जरूरी है। आज जमाना फास्टफूड एवं फटाफट खाने का है और बाजार में तैयार खाने जैसे प्रोसेस्ड फूड आदि बेहतर पैकेजिंग के कारण ही महीनों तक खराब नहीं होते और खाने से पूर्व गर्म करने से ही आप महीनों पूर्व तैयार खाने के स्वाद का मजा ले सकते हैं।

विगत कुछ वर्षों से पैकेजिंग उद्योग में क्रांतिकारी बदलाव आया है और अब परम्परागत पैकेजिंग के स्थान पर अत्याधुनिक पैकेजिंग सामग्रियों का प्रयोग होने लगा है। चिकनाई रोधक कागज, पॉलीथीन चढ़ा कागज, एवं बहुभित्ति कागज से बने डब्बे अपनी मजबूती, सुंदरता, चिकनाई व सीलनरोधी गुणों के कारण तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। पैकेजिंग के लिए आजकल प्लास्टिक, ग्लास, मेटल, वूड, टेक्सटाइल्स, पेपर बोर्ड एवं कौरूगेटेड बक्से का प्रयोग किया जाता है परंतु हल्की, मजबूत, सुंदर एवं सस्ती होने के कारण आज भी प्लॉस्टिक तकरीबन 40 प्रतिशत पैकेजिंग सामग्रियों के लिए उपयोग लाया जाता है।

आज पैकेजिंग उद्योग हजारों करोड़ रुपये का है एवं इसमें तेजी से वृद्धि हो रही है। आज देश में हजारों छोटी- बड़ी पैकेजिंग इकाइयां हैं एवं अनुमानत इस उद्योग में प्रतिवर्ष 5 करोड़ टन पैकिंग सामग्रियों का उपयोग किया जाता है।

प्रशिक्षण:- पैकेजिंग व्यवसाय में नित नई तकनीकों का प्रयोग किया जा रहा है ताकि यह न सिर्फ आकर्षक हो बल्कि सुरक्षा की दृष्टि से भी पूर्णतया विश्वसनीय हो, इसलिए पैकेजिंग टेक्नोलॉजी के प्रशिक्षण के अन्तर्गत सामग्रियों, प्रोसेसिंग, डिजाइन क्वालिटी एवं पर्यावरण ट्रेंड की भी पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। इस क्षेत्र में कैरियर बनाने को उत्सुक युवाओं को समस्याओं का सुलझाने की क्षमता होनी चाहिए, साथ ही उनकी रूचि एवं एप्रोच वैज्ञानिक होनी चाहिए। उनमें भी अच्छा ज्ञान होना जरूरी है। चूंकि उन्हें विभिन्न प्रकार की पैकेजिंग सामग्रियों का प्रयोग करना पड़ता है, अतः उन्हें साइंस व इंजीनियरिंग का ज्ञान भी होना चाहिए।

पैकेजिंग के बढ़ते महत्व एवं व्यवसाय को देखते हुए इस क्षेत्र में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने के लिए वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ने मुम्बई में 1996 में इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफपैकेजिंग की स्थापना की। यह संस्थान पैकेजिंग डिजाइन, विकास, क्वालिटी, टेस्टिंग एवं पैकजिंग सामग्रियों की जांच के अलावा इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों का संचालन भी करता है। यह संस्थान पैकेजिंग विषय पर राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन, अवार्ड कॉटेस्ट एवं प्रदर्शनियों का भी आयोजन करता है।

इस संस्थान का मुख्य कार्यालय मुम्बई में है। संस्थान के पास अत्याधुनिक क्वालिटी टेस्टिंग एवं जांच प्रयोगशाला मुम्बई के अलावा चेन्नई, कोलकाता, दिल्ली में हैं तथा हैदराबाद में स्थापित की जा रही है। यह संस्थान एशियन पैकेजिंग फेडेरेशन का संस्थापक सदस्य तथा विश्व पैकेजिंग संगठन का सदस्य है। यह संस्थान विज्ञान एवं तकनीकी में स्नातकों तथा इस क्षेत्र में कार्यरत पेशवरों के लिए विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों का संचालन करता है जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न है।

पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन पैकेजिंग:- दो वर्षीय अवधि का यह पाठ्यक्रम (पूर्णकालिक) साइंस, टेक्नॉलाजी, इंजीनियरिंग तथा एलायड क्षेत्रों में स्नातकों के लिए उपलब्ध है। इसमें नामांकन अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा के आधार पर होता है जिसका आयोजन प्रति वर्ष जून माह में होता है। यह पाठ्यक्रम अगस्त में शुरू होता है। यह पाठ्यक्रम संस्थान के दिल्ली एवं मुम्बई केन्द्र पर उपलब्ध हैं। यह पाठ्यक्रम 4 सेमेस्टर का होता है जिसमें से 3 सेमेस्टर संस्थान कैम्पस में तथा चौथे सेमेस्टर के अन्तर्गत छात्रा संबंधित उद्योग में अपना प्रोजेक्ट करते हैं।

2. सर्टिफिकेट प्रोग्राम इन पैकेजिंग:- तीन माह की अवधि का यह पाठ्यक्रम साइंस/इंजीनियरिंग में स्नातकों के लिए उपयुक्त है जो पैकेजिंग व्यवसाय में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं। यह पाठ्यक्रम मुम्बई, दिल्ली, चेन्नई तथा कोलकाता में प्रतिवर्ष जुलाई-दिसंबर के दौरान संचालित किया जाता है। यह पाठ्यक्रम पैकेजिंग उद्योग में संभावनाओं और क्षमता के बारे में विस्तृत जानकारी अपने संस्थान के फैकल्टी तथा संबंधित उद्योग के विशेषज्ञों के माध्यम से प्रदान करता है।

3. एक्जीक्यूटिव डेवलमेंट प्रोग्राम: संस्थान इस क्षेत्र में कार्यरत पेशेवरों को उनकी सूचना के विस्तार एवं पैकेजिंग संबंधित अत्याधुनिक तकनीकों की जानकारी देने के लिए 1-7 दिवसीय लघुस्तरीय पाठ्यक्रम संचालित करता है।

4. पत्राचार पाठ्यक्रम: यह संस्थान पैकेजिंग उद्योग में कार्यरत पेशेवर जिन्होंने विभिन्न संकायों में स्नातक डिप्लोमा किया है, उनके लिए एक 18 माह की अवधि का पत्राचार पाठ्यक्रम संचालित करता है। इस पाठ्यक्रम में सफ ल अभ्यर्थियों को ग्रेजुएट डिप्लोमा इन पैकेजिंग टेक्नोलॉजी प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। यह पाठ्यक्रम एशियन पैकेजिंग फेडेरशन द्वारा मान्य है।

कैरियर के अवसर:- आज फूड एवं ड्रिंक्स, फार्मा उत्पाद, साबुन सर्फ व अन्य उपभोक्ता उत्पादों कपड़ों, कॉस्मेटिक व अन्य उत्पादों की पैकेजिंग के लिए पैकेजिंग टेक्नोलॉजिस्ट एवं डिजाइनरों की बड़ी संख्या में मांग है। भारत में लेमिनेट्स तथा फ्लेक्सिबल पैकेजिंग विशेष कर पेट तथा प्लास्टिक पैकेजिंग उद्योग तेजी से उभर रहा है। इसलिए इस क्षेत्र के पेशेवरों के लिए रोजगार की कोई कमी नहीं। इस क्षेत्र में प्रशिक्षित पेशेवरों को 15-20 हजार रुपये का वेतन आसानी से मिल जाता है जो समय और विशेषज्ञता बढ़ने के साथ साथ उसी अनुपात में बढ़ता जाता है।

संस्थान का पता:- 1. इंडियन् इंस्टीच्यूट ऑफपैकेजिंग, ई-2, एम आई डी सी एरिया, चकाला, अंधेरी (पूर्व) मुम्बई-400093

2. इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ पैकेजिंग, फर्स्टमेन रोड, गांधी नगर, अडयार, चेन्नई।

3. इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ पैकेजिंग, बी-29, फ्लैटेड फैक्ट्रीज, कॉम्पलैक्स, झंडेवा लान नई दिल्ली-110055

4. इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफपैकेजिंग, ब्लॉक सीपी सेक्टर-5ए साल्ट लेक सिटी, विधाननगर-कोलकाता।

5. एस आई इ एस स्कूल ऑफपैकेजिंग, श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विद्या पुरम, नेरूल, नवी मुम्बई।

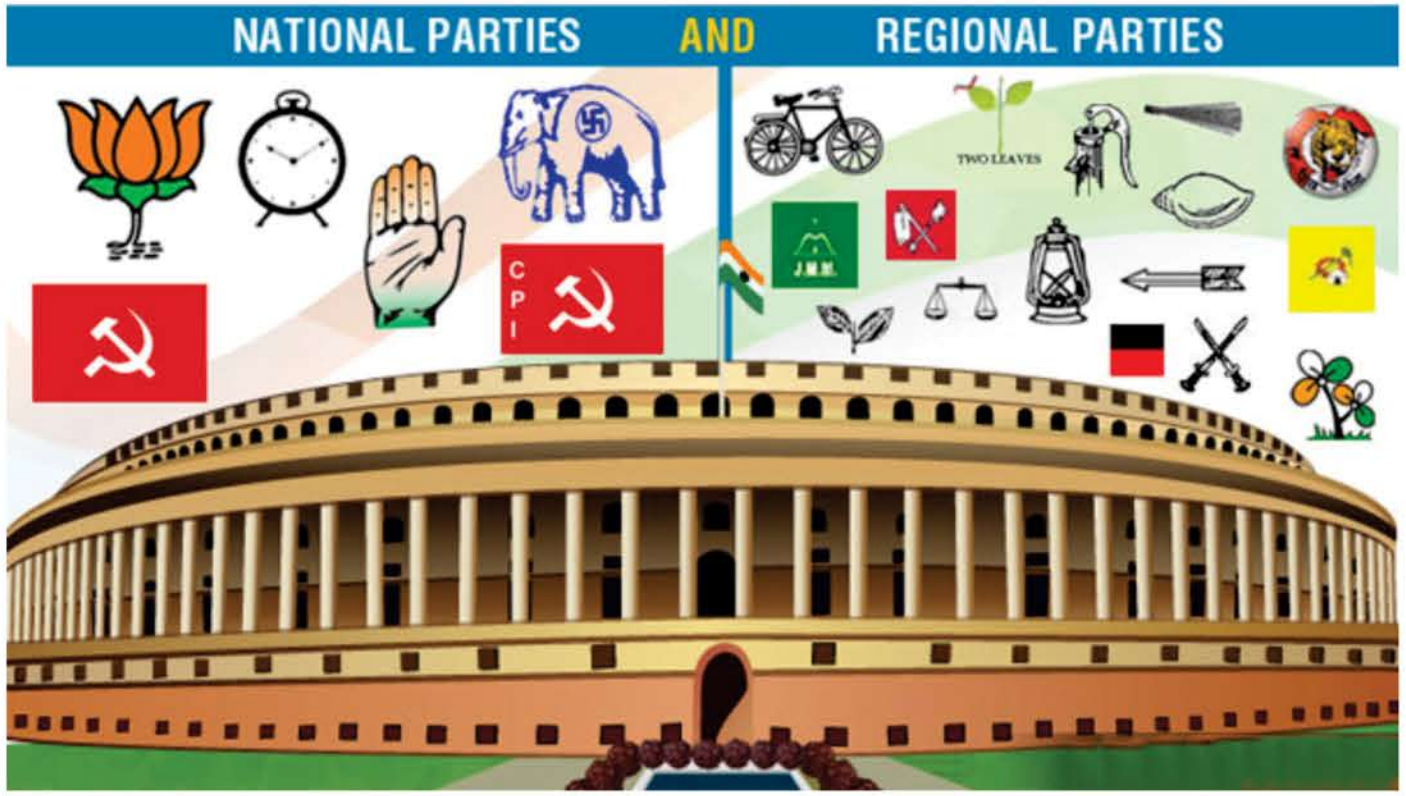

चुनाव की बिसात

आखिरकार पांच राज्यों के लिए विधानसभा चुनावों की घोषणा हो गई। ये चुनाव चार फरवरी से शुरू होकर आठ मार्च तक चलेंगे। नतीजा ग्यारह मार्च को आएगा, होली से एक दिन पहले। गोवा और पंजाब में चार फरवरी को और उत्तराखंड में पंद्रह फरवरी को मतदान होगा। मणिपुर में चार और आठ मार्च को। विधायिका के लिहाज से देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में सात चरणों में मतदान होगा और महीने भर तक चलेगा, यानी हर चौथे दिन राज्य के किसी न किसी हिस्से में मतदान। इन विधानसभा चुनावों की अहमियत जाहिर है। इन पांच राज्यों में सोलह करोड़ मतदाता हैं, यानी कुल मतदाताओं के उन्नीस फीसद। पांच सौ पैंतालीस लोकसभा सीटों में से एक सौ दो इन पांच राज्यों में आती हैं। पर यह आंकड़ा उत्तर प्रदेश की वजह से है, वरना उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर की गिनती छोटे राज्यों में होती है और वे राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने की क्षमता नहीं रखते। पंजाब को छोटा नहीं, तो मझोला राज्य कह सकते हैं। उत्तर प्रदेश में लोकसभा की सीटें भी सबसे ज्यादा (अस्सी) हैं, और यहां की विधानसभा भी सबसे बड़ी है, सवा चार सौ सीटों की। इसलिए स्वाभाविक ही देश भर की नजरें सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश पर लगी होंगी।

ये चुनाव ऐसे समय होने जा रहे हैं जब केंद्र सरकार अपना आधा कार्यकाल पूरा कर चुकी है। अगर इन चुनावों में बाजी भाजपा के हाथ लगेगी, तो बाकी कार्यकाल में मोदी की राह आसान हो जाएगी। फिर, ये नतीजे अगले लोकसभा चुनाव के लिए भी भाजपा की हौसला आफजाई करेंगे। अगर नतीजे भाजपा के प्रतिकूल आए, तो एकमात्र मोदी पर दांव लगाने की पार्टी की रणनीति पर सवाल उठेंगे। इन चुनावों से पहले नोटबंदी को लेकर सियासी तापमान चढ़ा रहा। इसलिए इन चुनावों को मोदी सरकार के कामकाज और नोटबंदी से जोड़ कर भी देखा जा रहा है। पर कहना मुश्किल है कि इनका किस हद तक इन चुनावों पर असर पड़ेगा। अब तक के अनुभव बताते हैं कि विधानसभा चुनाव अमूमन प्रादेशिक पृष्ठभूमि से तय होते हैं। वर्ष 2007 और 2012 के उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों में न तो केंद्र सरकार का कामकाज मुद्दा बना था न राष्ट्रीय पार्टियाँ हावी रही थीं।

2007 में बसपा को और 2012 में सपा को जनादेश मिला था। इस बार भाजपा भी प्रबल दावेदार है तो इसलिए कि पिछले लोकसभा चुनावों में उसने उत्तर प्रदेश की अस्सी में से इकहत्तर सीटें हासिल की थीं; इसके अलावा दो सीटें अपना दल को मिली थीं जो भाजपा का हाथ थाम कर मैदान में उतरी थी। लेकिन उत्तर प्रदेश की कमान चाहे जिसके हाथ में पाए, 2014 के प्रदर्शन को दोहरा पाने की उम्मीद भाजपा नहीं कर सकती। नोटबंदी की वजह से काला धन पिछले दिनों चर्चा का विषय रहा है, और शायद पार्टियों व उम्मीदवारों के खर्च पर भी इस बार लोगों की निगाह रहेगी। एक और कोण से भी इन चुनावों को देखा जाएगा, वह है सर्वोच्च न्यायालय का पिछले दिनों आया फैसला, जिसमें उसने कहा है कि धर्म और जाति के आधार पर वोट मांगना गैर-कानूनी है। यों यह प्रावधान जनप्रतिनिधित्व कानून में हमेशा रहा है, पर पांच राज्यों में होने जा रहे चुनाव इस कसौटी पर भी कसे जाएंगे। दूसरी तरफ इन चुनावों के मद्देनजर अदालत के फैसले के क्रियान्वयन को भी आंका जाएगा। केंद्र सरकार ने एक फरवरी को आम बजट पेश करने की घोषणा की है। चुनावों से ऐन पहले बजट पेश किए जाने पर विपक्षी दलों ने कड़ा एतराज जताया है और बजट की तारीख आगे खिसकाने की मांग की है। इस पर निर्णय निर्वाचन आयोग को लेना है, पर कई लोकलुभावन घोषणाएं मोदी पहले ही कर चुके हैं।

अर्थव्यवस्था की सूरत

चालू वित्तवर्ष में अर्थव्यवस्था की तस्वीर कैसी रहने वाली है, इसका एक अनुमान खुद सरकारी आंकड़ों ने पेश कर दिया है। सीएसओ यानी केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने अपने अग्रिम आकलन में बताया है कि मौजूदा वित्तवर्ष में जीडीपी की वृद्धि दर 7.1 फीसद रहेगी। यह पिछले वित्तीय साल में 7.6 फीसद थी। वर्ष 2015-16 के मुकाबले आधा फीसद की कमी कुछ खास नहीं मानी जा सकती, और असल में 7.1 फीसद भी उम्मीद-भरा आकंड़ा ही कहा जाएगा। लेकिन कई कारणों से यह तसल्ली, खुशफहमी साबित हो सकती है। पहली बात यह है कि 7.1 फीसद का अनुमान है तो पूरे वित्तीय साल के लिए, पर यह केवल सात महीनों, अप्रैल से अक्तूबर तक के आंकड़ों पर आधारित है। जबकि यह आम अनुमान है कि नोटबंदी के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्रों में जो अफरातफरी रही, और जिस पर अब भी पूरी तरह विराम नहीं लग पाया है, उसकी वजह से दूसरी छमाही में जीडीपी का ग्राफ खासा गिर सकता है। फिर, पूरे वित्तवर्ष की वही तस्वीर कैसे होगी, जैसी सीएसओ ने पेश की है? इसलिए पूर्व सीएसओ प्रमुख प्रणब सेन और केंद्र सरकार की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य रह चुके गोविदं राव समेत तमाम अथर्शास्त्रियों का मानना है कि जब नवंबर से मार्च तक के आंकड़े आएंगे, तो वित्तवर्ष 2016-17 में आर्थिक वृद्धि दर सात फीसद से नीचे यहां तक कि साढ़े छह फीसद से भी कम हो सकती है। सीएसओ ने अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के जो आंकड़े हिसाब में लिये हैं, यानी अप्रैल से अक्तूबर तक के, उनके मुताबिक कृषि में उल्लखेनीय वृद्धि दिखती है, 4.1 फीसद। यह लगातार दो साल सूखा रहने के बाद अच्छे मानसून का नतीजा है। लेकिन उद्योग और सेवा जैसे अर्थव्यवस्था के दूसरे बड़े क्षेत्रों को देखें, तो उनमें गिरावट ही दिखती है, उद्योग क्षेत्र में खासकर। नोटबंदी की मार सबसे ज्यादा मैन्युफैक्चरिंग पर पड़ी है, जिसका औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में हिस्सा पचहत्तर फीसद है। ऐसे में अनुमान लगाया जा सकता है कि दूसरी छमाही में आइआइपी कैसा होगा, और फलस्वरूप पूरे वित्तीय साल में उसका ग्राफ कैसा रहेगा। विचित्र है कि सीएसओ ने फिर भी यह उम्मीद जताई है कि दूसरी छमाही में निवेश घटने के रुझान को पलटा जा सकेगा। हालांकि सीएसओ ने माना है कि जीएफसीएफ यानी कुल निश्चित पूंजी निर्माण, जो कि निवेश का सूचक माना जाता है, मौजूदा वित्तवर्ष में 0.16 फीसद सिकुड़ जाएगा। मगर दो खास कारणों से सिकुड़न का यह अनुमान बहुत कम है। एक तो यह कि पिछले वित्तवर्ष की आखिरी तिमाही से लेकर पिछली तीन तिमाहियों में जीएफसीएफ लगातार सिकुड़ा है और सिकुड़न की गति भी बढ़ती गई है। यह नोटबंदी से पहले का हाल था। इसलिए पूरे 2016-17 के लिए जीएफसीएफ का जो अनुमान सीएसओ ने जारी किया है वह अथर्शास्त्रियों के गले नहीं उतरा है। यों वित्तमंत्री अरुण जेटली पिछले दिनों यह दावा कर चुके हैं कि नोटबंदी के चलते राजस्व बढ़ा है, पर मौजूदा वित्तवर्ष में जीडीपी की जो दशा दिख रही है उससे अप्रत्यक्ष कर संग्रह में इजाफे के आसार नहीं दिखते। आंकड़े इस ओर भी इशारा कर रहे हैं कि राजकोषीय घाटे को जीडीपी के साढ़े तीन फीसद तक सीमित रखना बहुत मुश्किल हो जा सकता है। अगर अभी जाहिर किए गए अग्रिम अनुमान और वास्तविक परिणाम में ज्यादा फर्क रहा, तो सीएसओ की साख पर आंच आएगी।

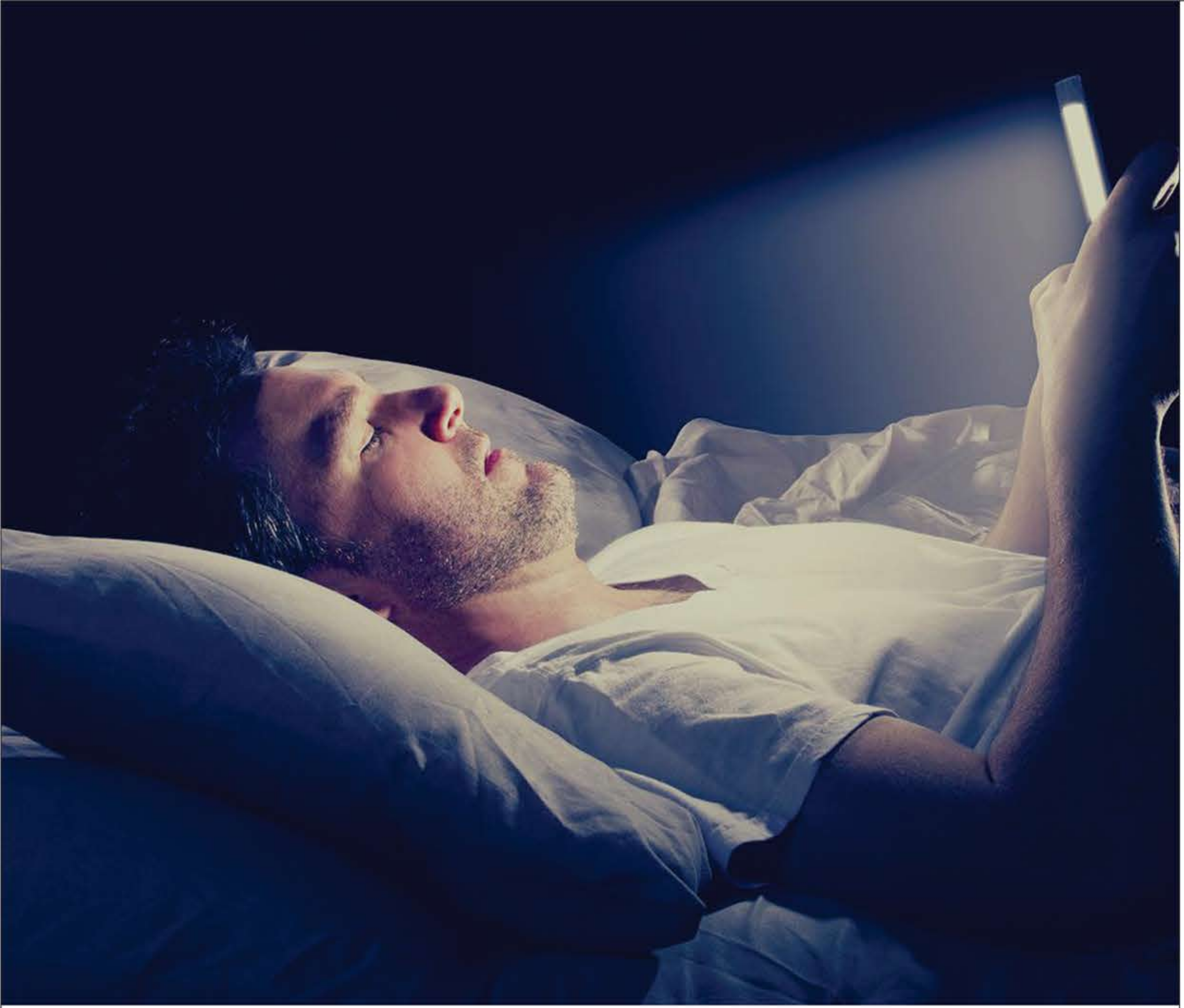

TEENS LOSING SLEEP OVER SOCIAL MEDIA

One in five teens regularly wake up in the night to send or check messages on social media, which makes them three times more likely to feel constantly tired at school than their peers who do not log on at night, a new UK study has warned. Researchers at Wales Institute for Social and Economic Research, Data and Methods (WISERD) in the UK also found that girls are much more likely to access their social media accounts during the night than boys. They warned that this night-time activity could be affecting happiness and wellbeing in the young people. Over 900 pupils, aged between 12-15 years, were recruited and asked to complete a questionnaire about how often they woke up at night to use social media and times of going to bed and waking. They were also asked about how happy they were with various aspects of their life including school life, friendships and appearance. One in five reported 'almost always' waking up to log on, with girls much more likely to access their social media accounts during the night than boys. Those who woke up to use social media nearly every night, or who did not wake up at a regular time in the morning, were around three times as likely to say they were constantly tired at school compared to their peers who never log on at night or wake up at the same time every day. Moreover, pupils who said they were always tired at school were, on average, significantly less happy than other young people. "Our research shows that a small but significant number of children and young people say that they often go to school feeling tired - and these are the same young people who also have the lowest levels of wellbeing," said Sally Power, professor at WISERD. "One in five young people questioned woke up every night and over one third wake-up at least once a week to check for messages. Use of social media appears to be invading the 'sanctuary' of the bedroom," said Power. The study findings support growing concerns about young people's night-time use of social media. However, because of the complex range of possible explanations for tiredness at school, further larger studies will be needed before any firm conclusions can be made about the social causes and consequences of sleep deprivation among today's youth.

GOA
ELECTION 2017

AAP ALLEGES BIAS BY GOVT OFFICIALS; SEEKS EC INTERVENTION

Alleging bias, the AAP approached the Election Commission and sought deterrent action against "hostile" officials of the Goa government, even as it raised the issue of symbols identical to party's "broom" being used by some to "mislead" the people. AAP's Delhi unit convenor Dilip Pandey also accused many officials of working under the "influence" of the ruling BJP. In a compliant, the AAP has listed out seven instances in the last three months when its volunteers were allegedly threatened and assaulted and yet no action was taken against the culprits. "AAP volunteers are being beaten up. Police stations have threatened our advertising agencies to pull down our advertisements even before the Model Code of Conduct came into force. "Our meetings have been stopped by flying squads even after requisite permission was taken," AAP's national secretary Pankaj Gupta said in his complaint to the ECI. Of the seven complaints, four have been made against Panaji police station while the rest are against other police stations and officials in the civic administration. The party said a free and fair election is not possible unless action is taken against these officers. "For the sake of conduct of Goa Assembly Election in an unbiased manner and also for the sake of high ethical standards held by the Election Commission of India, it is imperative that ECI takes some deterrent steps against erring officials to send a signal that any show of bias and favouritism shall not be tolerated by it," Gupta said. The party also raised the issue of symbols identical to its 'broom', like a battery or a torch and claimed that it is being used in the campaign. Pandey said such identical and "misleading" symbols had eaten into party's votes in the Delhi Assembly polls in 2013 and 2015 and could hurt the party's prospects in the state. "The torch and the broom symbol are not a part of the free symbols list of the Election Commission. Despite this, an identical battery or torch is used by some candidates during their campaign. This is being done to mislead the people ahead of the polls," Pandey said.

भारत निर्वाचन आयोग ELECTION COMMISSION OF INDIA

AMARINDER SEEKS CONGRESS PERMISSION TO CONTEST AGAINST PARKASH SINGH BADAL

PUNJAB ELECTION
2017

Giving an interesting turn to Punjab's politics, state Congress president Amarinder Singh has sought the Congress high command's permission to fight next month's Assembly elections against Chief Minister Parkash Singh Badal from the latter's assembly constituency of Lambi. Amarinder, whose name has already been announced by the Congress for his traditional assembly seat of Patiala-urban, told media here that he wanted to contest against Chief Minister Badal from Lambi to defeat the Akali leader whom he blamed for the "ruin of Punjab". "I want to fight the chief minister on his home turf of Lambi as I want to defeat all the top Akali leaders responsible for destroying the state through their drugs, mafia and goonda raj, and are guilty of ruining its trade, industry and agriculture," Singh told media in Amritsar on Saturday. Amarinder said he had requested the Congress high command to allow him to fight the assembly polls from Lambi so that he could "free Punjab from the vicious and destructive rule of the Badals". The Aam Aadmi Party (AAP), which is posing a serious challenge to the Akali Dal-BJP alliance and the Congress for the 4 February Assembly polls on 117 seats, has already announced Delhi lawmaker Jarnail Singh to contest against Badal from Lambi. Singh said he would fight the election both in Lambi and Patiala, if permitted by the Congress high command. "The entire state is in shambles. Badal and his family, and associates have brought Punjab to such a shameful pass," the former chief minister said. "My government would open a probe into all Akali scams and punish every person found guilty of any criminal deed, especially drugs trade," Singh said. The Shiromani Akali Dal-BJP alliance has been in power in Punjab since 2007.

रोज वैली चिटफंड घोटाला
जांच पर सियासत

पश्चिम बंगाल में कथित रोज वैली चिटफंड घोटाले में तृणमूल कांग्रेस के सांसद और लोकसभा में पाटी के नेता सुदीप बंदोपाध्याय की गिरफ्तारी ने सियासी रंग ले लिया है। इस मामले में एक हफ्ते की भीतर यह पार्टी के दूसरे बड़े नेता की गिरफ्तारी है। इससे नाराज पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केंद्र सरकार पर बदले की भावना से काम करने का आरोप लगाया है। इसमें आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भी ममता बनर्जी का साथ दिया है। उधर सुदीप बंदोपाध्याय की गिरफ्तारी के बाद तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने कोलकाता में भारतीय जनता पाटी के कार्यालय पर हमला कर अपनी नाराजगी जाहिर की। सीबीआई का कहना है कि उसके पास तृणमूल कांग्रेस के दोनों नेताओं के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं। फिर तृणमूल कांग्रेस का यह कहना कि जिन नेताओं ने नोटबंदी का विरोध किया, मोदी सरकार उन्हें सबक सिखाने की मंशा से ऐसा कदम उठा रही है, कुछ तर्कसंगत नहीं जान पड़ता।

पश्चिम बंगाल में चिटफंड कंपनियों की धोखाधड़ी पिछले कई दशक से चल रही थी। सारदा घोटाले में भी कई नेताओं पर आरोप लगे थे। उसमें भी तृणमूल के कुछ नेताओं पर अंगुली उठी थी। इन चिटफंड कंपनियों के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में मामला लंबित है। रोज वैली चिटफंड में करीब सत्रह हजार करोड़ रुपए के घोटाले की जांच सीबीआई उसी के तहत कर रही है। यह समझना मुश्किल नही है कि जब चिटफंड कंपनियों के जरिए लघु निवेश पर रोक है, तो ये कंपनियां किसकी शह पर चल रही थी। रोज वैली अकेली ऐसी कंपनी नही है, जिस पर गरीब लोगों के पैसे की धोखाधड़ी का मामला दर्ज है। सहारा समूह के मुखिया को भी ऐसे ही घोटाले के आरोप में जेल की सजा सुनाई गई थी। पश्चिम बंगाल में ही सारदा घोटाले से जुड़े कई लोगों पर कानून का शिकंजा कसा। फिर अगर सीबीआइ ने तृणमूल के कुछ नेताओं को इसमें शामिल पाया है या इन कंपनियों को शह देने में उनका हाथ देखा है, तो इस जांच को राजनीतिक रंग देने के बजाय निष्पक्ष रूप से पूरा हो जाने देने में किसी को क्यों परहेज होना चाहिए! हालांकि केंद्र सरकार पर जिस तरह कुछ मामलों को लेकर सीबीआई के दुरुपयोग के आरोप लगे हैं, उससे सीबीआई की प्रतिष्ठा पर भी आंच आती है। पहले भी अनेक मौकों पर आरोप लगते रहे हैं कि सीबीआई केंद्र सरकार के इशारे पर काम करती है। इसलिए रोज वैली चिटफंड मामले में उससे अपनी प्रतिष्ठा का खयाल रखते हुए जांच को आगे बढ़ाने की उम्मीद की जाती है। चिटफंड कंपनियों ने गरीबों की मेहनत की छोटी-छोटी कमाई से अपनी जेबें भरी हैं।

''रोज वैली अकेली ऐसी कंपनी नहीं है, जिस पर गरीब लोगों के पैसे की धोखाधड़ी का मामला दर्ज है। सहारा समूह के मुखिया को भी ऐसे ही घोटाले के आरोप में जेल की सजा सुनाई गई थी। पश्चिम बंगाल में ही सारदा घोटाले से जुड़े कई लोगों पर कानून का शिकंजा कसा।''

छिपी बात नहीं है कि बगैर राजनीतिक शह के ये कंपनियां अपना धंधा नहीं फैला सकती। ऐसे मामलों में केवल सत्तारूढ़ दल नहीं, दूसरी पार्टियों के लोगों की भी संलिप्तता होती है। इसलिए केवल तृणमूल कांग्रेस के लोगों के खिलाफ कड़े कदम उठाए जाएंगे, तो वहां से स्वाभाविक रूप से अंगुलियां उठेंगी। ऐसे में सीबीआई को लाखों धोखा खाए लोगों के हक में खड़ा दिखना चाहिए। हैरानी की बात है कि अनियमितताएं दूर करने की बात हर राजनीतिक दल करता है, पर जब किसी का कोई नेता ऐसे आरोप में पकड़ा जाता है तो वह जांच एजेंसी के कामकाज पर अंगुली उठाने लगता है। अगर तृणमूल के नेता वाकई निर्दोष हैं, तो उन्हें यह बात अदालत में साबित करने से क्यों परहेज होना चाहिए।

AMAZING FOODS, INCREDIBLE BENEFITS

GRAINS

Ragi

Full of calcium, iron, B0- complex and other vitamins, it is one of the first foods given to a new born. Ragi is now available in a fast food avatar in the market. Since it is high in calcium, ragi is good for bones. It is also rich in B-Complex, which is essential for nerves and brain function.

Quinoa

The fiber-rich super grain is fluffy, nutty-textured and a complete protein (it containing several essential amino acids). Low in carbohydrates and fat, it is also easy to digest.

Organic Pumpernickel Bread

This bread is fiber rich and good for digestion. The bread characteristics dark colour comes from the long and slow baking process. Lower in glycaemic index than whole wheat bread promotes satiety, thereby making it a great option for weight loss. So, it's time to add variety to your whole wheat and oatmeal breads.

SUPERFOODS

Blueberries

Packed with vitamin C, manganese and dietary fiber, they are excellent anti-oxidants. They help boost your heart muscles from damage, reduce colon cancer risk and even keep Alzheimer's at bay. Blueberries also contain tannins, compounds that can prevent urinary tract infections (UTIs).

Edamame

Edamame is a complete source of protein and henceforth an incredible vegetarian option for natural protein supplement. Rich in calcium and foliate, edamame may also offer protection against pancreatic cancer.

Raspberries

They're loaded with an-thocyanins-anti-oxidents that fight inflammatory damage and cancer. A great source of fiber, raspberries aid digestion too. Enjoy it in your fruit smoothie or make your favourite dessert using raspberries. They are available in fruit markets and supermarkets.

SPICES & OILS

Lemon Pepper

It has a tangy taste and is made by mixing lemon zest with pepper. It is rich in Vitamin C and the pepper's anti-inflammatory effects help prevent congestion and make it good for your throat. You can sprinkle this spice on your soups and salads for a delicious flavor.

Organic Asafoetida

Widely used in Indian cooking, it imparts a sharp but delicious flavor to food. Asafetida extracts can relieve abdominal gas and induce bowel movements. It provides relief from colds and flu but chemical-laced asafetida can cause more harm than good to your body.

Gomasio

It is traditional Japanese seasoning blend made from sesame seeds and sea salt. Sesame seeds are good for joints and bones. Gomasio tastes great with bland starchy foods such as rice or potatoes and even in salads and vegetables.

Organic Extra-Virgin Olive Oil

It contains heart healthy fats, helps in lowering cholesterol and is full of anti-oxidants. So, enjoy it for flavor on your salads or add a tiny amount to dips. It is available in your local organic stores / health food shops.

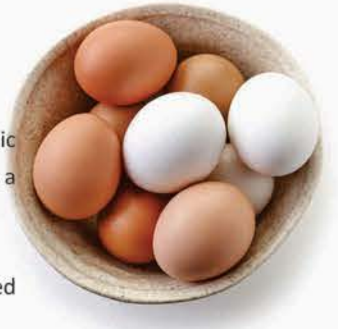

POULTRY & DAIRY

Stress-Free Milk

It comes from cows that are kept in a healthy environment and their diet includes chemical-free, fresh and organic food. Moreover, the cows are not injected with chemical stimulants or hormones and yield milk that does not pose a risk of cancer or other hormonal disorders.

Cage-Free Eggs

These eggs are laid by hens that are housed in open spaces. The hens are also fed higher quality food that is not laced with antibiotics. These eggs are protein-rich and vitamin-loaded and make a great choice for healthy food.

NEW FLAVOURS

Flavoured Prunes

They are loaded with fibre, vitamins and minerals that boost immunity and aid digestion as well. Prunes flavoured with lemon boost the Vitamin C and anti-oxidant content of the snack, thereby making it wonderful for the skin.

Garlic Pistachios

Pistachios have healthy mono-unsaturated fatty acids and protect you against cardiovascular diseases. These are also rich in anti-oxidants and Vitamin E. Enjoy pistachios with a zesty garlic flavour.

Pecans

Great source of anti-oxidants, vitamins and minerals; they lower your bad cholesterol and are healthy for your heart. Low in glycaemic index, they provide energy for a longer period of time and are safe for diabetics.

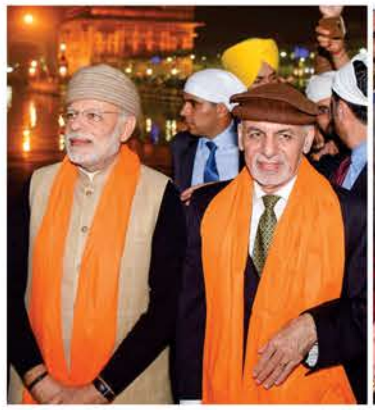

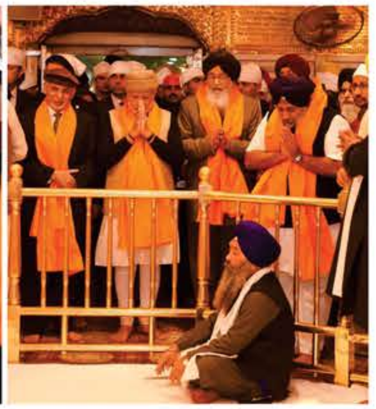

ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਦੀ ਨਵੀ ਝਲਕ

ਕੁਝ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਗੁਰੂ ਨਗਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਿਚ ਕੁਰਬਲ-ਕੁਰਬਲ ਕਰਦੀ ਅਬਾਦੀ ਬੇਲਗਾਮ ਹੋ ਚੁੱਕੀ ਹੈ, ਟ੍ਰੈਫਿਕ, ਕੂੜੇ ਦੀ ਭਰਮਾਰ, ਕੰਨ ਪਾੜਵੇਂ ਸ਼ੋਰ ਤੇ ਖਿੱਝੇ ਹੋਏ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰੀਆਂ ਦੇ ਦਿਲਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਗੁੰਮ ਗੁਆਚ ਰਹੀ ਮੋਹ ਮਮਤਾ ਤੇ ਮੁਹੱਬਤ ਨੂੰ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਲੋਕ ਕਹਿੰਦੇ ਸਨ ਕਿ ਪਹਿਲਾਂ ਵਾਲਾ ਏਹਦੇ ਵਿੱਚ ਮੋਹ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਹੁਣ ਉਹ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ....। ਪਰ ਜਦ ਦੀ ਮੌਜੂਦਾ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਚਹੁੰ ਤਰਫਾ ਵਿਕਾਸ ਦੀ ਹੇਨਰੀ ਝੁਲਾਉਣੀ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ ਤਾਂ ਪੰਜਾਬਦਾ ਪਵਿੱਤਰ ਸ਼ਹਿਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਇਕ ਵਾਰ ਤਾਂ ਯਕੀਨਨ ਠਠੰਬਰ ਗਿਆ ਸੀ। ਹਰ ਸੜਕ, ਹਰ ਰਸਤੇ, ਹਰ ਚੌਰਸਤੇ ਤੇ ਪੁੱਟ ਪੁਟਾਈ ਤੇ ਬੇਸ਼ੁਮਾਰ ਕੀਮਤੀ ਰੁੱਖਾਂ ਦੀ ਕਟਾਈ ਨੇ ਇਕ ਵਾਰ ਤਾਂ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਉਦਾਸ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ ਪਰ ਜਿਵੇਂ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਨਾ ਕਿ ਨਵ ਨਿਰਮਾਣ ਤਾਂ ਹੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜੇ ਪਹਿਲਾਂ ਉਸਰੇ ਦਾ ਮੋਹ ਤਿਆਗਿਆ ਜਾਵੇ।

ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰੀਆਂ ਵਲੋਂ ਸਹੀਆਂ ਕਠਿਨਾਈਆਂ ਦਾ ਫਲ ਹੁਣ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਚੁੱਕਾ ਹੈ। ਬੀਤੇ ਦਿਨੀਂ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸ਼ਹਿਰ ਨੂੰ ਹੋਰ ਖੂਬਸੂਰਤ ਬਣਾਉਂਦੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸਥਾਨਾਂ ਦਾ ਮਹੂਰਤ ਅਤੇ ਸ਼ਹਿਰ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਵਧਾਉਂਦੀਆਂ ਹੋਰ ਕਈ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਸਾਹਮਣੇ ਆਈਆਂ, ਜਿਸ ਦੀ ਗਵਾਹੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਨਿਵਾਸੀ ਹੀ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਿੱਚ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਮੰਦਿਰ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੀ ਜ਼ਿਆਰਤ ਕਰਨ ਆਉਣ ਵਾਲਾ ਹਰ ਵਿਅਕਤੀ ਵੀ ਹਿੱਕ ਠੋਕ ਕੇ ਦੇ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਗੱਲ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸ਼ਹਿਰ ਦੀ ਅ&ਟਰੀ

ਤੇ ਹੀ ਬਣੇ ਸੁਨਹਿਰੀ ਆਕਾਰ ਵਾਲੇ ਵਿਸ਼ਾਲ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਦੁਆਰ ਦੀ, ਜਿਸ ਦੇ ਥੰਮਾਂ ਤੇ ਲੱਗੀ ਨਨਕ ਸ਼ਾਹੀ ਇੱਟ ਵਿਰਾਸ ਦੀ ਯਾਦ ਤਾਜਾ ਕਰਵਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਸ਼ਹਿਰ ਚ ਦਾਖਲ ਹੋਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਦੂਰੋਂ ਨਜ਼ਰ ਆਉਣ ਲੱਗ ਪ &ਦੇ ਇਸ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਦੁਆਰ ਤੋਂ ਸਾਡੇ ਉਪ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਸੁਖਬੀਰ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਦੀ ਇਸ ਪਵਿੱਤਰ ਨਗਰੀ ਨੂੰ ਸ਼ਿੰਗਾਰਨ ਸਵਾਰਨ ਵਾਲੀ ਓਥਸਾਰੂ ਅਤੇ ਦੂਰ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਵਾਲੀ ਸੋਚ ਵੀ ਦੂਰੋਂ ਝਲਕਣ ਲੱਗ ਪ&ਦੀ ਹੈ।, ਜੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰੀਆਂ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਲੱਖਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਚ ਬਾਹਰੋਂ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਯਾਤਰੀਆਂ ਦੇ ਮਨ ਵਿੱਚ ਇਕ ਪਾਕ-ਪਵਿੱਤਰ ਤਰੰਗ ਛੇੜਦੀ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਅਗੁਵਾਏਠ ਕਰਦੇ ਸੁਖਬੀਰ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਵਲੋਂ ਬੀਤੇ ਦਿਨੀਂ ਇਸ ਖੂਬਸੂਰਤ ਸੁਨਹਿਰੀ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਦੁਆਰ ਦਾ ਓਥਦਘਾਟਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਅਸੀਂ ਇੱਥੇ ਇਹ ਵੀ ਦੱਸਣਾ ਆਪਣਾ ਫਰਜ਼ ਸਮਝਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਬਿਨਾ ਵਜ੍ਹਾ ਕਿਸੇ ਸਿਆਸੀ ਜਮਾਤ ਜਾਂ ਸਿਆਸੀ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਪਿੱਠ ਥਾਪੜਨਾ ਸਾਡਾ ਕੰਮ ਹਰਗਿਜ਼ ਨਹੀਂ ਹੈ ਪਰ ਸਿਆਣੇ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਹੁਨਰਮੰਦ ਲੋਕ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੁਨਰ ਦੀ ਤਲਾਸ਼ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਤੇ ਅ&ਬੀ ਲੋਕ ਹਮੇਸ਼ਾ ਕਿਸੇ ਵੀ ਕੰਮ ਚੋਂ ਅ&ਬ ਲੱਭਣ ਚ ਮਸਰੂਫ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਅਸੀ ਹਰ ਉਸ ਵਿਅਕਤੀ ਤੇ ਹਰ ਉਸ ਸਰਕਾਰ ਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਅਹਿਲਕਾਰ ਦੀ ਤਾਰੀਫ਼ ਕਰਦੇ ਹਾਂ, ਜਿਹਨੇ ਪੰਜਾਬ ਤੇ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਸਾਡੇ ਪਿਆਰੇ ਸ਼ਹਿਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਲਈ ਕੋਈ ਜਿਕਰਯੋਗ ਕਾਰਜ ਕੀਤਾ। ਬੇਸ਼ਕ ਅੱਜ ਪੰਜਾਬ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਨੂੰ 70 ਤੋਂ 76 ਫੀਸਦੀ ਨਸ਼ੇੜੀ ਦੱਸ ਦੇ ਭੰਡਣ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਵੀ ਕੋਈ ਕਮੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ਪਰ ਸਾਡੇ ਸ਼ਹਿਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਨੂੰ ਜਿਸ ਬੰਦੇ ਨੇ ਆਪਣੇ ਪੂਰੇ ਸਾਧਨ, ਤਾਕਤ ਤੇ ਦਿਲ ਲਾ ਕੇ ਸ਼ਿੰਗਾਰਿਆ ਹੈ, ਉਸ ਬੰਦੇ ਮਤਲਬ ਸੁਖਬੀਰ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਦੀ ਤਾਰੀਫ ਕਿਉਂ ਨਾ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ। ਹੁਣ ਗੱਲ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਸ੍ਰੀ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਜਾਂਦੇ ਉਸ ਰਸਤੇ ਦੀ ਜਿਸ ਨੂੰ ਹ&ਰੀਟੇਜ਼ ਵਾਕ ਦਾ ਨਾਂਅ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਕੋਤਵਾਲੀ ਚੌਂਕ ਤੋਂ ਘੰਟਾ ਘਰ ਤੱਕ ਆਉਂਦਿਆ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਹਿਸੂਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਿਵੇਂ ਤੁਸੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸ਼ਹਿਰ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਕਿਸੇ ਬਾਹਰ ਦੇ ਦੇਸ਼ ਅਟ ਗਏ ਹੋਵੋ। ਆਕਰਸ਼ਕ ਦਿੱਖ ਵਾਲੀ ਇਤਿਹਾਸਕ ਕੋਤਵਾਲੀ ਦੀ ਅਤਿ ਆਧੁਨਿਕ ਲਾਈਟਾਂ ਨਾਲ ਚਮਕਦੀ ਵਿਰਾਸਤੀ ਇਮਾਰਤ ਵਿਚ ਬਣੇ ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਦੇ ਦਿਲਕਸ਼ ਬੁੱਤ ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦੇ ਇਸਵਿਰਾਸਤੀ ਰਸਤੇ ਵਿਚ ਇਕ ਪਾਸੇ ਸਾਰਾਗੜ੍ਹੀ ਕਾਰ ਪਾਰਕਿੰਗ ਦੇ ਬਾਹਰਵਾਰ ਲੱਗੀਆਂ ਵੱਡੀਆਂ-ਵੱਡੀਆਂ ਅ&ਲ.ਈ.ਡੀ. ਸਕਰੀਨਾਂ ਜੋ ਆਉਂਦੇ ਜਾਂਦੇ ਰਾਹੀਆਂ ਨੂੰ ਸ੍ਰੀ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਅੰਦਰ ਚੱਲ ਰਹੇ ਅਲਾਹੀ ਕੀਰਤਨ ਦੇ ਮਨਮੋਹਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਾਂ ਦੇ ਦੀਦਾਰ ਕਰਵਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ, ਦੂਜਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਟ&ਲਾਂ ਵਾਲੀਆਂ ਖੂਬਸੂਰਤ ਸੜਕਾਂ, ਆਕਰਸ਼ਕ ਲਾਈਟਾਂ, ਸਾਰਾਗੜ੍ਹੀ ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਦੇ ਨਾਲ ਚਮਚਮਾਉਂਦੀਆਂ ਨਵਉਸਰੀ ਸਰਾਂ, ਹਰ ਪਾਸੇ ਇੱਕੋ ਜਿਹੇ ਮੱਥੇ ਵਾਲੀਆਂ ਵਿਰਾਸਤੀ ਦਿੱਖ ਝਲਕਾਉਂਦੀਆਂ ਇਮਾਰਤਾਂ, ਦੁਕਾਨਾਂ ਤੇ ਲੱਗੇ ਇੱਕੋ ਜਿਹੇ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿੱਚ ਲਿਖੇ ਸਾਇਨ ਬੋਰਡ ਕਿਆ ਦਿਲਕਸ਼ ਨਜ਼ਾਰਾ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਫੇਰ ਅੱਗੇ ਆ ਕੇ ਚੌਂਕ ਫੁਆਰਾ ਵੀ ਜਗ੍ਹਾ ਸਿਖਰ ਤੇ ਲੱਗੇ ਸਿੱਖ ਰਾਜ ਦੇ ਸੰਸਥਾਪਕ ਸ਼ੇਰੇ ਪੰਜਾਬ

ਮਹਾਰਾਜਾ ਰਣਜੀਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਬੁੱਤ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਥੱਲੇ ਸਿੱਖ ਸਿਪਾਹੀਆਂ, ਯੁੱਧਾਂ ਦੇ ਦ੍ਰਿਸ਼ ਅਤੇ ਸ਼ੇਰ ਮੂੰਹ ਦੇ ਬੁੱਤ ਤਰਾਸ਼ੇ ਗਏ ਹਨ। ਅੱਗੇ ਚੱਲ ਕੇ ਨਾਲ ਹੀ ਜੇ ਪਾਸੇ ਧਰਮ ਸਿੰਘ ਮਾਰਕੀਟ ਦੇ ਬਾਹਰ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦੀ ਵਿਰਾਸਤੀ ਦਿੱਖ, ਲਾਈਵ ਜੰਗੀ ਗਤਕਾ, ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦੇ ਭੰਗੜੇ ਗਿੱਧੇ ਵਾਲੇ ਗਰੁੱਪਾਂ ਵਾਲੇ ਬੁੱਤ ਆਦਿ ਇਹ ਸਭ ਨਜ਼ਾਰਾ ਵਾਰ-ਵਾਰ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਅਤੇ ਇੱਥੋਂ ਦੀ ਹਰ ਸ਼&ਅ ਨਾਲ ਸ&ਲਾਨੀਆਂ ਦਾ ਫੋਟੋ ਖਿਚਵਾਓਥਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਤਾਂ ਕਰ ਹੀ ਪ&ਦਾ ਹੈ। ਜਲ੍ਹਿਆਂ ਵਾਲੇ ਬਾਗ ਦੇ ਬਾਹਰ 1919 ਵਾਲੇ ਸਾਕੇ ਚ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਏ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਕੀਮਤੀ ਹੀਰਿਆਂ ਦੇ ਖੂਬਸੂਰਤ ਸਫੇਦ ਮਾਰਬਲ ਦੀ ਬਣੀ ਵਿਸ਼ਾਲ ਸ਼ਹੀਦੀ ਲਾਟ ਉੱਤੇ ਉੱਕਰੇ ਚਿਹਰਿਆਂ ਦਾ ਦਿਲਟੁੰਬਵਾਂ ਅਟਰਟ ਪੀਸ ਸੱਚ ਮੁੱਚ ਹੈਰਾਨੀ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਹੈ। ਸ੍ਰੀ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਅੰਟਰਸ ਪਲਾਜ਼ਾ, ਦਰਸ਼ਨਾਂ ਨੂੰ ਆਏ ਸ਼ਰਧਾਲੂਆਂ ਦੇ ਬਠਣ ਲਈ ਬਣੇ ਖੂਬਸੂਰਤ ਮਾਰਬਲ ਨਾਲ ਚਮਕਦੇ ਸਥਾਨ ਅਤੇ ਵਿਚ ਲੱਗਿਆ ਦਿਲਕਸ਼ ਫੁਆਰਾ ਕਿਸੇ ਸਵਰਗ ਤੋਂ

ਘੱਟ ਨਹੀਂ। ਇਸੇ ਹੀ ਜਗ੍ਹਾ ਬਣੇ ਜ਼ਮੀਨਦੋਜ਼ ਪਲਾਜ਼ੇ ਵਿਚ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਹੀ ਮਹੱਤਤਾ, ਸਿੱਖ ਫ਼ਲਸਫ਼ਾ ਅਤੇ ਸਿੱਖ ਇਤਿਹਾਸ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦਾ 250 ਸੀਟਾਂ ਦੀ ਕਪ&ਸਟੀ ਵਾਲਾ ਹਾਈਫਾਈ ਤਕਨੀਕ ਨਾਲ ਬਣਿਆ 3ਡੀ

ਆਡੀਓ ਵੀਡੀਓ ਵਾਕਿਆ ਹੀ ਸੁਖਬੀਰ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਦੀ ਹਾਇਟ&ਕ ਸਾਂਇਟ&ਫਿਕ ਸੋਚ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿਚ ਹੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਕਵਾਨਾਂ ਦਾ ਆਨੰਦ ਮਾਨਣ ਲਈ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿਚ ਕ੍ਰਿਸਟਲ ਚੌਂਕ ਦੇ ਕੋਲ ਇਕ ਪੁਰਾਤਨ ਇਤਿਹਾਸਕ ਇਮਾਰਤ ਨੂੰ ਅਰਬਨ ਹਾਟ ਫੂਡ ਕੋਰਟ ਵਿਚ ਤਬਦੀਲ ਕਰਨਾ ਵੀ ਸ਼ਹਿਰ ਵਾਸੀਆਂ ਲਏਠ ਕਿਸੇ ਤੋਹਫੇ ਤੋਂ ਘੱਟ ਨਹੀਂ। ਹੁਣ ਗੱਲ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਅਟਾਰੀ ਨੂੰ ਜਾਂਦਿਆਂ ਛੇਹਰਟਾ ਕੋਲ ਬਣੇ ਇੰਡੀਆ ਗੇਟ ਦੇ ਨਾਲ ਓਥਸਾਰੇ ਗਏ ਪੰਜਾਬ ਰਾਜ ਜੰਗੀ ਨਾਇਕ ਇੰਡੀਆ ਗੇਟ ਦੇ ਨਾਲ ਉਸਾਰੇ ਗਏ ਪੰਜਾਬ ਰਾਜ ਜੰਗੀ ਨਾਇਕ ਯਾਦਗਾਰ

ਅਤੇ ਅਜਾਇਬ ਘਰ ਦੀ, ਜਿੱਥੇ ਛੇਵੇਂ ਪਾਤਿਸ਼ਾਹ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਹਰਿਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਿਬ ਤੋਂ ਲ& ਕੇ ਕਾਰਗਿੱਲ ਜੰਗ ਤੱਕ 600 ਸਾਲਾਂ ਤੱਕ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਖੀ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਿਪਾਹੀਆਂ ਦੀ ਯਾਦ ਨੂੰ ਸਲਾਮ ਕਰਦੀ 45 ਮੀਟਰ ਉਚੀ ਵਿਸ਼ਾਲ ਤਲਵਾਰ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਗੌਰਵਮਈ ਇਤਿਹਾਸ ਨੂੰ ਯਾਦ ਕਰਵਾਉਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਮਨਾਂ ਵਿੱਚ ਬੀਰ ਰਸ ਭਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਕਲਾਕਾਰਾਂ ਅਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਸਰਗਰਮੀਆਂ ਦੀ ਜਨਮਦਾਤਾ ਇਸ ਪਵਿੱਤਰ ਧਰਤੀ ਤੇ ਆਪਣੇ ਵਿਰਸੇ ਦੀ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਤਸਵੀਰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਪੰਜਾਬ ਟੂਰਿਜ਼ਮ ਵੱਲੋਂ ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈਰੀਟੇਜ ਵਿਲੇਜ ਸਾਡਾ ਪਿੰਡ ਤੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਿੱਚ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਯਾਤਰੂਆਂ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪੁਰਾਤਨ ਵਿਰਸੇ, ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਜਾਇਕੇਦਾਰ ਖਾਣੇ ਦਾ ਆਨੰਦ ਦਿਵਾਉਂਦਾ ਹੈ,

ਦਾ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਉਧਘਾਟਨ ਵੀ ਬੀਤੇ ਦਿਨੀਂ ਬੜੀ ਸ਼ਾਨ-ਓ-ਸ਼ੌਕਤ ਨਾਲ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਵੱਲੋਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਧਾਰਮਿਕ ਮਹੱਤਤਾ ਵਾਲੇ ਸ਼ਹਿਰ ਦੇ ਇਕ ਹੋਰ ਵੱਡੇ ਤੇ ਮਹਾਨ ਇਤਿਹਾਸਕ ਸਥਾਨ ਭਗਵਾਨ ਸ੍ਰੀ ਵਾਲਮੀਕ ਤੀਰਥ ਸਥਾਨ (ਰਾਮ ਤੀਰਥ) ਦੀ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਵੱਲੋਂ 250 ਕਰੋੜ ਦੀ ਲਾਗਤ ਨਾਲ ਕਾਇਆ ਕਲਪ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ, ਜਿੱਥੇ ਸਰੋਵਰ

ਵਿਚ ਨਵ ਉਸਾਰੇ ਖੂਬਸੂਰਤ ਭਗਵਾਨ ਵਾਲਮੀਕ ਮੰਦਰ ਵਿਖੇ 6 ਕਰੋੜ ਦੀ ਲਾਗਤ ਨਾਲ ਅਤਿ ਸੁੰਦਰ ਭਗਵਾਨ ਵਾਲਮੀਕ ਦੀ ਵਿਸ਼ਾਲ ਮੂਰਤੀ ਸੁਸ਼ੋਭਿਤ ਕਰਨ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਅਤਿ ਆਧੁਨਿਕ ਤਕਨੀਕ ਨਾਲ ਪ&ਨੋਰਮਾ ਅਤੇ ਯਾਤਰੂਆਂ ਲਏਠ ਕਈ ਕਮਰਿਆਂ ਵਾਲੀ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਸਰਾਂ ਬਣਵਾ ਕੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਿੰਘ ਬਾਦਲ ਵੱਲੋਂ ਵਾਲਮੀਕ ਭਾਈਚਾਰੇ ਨੂੰ ਇਹ ਖੂਬਸੂਰਤ ਤੋਹਫ਼ਾ ਬੀਤੀ 1 ਦਸੰਬਰ ਨੂੰ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਇੱਥੇ ਇਹ ਗੱਲ ਹੋਰ ਵੀ ਜ਼ਿਕਰਯੋਗ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਸਾਰੇ ਪ੍ਰੋਜ&ਕਟਾਂ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਕਰਵਾਉਣ ਲਈ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਵੱਲੋਂ ਲੁਧਿਆਣਾ ਦੀ ਮਸ਼ਹੂਰ ਕੰਸਟ੍ਰਕਸ਼ਨ ਕੰਪਨੀ ਦੀਪਕ ਬਿਲਡਰਜ਼ ਨੂੰ ਇਹ ਕੰਮ ਸੌਂਪਿਆ ਗਿਆ, ਜਿਸ ਦੇ ਮਾਲਕ ਦੀਪਕ ਕੁਮਾਰ ਨੇ ਬੜੀ ਤਨਦੇਹੀ ਨਾਲ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਇਹ ਸਾਰੇ ਕੰਮਾਂ ਨੂੰ ਸਿਰੇ ਚਾੜ੍ਹ ਕੇ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਤੋਂ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਾ ਹਾਸਲ ਕੀਤੀ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰੇ ਪ੍ਰੋਜ&ਕਟਾਂ ਦੇ ਮਹੂਰਤਾਂ ਦੇ ਚੱਲਦਿਆਂ ਹੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸ਼ਹਿਰ ਵਾਸੀਆਂ ਦਾ ਮਾਣ ਨਾਲ ਸਿਰ ਉਦੋਂ ਉੱਚਾ ਹੋਇਆ ਜਦੋਂ ਕੌਮਾਂਤਰੀ ਅੱਤਵਾਦ ਨਾਲ ਨਜਿੱਠਣ, ਅਫਗਾਨਿਸਤਾਨ ਦੀ ਭਲਾਈ, ਉਸ ਨੂੰ ਅੱਤਵਾਦ ਮੁਕਤ ਕਰਵਾਉਣ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਨਾਲ ਵਪਾਰਕ ਸਬੰਧ ਹੋਰ ਮਜਬੂਤ ਕਰਨ ਦੇ ਮਕਸਦ ਨਾਲ ਛੇਵੀਂ ਹਾਰਟ ਆਫ਼ ਏਸ਼ੀਆ ਕਾਨਫਰੰਸ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਿਚ ਹੀ ਕੀਤਾ ਗਿਆ, ਜਿਸ ਵਿਚ

Affairs made royal

At Invite Affairs, we make 'affairs' beautiful and everlasting! Because, a royal occasion deserves royal treatment. We go the extra mile to bring distinction to each of our creations with our team of experts. The essence lies in creating timeless experiences with our unique and personalized invite cards while transforming your special occasion into the most cherished affair in your life.

9871777335, 8800661105

inviteaffairs@gmail.com

www.inviteaffairs.com

495, Sector - A, Pocket - C, Vasant Kunj, New Delhi-70
Tel: +91- 11- 41550783

Invitations for
WEDDINGS | EVENTS | PARTIES | CORPORATES | SPECIAL OCCASIONS

JAYALALITHAA'S NIECE DEEPA JAYAKUMAR ANNOUNCES ENTRY INTO POLITICS ON MGR'S BIRTH ANNIVERSARY

Announcing her entry into active politics, Deepa Jayakumar, late chief minister J Jayalalithaa's niece, took a plunge into Tamil Nadu politics on Tuesday, News18 reported.

However, she did not make it clear whether she will be joining the AIADMK or form her own party. Deepa's decision to enter politics coincides with the 100th birth anniversary of AIADMK founder MG Ramachandran. "To end such things, I make it clear on this day (MGR's birth centenary) that I will enter politics, do people's work and I desire that," she told reporters at a crowded press conference, adding, she was interested in politics and waiting to work for the people.

Deepa asserted that she does not accept anyone other than her late aunt as the AIADMK chief, adding that she is unhappy at the elevation of VK Sasikala, a long time aide of Jayalalithaa. The 40-year-old claimed that the opinion of many party members was ignored while pointing out the apparent urgency in making Sasikala the new general secretary. Deepa, who is the daughter of Jayalalithaa's only brother Jayakumar, also hit back at Sasikala and her family, refuting the charges that the late chief minister had been working based on the ideas given by the family. Dismissing the alleged rumours being circulated about her, Deepa indirectly slammed Sasikala and her group for perpetrating the menace.

However, the former media studies researcher at UK, added that she would announce her future course of action on Jayalalithaa birth anniversary - 24 February. Promising to carry on the legacy of her aunt, Deepa added that she will be travelling across Tamil Nadu to seek people's support. Asked whether she and AIADMK General Secretary VK Sasikala should join forces and prevent a break-up in the party, Deepa said, "I have no opinion," adding, she was only considering the aspirations of the cadre and taking into account "Makkal Sakthi (people's power)". She said she was asked by the cadre to take up a role in the AIADMK. Asked if Sasikala invited her to join the AIADMK, she said, "No. I can only give a direct answer and that is a no."

Answering a question if she will have the support of Sasikala if she chose to join the AIADMK, she said, "It is premature to talk about this.. My course of action has to be decided." On being asked whether she has the support of the BJP, Deepa reiterated that she is not in talks with anyone right now. On Tuesday morning, Deepa visited the MGR memorial and paid tribute to the former chief minister, who had been instrumental in bringing Jayalalithaa into politics, the Newsminute reported. The Tamil Nadu government has declared Tuesday a public holiday to commemorate the birth centenary of the cinema legend and the three-time chief minister.

Thousands of AIADMK supporters gathered near the MGR memorial to pay rich tribute to the late leader. Deepa and her followers were also present at the site. Maradhur Gopalan Ramachandran was born on 17 January 1917 in Kandy, Sri Lanka. Later in his life, as he gained prominence as a film star, he came to be known by his initials MGR. After his successful film career, he broke away from the DMK to form the AIADMK in 1972 and became the chief minister in 1977. MGR died in office on 24 December 1987.

TMC and BJP must find a 'MATURE' way to sort out differences for West Bengal's sake

Of late, Kolkata has been in the news for all the wrong reasons. Worse, it is afflicted with a chain of sickening and perverse rhetoric exchanged regularly between the ruling Trinamool Congress (TMC), its affiliates and supporters on one side and the political adversaries on the other. Political rivalry and ideological differences do exist in a democracy and they are normal, yet, they are kept within the confines of a basic decency not exceeding the limits which are unparliamentary and unpleasant. Kolkata, sadly, is failing at it. It's common knowledge that the TMC and the BJP have been at loggerheads with sharp political differences. However, things have reached a nasty impasse after the central Bureau of Investigation (CBI) arrested TMC leaders Sudip Bandopadhyay and Tapas Pal on charges of complicity in a Ponzi scam. West Bengal chief Minister Mamata Banerjee is very infuriated with the central government's "transgression" into her territory daring her MPs and party activists leading to their arrests. Such moves have further vitiated the political atmosphere which is showing no signs of either party blinking first. All these notwithstanding, what's worrisome is the hiatus has openly triggered bad mouthing with belligerence and marked aggression. Kolkata, in its history of three hundred years plus existence, has seen Bengal Renaissance, the emergence of a galaxy of freedom fighters and revolutionaries like Netaji Subhash Chandra Bose, Bipin Chandra Pal, CR Das, scientists like Jagadish Chandra Bose, Meghnad Saha, Prafulla Chandra Ray etc. and above all, West Bengal has churned out Gurudev Rabindranath Tagore and film personality Satyajit Ray. The list of personalities who have contributed substantially to the cultural upbringing and growth of the Bengal state in general and Kolkata, in particular, is endless. The highlight and the strength of the Bengalis have been its language, which is described as sweet by many. Differences apart, the pleasant use of the language helped maintain a minimum decency in political discourse which was devoid of acrimony and personal attacks. A bhadralok culture had seeped in. Unfortunately, all this is evaporating rapidly, and forces opposed to the bhadralok class have stooped low and are using the gutter language to target their political opponents. Very recently, the Imam of the Kolkata's Tipu Sultan mosque, Nurur Rahman Barkati issued a fatwa against Prime Minister Narendra Modi announcing a reward of Rs 20 lakh to anyone who blackened the prime minister's face and shaved his head and beard. In a similar vein, a threat was issued to slit the throat of Pakistan-origin Canadian social activist Tarek Fatah for his statements that are described as "anti-Islam". While Barkat was issuing this fatwa on 7 January, the stage was prominently showing a banner where it was written that Mamata should be the next prime minister of India in 2019. Here, we clearly see a mix of religion and politics, and the words used call for condemnation. However, no whip was cracked to discipline such forces thus emboldening others to shoot out a more aggressive language. The imam of Tipu Sultan mosque is perfectly justified to follow his tenets but to blend it with politics leaves a bad taste. Earlier on 30 April 2016, West Bengal chief minister's aide and minister in the cabinet, Firhad Hakim described Kolkata port area as mini Pakistan. He offered to show the area to Dawn journalist Maleeha Siddiqui. Such unsavoury statements and activities coming from a minister from the Indian soil are shameful. It's been nine months since this was said. No one disciplined

the guilty. So, it was assumed that it had the blessings of those from the top and the trend was legitimised as a ritual. Hence, it continues with the display of power and demonstrative skills.

Such kind of spats, however, don't end here. On 11 January, TMC MP Kalyan Banerjee in a most unfortunate unparliamentary tone, publicly said that after the 2019 polls, Prime Minister Narendra Modi will flee for refuge in Gujarat like a rat. It doesn't behove an MP to compare the prime minister with a "rat". Wasn't this avoidable? When questioned on television for such remarks, the statement was defended and not denied. The fight on oratory skills have assumed a regressive form and unless such outbursts are reined in, they will see an escalation to a dangerous level. And with a polarised West Bengal, chances of communal passions running high remain a strong possibility. Perhaps, the chief minister herself, in concert with the intelligentsia of Kolkata, hitherto known for its efforts to contain such fissiparous and parochial tendencies must step in without delay. On part of the BJP spokespersons and other activists, it would be advisable to exercise restraint and refrain from giving any provocative statements. The more one scratches the surface, it becomes more counterproductive, poisoning the political environment and drawing nonstop acerbic remarks. It's time West Bengal shows some visible signs of being progressive and mature. In sports and games, often there are rough plays. But there are referees and umpires to judge and warn the parties, and bury the hatchet there itself. Politics seems to have become a dangerous game. Matches are being played without referees with scant respect for any rules. The BJP may do well to engage the TMC's more mature spokespersons and party men for dousing the flames as soon as any spark is seen. This appears imperative or at least worth a try. With the state's repeated calls to its establishment to distance its dealings with the centre, the gulf is widening further stifling any chances of a rapprochement. Perhaps, it was Gopal Krishna Gokhale who had once said, "What Bengal thinks today, rest of India thinks tomorrow". This is defied and bellied in a good measure today. And that's sad for Kolkata, it's cultural heritage, and to its glorious past. The decay seems to have begun.

Modi should promise Ram temple if BJP wants seers' support, says chief priest at Janm Bhumi site

The seers will support BJP in the upcoming UP elections only if Prime Minister Narendra Modi promises to get the Ram temple constructed in Ayodhya during his tenure, the chief priest of the makeshift temple at the Ram Janm Bhumi-Babri Masjid disputed site said. The chief priest, Acharya Satyendra Das, said that 'mahanat' and 'sadhu' are believers of Lord Rama and their only wish is to see a grand Ram temple in Ayodhya. "After Modi government took over, we hoped that now the temple would be constructed. "Modi must visit Ayodhya, give us a guarantee and announce that he will get the Ram temple constructed during his tenure," said Das. "Then we will mobilise the Hindu masses to vote for BJP as 'mahant' and 'sadhu' in Uttar Pradesh enjoy a strong following. If we support BJP, it will definitely win," he said. Reacting to Das' demand, the Mahant of Rasik Niwas temple in Ayodhya, Raghuvar Sharan, alleged that the BJP leaders who gained politically due to the Ayodhya Ram temple movement never raised the issue in parliament. "The BJP leaders, who rose to politics due to Ayodhya issue including Lal Krishna Advani, Murli Manohar Joshi, Vinay Katiyar and Uma Bharti, are all members of Parliament," he said. "they never raised their voice for Ram temple in the House, neither did they demand that Prime Minister Modi bring a resolution in parliament for construction of Ram temple in Ayodhya," Sharan said.

BJP, SHIV SENA WORKERS KEEN ON GOING IT ALONE, BUT BABUS FEAR CROSSFIRE

BMC ELECTIONS 2017

Top leadership of the Bharatiya Janata Party (BJP) and Shiv Sena both seem in favour of an alliance ahead of municipal polls to the country's richest municipal body, the Brihanmumbai Municipal corporation (BMC), next month. However, neither set of office bearers and party cadre seem too excited about the idea. With alliance talks set to start from Monday, karyakartas from both sides are insistent on going it solo.

Both Sena chief Uddhav Thackeray and BJP's Maharashtra chief minister Devendra Fadnavis are keen on a tie-up, fearing vote split, and a Congress victory if this happens. Moreover, even the IAS, IPS administrators are of the opinion that a tie-up between the saffron ideological partners is important for the benefit of the city. However, if the two split ways over the next 35 days, it would hurt the Sena more. As elections draw nearer, there will be a slew of inquiries, and BJP has already made its stand clear - that it's the Sena that is responsible for road work, nullah cleaning, and garbage collection.

A part from Mumbai, nine other municipal corporations - Thane, Ulhasnagar, Pune, Nashik, Nagpur, Pimpri-Chinchwad, Akola Solapur and Amravati - will also witness polling on 21 February. Results will be declared on 23 February. Submission of forms will start from 27 January and will continue till 7 February. For 12 days after that, until 19 February, campaigning will be underway. On thursday, at the BJP state executive meeting in thane, workers demanded the party go it solo. However, Fadnavis said an alliance with Sena would bring about development and transparency in governance. Addressing the meeting, Fadnavis admitted there are differences between the allies. Sena and BJP may be two different parties and they will remain different. But to avoid playing into Congress' hands, they should join hands, he said. Soon after this, BJP started an official dialogue. Sena MP and party secretary Anil Desai confirmed that BJP state president Raosaheb Danve called Thackeray. From Monday onwards, the seat sharing formula will be discussed by the two party leaders, he added. "Shiv Sena has been in favour of an alliance with BJP since Day 1. We aren't ready for an alliance in pockets; we want a overall tie-up in all 10 municipal corporations, and all 26 zilla parishads," he said. However, party workers from both sets want to go solo. Neither set of karyakartas are keen on an alliance. Contestants too are keen to try out their political fate; MLAs and MPs from both parties are constantly attacking each other. While BJP Mp Kirit Somaiya and Mumbai unit president Ashish Shelar have directly highlighted corruption in the Sena controlled BMC, Sena leaders Ramdas Kadam and MLC Anil Parab have accused BJP of using Sena's support to grow. In the last two years especially, leaders of both parties have been confident of competing in all 227 wards. On the other hand, if an alliance doesn't materialise, both parties will be accused of hurting each other's chances and indirectly helping out the Congress. Talking to Firstpost, a senior BMC official said that the next 35 days are crucial for everybody concerned. If the talks fail, both parties will be in serious trouble. The standard code of conduct has begun, but until 8 March, the current civic representatives will remain in place. "So we have to follow the orders of the mayor, standing committee chairman, educational committee chairman and BESt," he said.

So, if the Shiv Sena and BJp alliance can work smoothly, the BMC's roads department will hold a second phase of enquiry, but the report will not come out before the results are out. But if talks fail, Fadnavis may give instructions to civic commissioner Ajoy Mehta, who would have to obey the chief minister.

The first phase of roads' enquiry, in which 35 roads were checked by the additional municipal commissioner Sanjay Deshmukh, investigated the Rs 350 crore scam. For the first time in the history of the BMC, six contractors and three senior civic officials are behind bars. But the second phase is being delayed.

The civic body's enquiry department is also probing suspected engineers and staffers, and those who were found guilty in the Rs 100 crore nullah desilting scam. More than 14 tainted officials were suspended in September last year. But the final outcome has not yet come. So you have senior BMC and police officials and MMRDA staff, including those working on the Mumbai Metro, who want a Sena-BJP alliance. Senior police officers know that if the alliance breaks, there will be daily worries for the force. On both sides, pressure is up and nobody can focus on the city's law and order situation. Senior MMRDA and MMRC officials also know that if the two parties contest solo, the actual work of digging and diversion of roads would grind to a halt. Agitations have been taking place everyday, and the project has been delayed by over two months, said a senior MMRDA official. So you have the entire senior politicians and administrators, including police, BMC and MMRDA urging the warring partners Shiv Sena and BJP to join hands. If only the actual party workers would understand.

HARYANA
MODI BETTER BRAND THAN MAHATMA GANDHI
Anil Vij

As if Prime Minister Narendra Modi's photo in the calendar and the diary of Khadi and Village Industries Commission (KVIC) could not cause more controversy, Haryana Minister Anil Vij added fuel to the fire by blaming Mahatma Gandhi for the decline in demand for khadi and even said that Gandhi's face on Indian currency notes was also responsible for its devaluation.

"Ever since khadi became linked with Gandhi's name, khadi (industry) has not been able to rise and it has been on a decline," said BJP leader Anil Vij. "Gandhi has such a name that since the day his picture was printed on the currency notes, the currency's devaluation began,"
Vij further said. The Haryana minister even said that Gandhi's image will be eventually removed from the currency notes too.
"It is good that Modi's photo replaced that of Gandhi in the calendar. Modi has a better brand name than Gandhi," Vij said.

Vij's foot-in-mouth remarks come after Modi's image replaced that of the father of the nation Mahatma Gandhi from the 2017 wall calendar and table diary published by the KVIC. Most employees and officials were taken aback to see the cover photo of the calendar and diary showing Modi weaving khadi on a large charkha, in the same classic pose as Gandhi. "We are pained at this systematic easing out of Mahatma Gandhi's ideas, philosophy and ideals by the government.
Last year, the first attempt was made by including the PM's photos in the calendar," a senior KVIC staffer had told IANS, requesting anonymity amid fear of official reprisals. Reacting to Vij's remarks, BJP leader Jawahar Yadav, trying to control the damage, told CNN-News18, "This is his personal opinion. It is not the stand of the party. Gandhi's principles are enshrined in the constitution of the BJP."

- **Haryana Chief Minister Manohar Lal Khattar also said that the views expressed were personal and had "nothing to do with the party".**
- **It is his personal opinion and has nothing to do with the party: Haryana CM Manohar Lal Khattar on Anil Vij.**
- **Another BJP leader Shrikant Sharma said the party "strongly condemns Vij's statement. BJP strongly condemns statement of Anil Vij, it's his personal remark & not party's stand. Mahatma Gandhi is our icon: Shrikant Sharma,BJP**
- **But the outrage over Anil Vij's statements has already begun. Congress leader Priyanka Chaturvedi said, "it's an extremely shameful comment and it also reflects what the BJP has been all about. The thinking of the BJP is similar to that of Nathuram Godse."**
- **Another Congress leader Randeep Surjewala said "such kind of objectionable and nonsensical statements from BJP's leaders and ministers" were expected.**
- **Rashtriya Janata Dal (RJD) chief Lalu Prasad Yadav expressed his anger in his own way.**

SEABOURN LAUNCHES SEABOURN ENCORE, *its most luxurious ship*

RICHARD MEADOWS, PRESIDENT OF SEABOURN SAID:

The launch of **Seabourn Encore** marks the start of a new era of ultra-luxury cruising.

Seabourn Encore marks a major step forward in terms of growth for our company. This ship is stunningly beautiful and I know guests are going to be absolutely captivated as they step aboard and see it first-hand.

The 40,350-tonne Seabourn Encore is the fourth addition to the fleet but becomes the first in a new class of ship for the company.

The yacht has 300 guest suites with allmarble bathrooms and has 33% more capacity than the company's existing odyssey-class vessels.

The design evokes more space, curvy lines are easy on the eye with elegant mahogany and glass spiral staircases and sails are made to offer more shade from the sun. Having been delivered to Seabourn in late november 2016, the new-build ship embarked on a "pre-inaugural" cruise to Asia for its official launch ceremony.

The ship's godmother, opera singer Sarah Brightman officially inaugurated the ship when she sent a bottle of champagne smashing against the bow of the ship. Seabourn Encore is the company's largest ship to date. Seabourn Encore is the fourth luxury vessel to join the Seabourn fleet, and the first of two new-build vessels being designed by Adam D. Tihany. The Seabourn ovation, is currently under construction and is scheduled to launch in spring 2018.

UP ELECTION 2017

Mulayam's Victory in Defeat: EC Decision Helps Pass Samajwadi Party Legacy to Son Akhilesh

While all political parties and people expected that the "cycle" election symbol of the Samajwadi Party could be frozen and that the two factions of the party would be contesting the Uttar Pradesh assembly Election 2017 on different symbols, the Election commission (EC) shook up the political environment in the state on 16 January declaring that the Akhilesh Yadav-led faction was the Samajwadi Party and therefore entitled to use the symbol. There were immediate cheers and celebrations at Akhilesh Yadav's residence. Soon enough, his supporters tried to take control of the party office as well, even as there was gloom in the Mulayam Singh Yadav- Shivpal Yadav camp. But more than the mere physical control of the party office, the decision has caused a sudden upheaval in the state's politics. Not only has the party founder Mulayam Singh Yadav lost control over the party and its symbol, but all other parties, rather complacent till now hoping that the two factions would lose much of their clout if contesting under different symbols, have gone into a panic mode. Mulayam Singh Yadav had told his supporters that Akhilesh Yadav was "no well-wisher of Muslims" and that he would contest the election against his son. And, the Bharatiya Janata Party was announcing its first list of contestants when the Election Commission order swept away all the headlines. While Mulayam Singh Yadav has no option but to either seek another symbol or opt for the symbol of the existing Lok Dal — as has been offered by the party's president — for the Akhilesh Yadav camp, it is a huge boost just a day before nominations for the first round of polling starts. While it was announced that Akhilesh Yadav would start a whirlwind tour of the state from 19 January, the announcement of the much-anticipated alliance comprising congress and other parties is also likely to happen in a day or two. For all practical purposes, the EC decision has helped the transfer of Mulayam Singh Yadav's political legacy to his elder son, something which the senior Yadav always wanted despite his criticism of the way Akhilesh Yadav ran the government. Mulayam Singh Yadav had started commenting upon Akhilesh Yadav's style of working within a few months of the latter becoming the chief minister. Events of the last five months further helped establish that Akhilesh Yadav had the power and authority to challenge powerful old-timers in the party including uncle Shivpal Yadav. All this while, Akhilesh Yadav continued to say that Mulayam Singh Yadav's word was final for him. Then came the big day on 1 January when Akhilesh Yadav was named party's national president in place of Mulayam Singh Yadav. By gaining control of the party and the symbol, now Akhilesh Yadav has the ultimate authority to finalise candidates, re-negotiate alliance terms with the Congress, Rashtriya Lok Dal, Janata Dal (united) and others, and embark upon a campaign jointly with the leaders of these parties. Suddenly, the chances of Akhilesh Yadav emerging as the front-runner in the elections have brightened. The events of the past few months had dampened the spirits of the party cadre, but now, armed with the established party's name and symbol, Akhilesh Yadav supporters are more confident than ever to emerge victorious again. For Shivpal Yadav, this is perhaps the most difficult time of his political career. Having lost control of the party name, symbol, office and resources, he is now left with only a handful of legislators and office bearers of the party. He faces the challenge of finalising names for all 403 constituencies, organising the election campaign and coming up with an argument that he and Mulayam are the "real" Samajwadis who have been robbed of their party and symbol. On the other hand, both Akhilesh Yadav and Rahul Gandhi are likely to announce their alliance very soon, albeit now on Akhilesh Yadav's terms. And, even if Akhilesh Yadav reduces the number of seats to be given to the Congress, it is a bonanza for the latter. As per reports, till now, Akhilesh Yadav, his wife Dimple Yadav, Rahul and probably Priyanka will be the lead campaigners in the joint election campaign. The development certainly comes as a big worry for the Bahujan Samaj Party (BSP) and the Bharatiya Janata party (BJP) as both had been banking heavily on the weakened factions of the Samajwadi party bereft of the party name and symbol. Akhilesh Yadav, besides having the government machinery at his disposal, has most of the legislators, the party name, structure and resources, and most importantly, the symbol. this strength puts him in a commanding position in dealing with would-be alliance partners and gives him a great edge in the campaign content. He would now obviously play a whole lot more on his so called "revolt" to rid the party of undesirable elements. And since he has to also shrug off the charge of being an ungrateful son, there is always the possibility that he will fulfil the promise he made some time ago - that he will head the party for just a short period of three months, to win the election and form the government, and then he would request Mulayam Singh Yadav to join as the national president again.

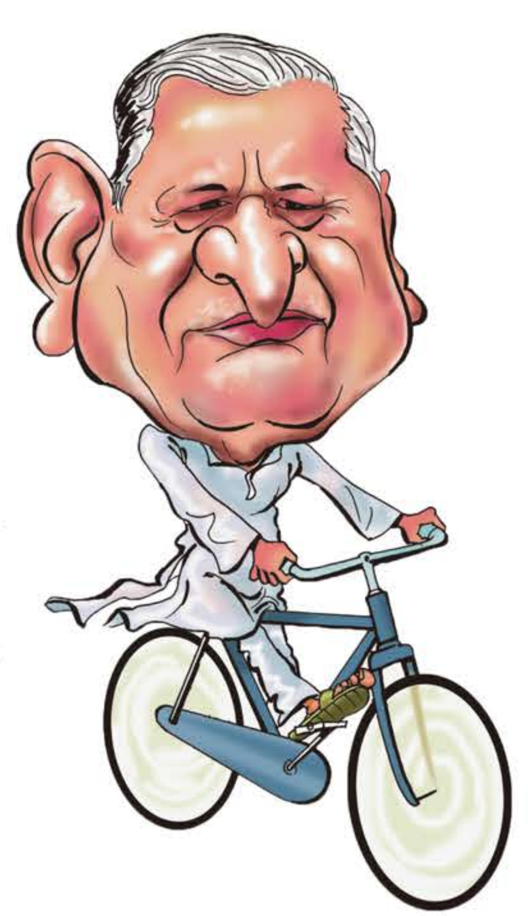

PROVISIONS U/S 271 (1) (C) OF INCOME TAC ACT, 1961: (A view)

Penalty u/s 271 (1) (c) of the I.T. Act, 1961 is one of the mostly contested provisions in the act. There has been varying judgements from the apex court on the issue, several of them inconsistent with each other.

A bare look at the provisions of the section 271(1)© of I.T. Act 1961 shows that satisfaction of the concerned tax authority to the effect that the assessee has either concealed the particulars of income or furnished inaccurate particulars of income is the condition precedent for levy of penalty and such satisfaction must be arrived at in the course of any proceeding under the act. This view was taken by the apex court long back in the case of cit vs. Angidi Chettiar 44 itR 739 while construing the similar provisions of section 28(1)© of I.T. Act 1922 (in short '1922 act) and reiterated in the case of D.M. Manasvi 86 itR 557 (SC) while construing the provisions of section 271(1)© of 1961 act. Full Bench of Punjab & Haryana High court, in the case of cit vs. Mohinder Lal 168 itR 101, held that it is the satisfaction of the ITO in the course of assessment proceedings regarding the concealment of income which constitutes the basis and foundation of the proceedings for levy of penalty. Thus, this condition must be satisfied.

(A) Basic requirement for initiation of penality u/s 271(1)(c):

(i) Penalty u/s 271(1) (c)does not depend on return income as is held by the Supreme court in case of JCIT, Surat vs Saheli Leasing & Industries Ltd. [2010] 191 taXMan 165 (Sc). the court held that even if return is nil and after addition, there is no tax payable, the penalty u/s 271(1)(c) lies. In words of Supreme court the purpose behind the section 271(1)©) is to penalise the assessee for :

(a) Concealing particulars of income and/or

(b) Furnishing inadequate particulars of such income.

(ii) Whether income returned was a profit or loss, was really of no consequence. therefore, even if no tax was payable, the penalty was still leviable. Even prior to the amendment, it could not be read to mean that if no tax was payable by the assessee due to filing of the return disclosing loss, the assessee was not liable to pay penalty even if it had concealed and/or furnished inadequate particular.

(iii) Penalty cannot be imposed just for making incorrect claim as is held by the Supreme court judgment in cit vs Reliance Petroproducts Pvt. Ltd. [2010] 322 ITR 158 is path-breaking judgment specially the tendency of the income tax officers to initiate penalty proceeding for any claim by assessee which is not as per law. in this judgment, the Supreme court also defined what is the meaning of "furnishing incorrect particulars of income.

(iv) Further it is also to be noted that there must be a clear finding about the charge of penalty. it is incumbent upon the AO to state whether penalty was being levied for concealment of income or for furnishing of inaccurate particulars of income. In the absence of such finding, the order would be bad in law. In this regard the reliance is being placed on Manu engg. Works 122 ITR 306(Guj), new Sorathia Engg. co 282 ITR, 642(Guj), padma Ram Bharali 110 itR 54(Gau).

(b) Surrender of income: the mere fact that the assessee has surrendered his income, the surrender could not necesaarily be an admission of the assessee that the amounts surrenderd, were his undisclosed income. The surrender of the assessee could have been for more than one reason. So, such surrender alone could not be the basis of imposing penalty as is held in the case of Krishanlal Shivchand Rai v. cit(1973) 88 ITR (punj.) and cit v. S.V. Electricals Pvt. Ltd. (2005) 274 ITR 334 (MP).

(c) Addition made on estimation basis:
Mere disallowance of expense is not concealement as is held in cit v. SSP Ltd.(2010) 328 ITR 643 (P&H).

The Punjab & Haryana High court in a case of cit v. M.M. Rice Mills(2002) 253 ITR 17 (P&H) held as follows:

(I) Merely because the addition had been made to the income under the provision Section 145(1) of the I.T. Act, 1961 by adopting the view that the Gross profit shown in the books of accounts was too low as there was defects in the method of accounting employed, it would not automatically lead to the conclusion that there was failure to return the correct income by means of fraud or gross or willful neglect.

(ii) Further, the Hon'ble Punjab & Haryana High court in the case CIT v. Ravail Singh & co. (254 ITR 191) held that there should be a concrete evidence of concealment to levy a penalty. the similar views were also expressed by the Allahabad High court in the case of CIT v. Raj Bans Singh 276 ITR 351.

(D) Conclusion: It is clear from the above that the initial burden of discharging the onus of rebuttal is on the assessee. Once this onus is discharged, it would be for the revenue to prove that the assessee had concealed his income or furnished inaccurate particulars deliberately.

An assessee's statutory obligation u/s 139(1) is to give correct and complete information with the return of income. If this is complied with then there is no contravention which can attract even a civil liability. The fact that addition and disallowances are made by A.O. does not mean that there is a breach of obligation. The proposition that just penalty u/s 271 (1)(c) Is a civil liability, it must mean the penalty can automatically be levied on basis of any addition to income, is not correct.

Jagmohan Singh
FCA

AUTO LINE DIRECT MARKETING

HDFC BANK
We understand your world

NEERAJ RAJPAL
+91-98141-05839
+91-98761-05839

CAR FINANCE : NEW AND USED FINANCING AVAILABLE THROUGH HDFC BANK
SALE & PURCHASE : SELL YOUR CAR AT BEST PRICE WITH TRANSPARENCY AND RELIABILITY
EXCHANGE : UPGRADE YOUR OLD CAR WITH BRAND NEW OR UPPER MODEL USED CAR
CASH LOAN : LOAN UPTO 100 ON YOUR EXCITING CAR
INSURANCE : BUMPER TO BUMPER POLICY AND DEP CAP POLICY

ASSOCIATE OF HDFC BANK KOCHAR MARKET CHOWK, LUDHIANA
TELEFAX : 0161-5034344 | EMAIL : neeraj0009@yahoo.co.in | aol.autoline@yahoo.co.in

योग से दमा रोग से मुक्ति संभव है

जीवन पर्यन्त दमे से पीड़ित लोगों के संबंध में प्रायः ऐसा कहा जाता है कि दमा रोग जीवन के साथ ही समाप्त होता है। यह रोग जिंदगी के अंतिम क्षणों तक काफी कष्टप्रद होता है। प्रदूषणयुक्त वातावरण में धूल, रूई, मिट्टी, कोयला, धुंए या गंदे स्थानों पर निवास करने वाले लोगों में यह रोग बहुतायत मात्रा में पाया जाता है। शहरों में कल-कारखाने में काम करने वाले श्रमिक तथा तंग गलियों में बिना हवादार कमरे में रहने वाले व धूम्रपान करने वाले लोगों में दमा रोग की शिकायत पायी जाती है। ये ऐसे कारक हैं जो दमा रोग से पीड़ित रोगियों की बीमारी बढ़ाने में काफी सहायक सिद्ध होते हैं। दमा रोग वंशानुगत भी होता है।

योग में यौगिक षटकर्म की छह क्रियाएं होती हैं जिनके नियमित अभ्यास करने से शरीर का शुद्धिकरण होता है। ये हैं - धौति, वस्ति, नेति, नौलि, नाटक एवं कपालभाति। योगशास्त्र में धौति क्रिया को तीन प्रकार से करना बताया गया है - वारि धौति अर्थात् कुंजल क्रिया, दंड धौति एवं वस्त्रा धौति। कुंजल हाथी को कहते हैं। जिस प्रकार हाथी सूंड से जल खींचकर पुनः उसे सूंड से बाहर निकाल देता है एवं इस क्रिया से वह अपने शरीर को निरोग बनाये रखता है ठीक उसी प्रकार कुंजल क्रिया में पानी मुख से पीकर पुनः उसी मार्ग से मनुष्य बाहर निकाल दे तो शरीर निरोग एवं स्वस्थ बना रह सकता है। दमा जैसे कष्टदायक रोग से कुंजल क्रिया का प्रातः नियमित अभ्यास करना काफी लाभदायक सिद्ध होता है।

इस क्रिया की विधि इस प्रकार हैः एक बड़े जग में हल्का गुनगुना पानी लेकर कागासन की स्थिति में बैठकर प्रातः शौचादि से निवृत्त होकर सूर्योदय होने से पूर्व खाली पेट गिलास से जल पीना शुरु करें। एक के बाद दूसरा, तीसरे के बाद चौथा, इस तरह पांच - छः गिलास अथवा जितना अधिक हो सके, पूरे पेट भर पानी पियें। पानी पेट भर पीने के बाद जब वमन की भांति स्थिति होने लगे तो दोनों पैरों को आसन से टिका कर खड़े हो जाएं एवं अपने शरीर को 90 डिग्री अंश तक आगे की ओर झुकाएं, फिर बायें हाथ को पेटपर रखें। पेट को हल्का सा दबाएं। उड्डीयान बंद लगाएं एवं दाहिनी हाथ की उंगलियों को मुख में डालें एवं कंठ तक ले जायें। जहां एक और छोटी जीभ होती है, वहां उंगलियों को घुमाएं। एसी क्रिया करने से पिया हुआ जल मुख से धारा बनकर निकलना शुरू हो जाता है। उस स्थिति में उंगलियां मुख से बाहर निकाल लेनी चाहिए। ऐसे ही बार-बार उंगलियां मुख में डालकर पिये हुए जल को निकालने का प्रयास करना चाहिए। पानी निकलता पूरी तरह बंद हो जाने के दौरान इस प्रक्रिया को बंद कर दें।

प्राणायामः ऋषि मुनियों द्वारा आजमायी गयी प्राणायाम विधि से फेफड़ों को अद्भुत शक्ति प्राप्त होती है, रक्त की शुद्धि होती है एवं कफ का विनाश होता है। दमा रोग में किये जाने वाले प्राणायाम में नाड़ी शोधन प्राणायाम, सूर्यभेदन प्राणायाम, उज्जयी एवं कपालभाति प्राणायाम लाभप्रद हैं परंतु आरंभिक दिनों में कुंभक का अभ्यास अथवा श्वांस अंदर से कदापि रोकना नहीं चाहिए।

नाड़ी शोधन प्राणायाम की विधिः सुखासन अथवा पदमासन की स्थिति में बैठकर कमर को सीधा रखते हुए अपने दाहिने हाथ के अंगुष्ठ से दाहिनी नासिका छिद्र क ो बंद कर बांये नासिका छिद्र से श्वांस धीमी गति से पूरी गहरायी के साथ भरें एवं फिर इस क्रिया को मध्यमा एव अनामिका उंगलियों से बाएं नासिका छिद्र को बंद करके दाहिनी नासिका छिद्र से भरे हुए श्वांस को धीरे-धीरे बाहर निकालें। इसी प्रकार पुनः दाहिने नासिका छिद्र से श्वांस भरकर बांये छिद्र से श्वांस बाहर निकालें। प्राणायाम का एक चक्र इसी तरह पूरा होता है। आरंभिक दौर में लगातार पांच-सात चक्र प्राणायाम की क्रिया कर सकते हैं।

दमे से पीड़ित रोगियों के लिए उपरोक्त दोनों क्रियाएं काफी हद तक आराम पहुंचाने में सहायता करती हैं। यह क्रिया श्वांस रोगियों के लिए काफी लाभप्रद है। इस क्रिया के साथ-साथ वस्त्र धोति, नेति, गहरे श्वांस-प्रश्वास की क्रियाएं, आसनों में गोमुखासन, ताड़ासन, पश्चिमोत्तासन, कोणासन, मत्स्यासन, भुजंगासन, उड्डीयान बंद, विपरीत करणी शवासन जैसी क्रियाएं लाभकारी हैं। इन सबके अतिरिक्त आहार को ध्यान में रखकर पाचन क्रिया को तंदुरुस्त बनाये रखें एवं नियमित इन क्रियाओं का अभ्यास करते रहने से दमा रोग से काफी हद तक छुटकारा पाया जा सकता है।

बच्चे का टिफिन हो पोषक तत्वों से भरपूर

आज अधिकतर अभिभावक परेशान हैं अपने बच्चों के आहार को लेकर। बच्चे घर से टिफिन लेकर जाना ही नहीं चाहते। उन्हें स्कूल कैंटीन में उपलब्ध नूडल्स, पिज़ा, बर्गर आदि खाना ही पसंद है। अगर बच्चे घर से टिफिन लेकर जाते भी हैं तो उसमें भी ब्रेड, या उनका मनपसंद भोजन होना चाहिए जिसमें पौष्टिकता का बिल्कुल अभाव होता है। अगर बच्चे को भोजन में पोषक तत्व ही नहीं मिलेंगे तो उसके शरीर व मानसिक विकास के बारे में क्या कहा जा सकता है। ऐसे बच्चे एक्टिव और बुद्धिमान कैसे बनेंगे?

बच्चे की वृद्धि और विकास के लिए पोषक तत्वों से युक्त जिस टॉनिक की उन्हें आवश्यकता है, वह उन्हें बिल्कुल नहीं मिल रहा है जबकि इस समय उन्हें सबसे अधिक आवश्यकता पोषक तत्वों की होती है। पोषक तत्वों की न्यूनता के कारण ही आज छोटे-छोटे बच्चों को कई स्वास्थ्यगत समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि बच्चे में प्रारंभ से ही खाने की अच्छी आदतों का विकास करें जिससे वे बाहर के खाने के प्रति कम आकर्षित हों और घर में भी ऐसे भोज्य पदार्थो को बनाएं जिसमें पोषक तत्व तो भरपूर मात्रा में हों ही, साथ ही भोजन को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत भी करें।

आइए जानें कुछ पोषक तत्वों से भरपूर व आकर्षक भोज्य पदार्थों के बारे में:

- ब्रेड बच्चों को अच्छी लगती है पर मैदे से बनी ब्रेड बच्चे के स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं, इसलिए ब्राउन ब्रेड का प्रयोग करें। ब्रेड में पनीर अंडे या खीरा, टमाटर आदि डालकर सैंडविच टिफिन में दें।शारीरिक व मानसिक विकास भी सही हो पाएगा।
- बच्चे रोटी खाने में बहुत जिद करते हैं इसलिए आप रोटी को थोड़े आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करें जैसे रोटी रोल बनाकर। इस रोल में आप पनीर, सब्जी, कीमा आदि भरें और इसे फोल्ड कर तवे पर हल्के से मक्खन में गर्म कर परोसें। हम सब एक ही चीज खाकर बोर हो जाते हैं तो बच्चे भी ऐसा ही महसूस करते हैं। उसी चीज को थोड़ा सा नयापन देकर आप उसके स्वाद में परिवर्तन ला सकते हैं और बच्चे की पसंद बना सकते हैं।
- कभी-कभी बच्चे को आप टिफिन में इडली बना कर दे सकते हैं। इडली के साथ आप सांबर दें जिसे आप बहुत सी सब्जियां डाल कर बना सकती हैं।
- अगर बच्चा नूडल्स पसंद करता है तो उसमें सब्जियों की मात्रा अधिक डाल कर बनाएं ताकि बच्चे को सब्जियों के रूप में पोषक तत्वों की प्राप्ति हो। पास्ता आदि भी बना कर दे सकती हैं।
- बच्चे को टिफिन में स्प्राउटस भी दे सकते हैं। स्प्राउटस में उबले हुए आलू के छोटे-छोटे टुकड़े, शिमला मिर्च, टमाटर, आदि डालकर ऊपर से चाट मसाला डालें। इससे बच्चे को टिफिन चटपटा लगेगा।
- बच्चे विविधता पसंद करते हैं इसलिए टिफिन में विविधता लाने का प्रयास करें। यह नहीं कि बच्चे को एक ही चीज टिफिन में दें। बच्चे पोहा भी पसंद करते है। पोहे में आप मटर, प्याज, टमाटर, उबले आलू डालें। इससे बच्चे को अधिक पोषक तत्वों की प्राप्ति होगी।
- पुलाव भी बच्चे बहुत पसंद करते हैं। पुलाव में सब्जियां भरपूर मात्रा में डालें। ऊपर से पनीर के छोटे छोटे टुकड़े भी डालें।
- कभी बच्चे को नमकीन दलिया भी टिफिन में दे सकते हैं।
- अगर आप कोशिश करेंगे तो आप इस तरह के बहुत से आसान व पौष्टिक टिफिन बच्चे को बना कर दे सकते हैं। इससे बच्चा कैंटीन का खाना नहीं खाएगा और उसका शारीरिक व मानसिक विकास भी सही हो पाएगा।

MS DHONI STEPS DOWN AS INDIA ODI, T 20I CAPTAIN

MS Dhoni on Wednesday stepped down as India's limited overs captain, just days before the announcement of the team for ODI and T20 series against England. The BCCI put out a tweet stating the same. The board, however, said that Dhoni will be available for selection for England series. Commenting on Dhoni's sudden announcement, Rahul Johri, Chief Executive Officer of the BCCI said, "on the behalf of every Indian cricket fan and the BCCI, I would like to thank MS Dhoni for his outstanding contribution as the captain of the Indian team across all formats. Under his leadership, the Indian team has touched new heights and his achievements will remain etched forever in the annals of Indian cricket." After taking over the captaincy from Rahul Dravid, Dhoni had guided India to victory in the 2007 World T20, 2011 ICC cricket World Cup and the 2013 ICC champions trophy beside powering the team to number one ranking in test cricket. Dhoni retired from test cricket during India's tour to Australia in 2014 following a slump in form. Virat Kohli who took over the test captaincy and he is also the front-runner for the job in limited overs. Known as captain cool, Dhoni made his international debut in 2004 against Bangladesh. After a string of poor scores, Dhoni made his presence felt with a brilliant century (148*) against Pakistan in Vizag. He continued his good show during India's tour to Pakistan in 2005-06 and was later made the skipper after India's first round exit from the ODI World Cup in 2007. Dhoni was the most successful captain for India as the team registered maximum wins under his leadership in tests and ODIs. He is also credited for most back-to-back wins by India in ODIs. He captained India in 199 ODIs and 72 T20Is. Dhoni has scored over nine thousand runs in ODI at an average of 50.89 and has slammed nine centuries and 61 half centuries. He has also scored 4876 runs in 90 test matches at an average of 38.09.

TRENDING : AIRPORT YOGA

Waiting for a connecting flight or for your plane to start boarding can be stressful. Wandering around duty-free shops and drinking coffee in overcrowded airport cafes can hardly help you get into your zen state. That is why airports have started offering one more activity for passengers - Yoga. Spending 15 invigorating minutes (or more if the time permits) in a quiet room while doing a short yoga sequence - what a great idea! No wonder airport yoga is catching on. Here are some airports that have already embraced the trend.

Frankfurt Airport

About a year ago Frankfurt airport opened two free yoga rooms for transferring passengers. They are fully equipped with mats and yoga props and are open 24 hours a day.

Santiago International Airport

South America is also keeping up with the trend with first free yoga class organized this summer in Santiago International Airport in Chile. The complementary classes are organized during peak times and you can follow the schedule here.

San Franciso International Airport

In fact, this is the first airport to offer a yoga room to their passengers. They came up with this idea back in 2012. they now offer 2 yoga rooms available for domestic flight passengers free of charge.

Heathrow Airport

In order to practice yoga in Heathrow Airport, you need to have access to SkyTeam Lounge which is available if you are, for example, a SkyTeam Elite Plus member, fly business or first class on particular airlines or pay a fee. When more and more passengers started travelling with their iPads and TV lounge was becoming less popular, people at SkyTeam decided to convert it into an elegant and relaxing yoga lounge by adding mats and instructional videos.

Chicago O'Hare International Airport

If one day you'll find yourself in a yoga room in Chicago O'Hare, you'll be able to quickly recharge your batteries by following exercise techniques on a special monitor and listening to the sounds of nature. The warm colors of the room and the calming atmosphere will make you forget about the hustle and bustle of the airport. You can use the room free of charge.

These are only a few examples of airports providing yoga lounges for their passengers. Feel free to add the ones that you attended! As you can see most yoga rooms are free, so if you are in for a long layover at the airport, check whether it offers a yoga room. And even if your airport hasn't yet caught up with the trend, you can always do a few yoga breathing exercises and have a more enjoyable and less stressful flight.

How to Build on Your Bachelor's with an INTERNATIONAL MASTER'S DEGREE

There's no magic to a master's degree -but the right one at the right time and in the right place can make a significant difference in your overall happiness, salary, and career opportunities. What can sweeten the pot? How about an international master's degree? Graduate studies abroad can give your undergraduate degree a big boost, but adding more years to your education is a big decision. So, what in it for you?

You can improve your career opportunities

Do your research. If your prospective master's degree is tied to a specific type of job that you want, then you'll definitely have a broader reach of opportunity. Consider occupational therapy, in which a master's degree is the key to success, or Business Management, where that MBA will certainly give you a competitive edge. Public school teachers will experience almost immediate benefits with a master's. In some fields, where a master's is a terminal degree, such as an M.F.A., you'll be able to teach at the university level. Clinical psychology is another great example of pursuing a master's in a specific field so that you can do the job you want.

You can Earn a Better Salary

A graduate degree doesn't always mean extra money, but in some fields, it's the only way to make more of it. If you choose to study medicine or law, of course, you'll need an advanced degree, but those of you who have your bachelor's and are contemplating the endeavor? You can plan on making at least $400,000 more over your working lifetime with a graduate degree. Teaching is one profession for which you'll automatically get paid more. Graphic design, marketing, finance, and therapy are other fields in which you'll definitely see a better salary-and more professional marketability-with a master's degree.

It's a chance to do Your Research at a Respected University

When considering an international master's degree, it is important to choose the right university. When it comes to research and graduate studies, location isn't everything but it can help. After all, you can't spend all your time in a lab or behind a book. Consider Helsinki, Finland, where you'll find a safe, green city surrounded by stunning natural beauty and a vibrant student scene alongside one of the world's top research universities: the university of Helsinki. You'll earn a world-class education at one of Europe's leading research institutions, and a major international reputation. With over half a million friendly faces, a vibrant urban atmosphere, and 60,000 students from around the globe, Helsinki is a perfect place to pursue that master's degree and immerse yourself in a culture of motivated, inspirational, and brilliant people. Did we mention the saunas and omenalörtsy?

You can Build on Your undergraduate Studies...or Explore Something new

Whether you want to expand on your undergraduate degree or move into a different, but related graduate program, consider the university of Helsinki. The university offers 28 master's programs in English with a wide range of possibilities. Not sure where to start? These six programs build on many common undergraduate majors, offering something for nearly everyone.

1. Master in Environmental change and Global Sustainability

If your undergraduate degree is related to environmental science or sustainability studies, select a master's and focus on issues sustainability that interest you. Solve socioecological problems that affect you and the world around you. Jobs in policy, education, advocacy, and science await!

2. Master in Food Science

If you have a bachelor's in food science or the molecular biosciences and you want to reshape how the world views food-from agriculture to processing to innovation and policy-consider a Master's degree in Food Science at the university of Helsinki, one of the highest ranked food science programs in the world.

3. Master in Microbiology and Microbial Biotechnology

With antibiotic drug resistance and superbugs at the forefront of global concern, a Master's degree in Microbiology and Microbial Biotechnology will help to ensure your role in preventing the destruction of the human race through microbes. cutting-edge research and technology, and the opportunity to have a lasting effect on the world's future make this master's program an ace in your pocket.

4. Master of Life Science and Informatics

Earn a master's in one of the university of Helsinki's leading research programs: Life Sciences and Informatics. Combine Mathematics, Computer Science, Statistics, Ecology, Evolutionary Biology, and Genetics - and you're guaranteed to find a job as an expert in life science research for either the public or private sector. This degree also puts you at a significant advantage to earn your doctorate in chosen field of study.

5. Master in Particle Physics and Astrophysical Sciences

Enjoy the secrets of the world with a master's degree Particle Physics and Astrophysical Sciences. You will enjoy a career in research, or an infinite range of possibilities in the private sector. If you studied Mathematics, Physics, Engineering, or Astronomy as an undergraduate, consider unlocking the secrets of the cosmos with an advanced degree in Particle Physics and Astrophysical Sciences.

6. Master in Linguistic Diversity in the Digital Age

Language: the key to the past, present, and future of communication. Dialect. accent. linguistic scope. Orthography. Indigenous language. Synthesized language. Human speech. Music. Binary code. Did you study a specific language as an undergraduate? or maybe Anthropology, Semantics, Communication, Linguistic theory? Do you want to make an impact on the connection between language and cognition? Are you curious about the ways language grows, evolves, becomes part of a culture? Thinking about advanced study in language? Consider the university of Helsinki's Master in Linguistic Diversity in the Digital Age.

5 TIPS FOR CONNECTING WITH OTHERS AS AN ONLINE STUDENT

Think online students live in a sad and lonely world populated entirely by themselves and their computers? Think again. the truth is that many online students lead rich, full, engaged lives in college - without ever stepping foot inside a classroom. These five tips can help you start connecting with others during your time as an online student.

1. Reach Out Right Away

At the beginning of the semester, all students are in the same boat: unsure about what to expect, feeling a bit alone and wondering what they've gotten themselves into. And just as this might be the hardest time to put yourself out there, it's also the time when people will be most receptive to others who take the initiative by reaching out. Not to mention that the sooner you start building a community with your fellow students, the more chances your community will have to grow and thrive over the time.

Most online courses have mechanisms in place designed to help students connect with each other. If you're expected to introduce yourself or engage in another kind of icebreaker, don't write it off as a meaningless exercise or as "busy work." Instead, embrace it as an opportunity to deliver an authentic and thoughtful answer. You won't just be making a good impression with your professors, you'll also be laying the foundation for positive relationships with your classmates -- not just this semester but also as you move forward throughout your academic career.

2. Embrace Social Media

While course-specific discussion boards are a great way to start connecting with your classmates, nothing says you have to limit your interactions to these forums. Think of it this way: If you met a classmate with whom you shared similar interests in a traditional "bricks and mortar" classroom, you wouldn't hesitate to add that person as a friend on social media. So why not apply the same approach to your online classmates, as well? In addition to helping you nurture relationships outside the classroom, social media can also be a useful way to fortify new friendships, get help with assignments and even start study groups.

3. Be an Active Participant

In any physical classroom, there are people who sit at the front of the room, raise their hands often and routinely contribute to the course dialog. These are the students to whom other students look for leadership, feedback and collaboration. There are other people, however, who sit in the back, never contribute and are generally disengaged from the classroom experience. These students not only add nothing to the dialog, but can actually detract from any sense of community. These same distinct student profiles exist in online courses. Establish a solid presence in the first group by remaining an active participant in all class sessions and discussions over the entire course of the semester. It's not about getting in your "face time" or meeting a minimum standard, it's about setting an expectation for yourself and committing to meet it.

4. Add Value

Many courses will specify the degree to which students are expected to participate in class forums. Rather than thinking about your contributions in terms of quantity, think about them in terms of quality, instead. Are your responses thoughtful? Original? Constructive? Proactive? All of these things make you a reliable, valued and appreciated member of the classroom community. An added benefit? Instructors are also present in course forums, and your efforts will not go unnoticed when class participation grades are calculated.

5. Put Yourself Out There

We already covered metaphorically "putting yourself out there" in #1. Now, we're talking about literally putting yourself out there. Just because you're an online student doesn't mean you're forbidden from participating in on-campus activities. If you live near your campus, visit the library or join a student club. Even better? Connect with another local classmate for coffee or happy hour. If you're a long distance learner, meanwhile, you can still meet other students by studying at your local library or joining a Meet-up. From co-ed flag football leagues to dinner and social clubs, the possibilities are near-endless. While online learning once took a backseat to traditional learning environments, it's quickly become a popular way for students to pursue their higher education goals under more flexible terms. But just because you're an online student doesn't mean you can't enjoy a connected college experience. These five tips can help you easily go from isolated to engaged.

INNOVATION IN BUSINESS AND STARTUP CHALLENGES

"A startup is an entrepreneurial venture which is typically a newly emerged, fast growing business that aims to meet a marketplace need by developing or offering an innovative product, process or service." We need to understand Startup meaning in common language- Startup is an idea when conceived in mind, take birth. This is full-fledged business in all sense with all functions- Product, Place, Promotion and Price. How is it different than conventional business probably innovation? "Innovation is defined simply as a "new idea, device, or method" Whatever small or big change is creating innovation. Students just watch something on internet/news/social media try to change the name/logo /slight process and think innovation is done... NO, through this the basic purpose of innovation is defeated. Generally, imagination flow and success/money is routed through start Up which should be otherwise, any idea/ service/product you feel can bring change in society. A lot of research has to be done on that for all P's starting with product it can be physical product or service. Personally, I always believe in innovative in services, which changes our thinking to do something in a different way and where capital involved is minimal in comparison to new product which has strong entry barriers. Basic concept has to be drawn on the paper, but it has to be embedded with technology. It remains tool but innovatively you can change the rule of game. Once I met Tim Berners Lee- Internet inventor during First Knowledge Summit, Dubai – he didn't know at that time that internet will be so useful that any mobile/E-gadgets will be based on this and this will change the entire world. Similar way Jimmy Wales, Wikipedia founder in the same summit told that Wikipedia will help providing all knowledge through Wikipedia, especially to people living in underdeveloped region e.g. Africa and even they would be able to access Data and use it.

If we talk of product innovation, Product identified has to be transferred innovatively. All efforts have to be attempted for innovation at each step. Any one step of startup can be very useful and win accolades. Pilot studies can be process for launching considering budget etc. Boot strap is the best way to fund on your own. Venture capitalist funding it has a fancy for it. In a country like India startup is taboo, you are raised as Engineers/ Doctors or to do Government Jobs/job in Blue chip companies. Risk is the key word here. Come out of this protected world and undertake risk. Be creative and innovative to be confident in yourself. Rather than wasting initial energies on searching for funding. Start with small idea or look for venture / Angel funding. Be your own master. All concepts/ products in this world have started up at small levels. Passion and focus are needed, not the money. How well you know your product/service and how innovatively you are going to offer will determine its success. Believe me the whole world is watching keenly any change and they grab the opportunity to gain a competitive edge.

Remember, innovation is not to just copy others. Opportunities support you when you are clear and satisfy your customer with application, it may be small. PayTm became household name and got massive growth with Demonetization process. Not only that but also many Apps focusing on Cashless transaction, few existing and few new started overnight. I will draw your attention to Dubai Expo2020. This is massive festival or exhibition where 25 Million visitors will be attending with in window of 180 days, many new things/ products/ services/ concepts will be revealed. The Theme is "Mobility, Sustainability, Opportunity." There is no dearth of opportunity in any field, it will create millions of jobs. Connecting with outside world, moving out from our protected walls, will help in exploring the real market. In Innovation think and working for a global market. I alone sitting in Dubai created Innovation in network probably. I am connecting the dots, getting global attention and am being approached for consultancy service. With my successful professional groups to the tune of 158000 & 45000... probably followed by 10 millions of professionals and mostly Americans. With my perseverance and focus could connect all Thaparians globally irrespective of Batch 1956 onwards and current students. You have to make extra efforts and understand the niche market.

I am in touch with over 1000 startups and VC's ... 400 odd Thaparian startups, few of them very successful but not many have gone global, various reasons. Team selection is very important. 4 Co-Founders need not be friends, but justifying their professional role... Product (IT or Non IT) / Process (IT Expert), Finance (Rich guy / understand money), Street smart to sell the product and create revenue. Here you need networker. I am visiting college regularly to mentor on Global networking and LinkedIn. These are small innovative ideas to do something which others have not imagined. I am working on Global virtual incubator for many universal startups to help them come out of the regional and local bias. Thus, helping them through mentoring and helping them seek funding, or facilitating in joint venture and technology sharing.

My other focus is on internship and placement. I am involved in networking events for Expo2020. Regarding types of Startups, there is great future for Education and health. Last but not the least the success story of my daughter whose hearing was impaired and how she came out of it. She is the one who inspired me to help differently-able people and facilitate them in getting funding for NGO.

I was interviewed by global authority and Engineering Coach Full transcript available, you can read full interview.

TECC 51: The Engineering Career Coach Podcast – Global Networking From LinkedIn and Beyond MARCH 17, 2015 BY ANTHONY FASANO, PE.

1. http://bit.ly/TECCEp51"
2. https://www.facebook.com/ ConnectingUniverse/
3. https://www.linkedin.com/in/ thaparian
4. All students/ Professionals and startups are welcome to interact and be part of my Connecting Universe
5. Nothing is impossible speech by daughter: https://youtu.be/ZRl7t6ejmbQ
6. Interview published by patients engage Singapore : http://www.patientsengage.com/personal-voices/ iovercame-profound-hearing-loss-stage-fright-become-public-speaker

Sanjay Gupta, Dubai

AMAZING FACTS ABOUT GURU GOBIND SINGH JI

(10th SIKH GURU)

Today the whole world is celeberating the 350th birth anniversary of Guru Gobind Singhji, 10th Sikh Guru. The birth place of Guru Gobind Singhji is Patna (Bihar) and it seemed that the whole world had come to Patna on 5th Jan. 2017 to celebrate the "**PARKASH UTSAV OF GURU GOBIND SINGHJI** .Here are some amazing facts about Guru Gobind Singhji**:** Incident with the Kashmiri Pandits : When, the Kashmiri Pandits had approached Guru Tegh Bahadur Ji Maharaj, seeking his help to stop the forced conversions that were being carried out by Aurangzed, Guru Gobind Singh Ji (then called Gobind Rai) who was just nine years old, came running to his father's lap, and asked him what was the matter. Guru Ji replied, "these people are in trouble. It would require the sacrifice of a great man to save their faith".

Gobind Rai replied ,"Father, there is no soul greater than you at this time on earth. You should go ahead for the sacrifice." thus at the age of nine years, little Gobind Rai, sent his father to safeguard the interest of Kashmiri pandits by sacrificing himself. Nobody in this world has done this till date when a son(Gobind Rai) has sent his father(Guru Teg Bahadurji) to sacrifice himself to save the religion of others(Hindu) in which he has no faith.

Guru Gobind Singhji was a well-versed scholar of many languages like Urdu, Hindi, Sanksrit, Persian, Braj Bhasha and Gurmukhi (script). His divine poetic compositions are all of phenomenal literary level. Guru Ji composed HYPERLINK"https://en.wikipedia.org/wiki/Jaap_Sahib"\t"_blank" Jaap Sahib, when he was just 19 years old. Jaap Sahib describes the attributes of the Almighty in an ultimate rhythmic style. His other literary work includes **"Dasam Granth, Bachitar Natak, Chandi Di War, Choupayee Sahib"**. Through his literary writings, Guru Ji preached his message of oneness , love , equality and moral code of conduct (like the former Gurus). The 'Bachitar Natak', a great literary work of Guru Ji, includes description of several events from the Guru's life where Guruji mentioned about himself before coming to this world and how and why he came to this world. What he would do in this world. No body on this earth has done this and wrote about his early life before coming to this world.

Guru Ji was also well-versed in the art of music. In fact, he invented beautiful instruments like "Taus" and "Dilruba".

Guru Ji was adept at the usage of weapons and archery. He owned the most sophisticated and exceptional weapons of those times. These are still present in Hazur Sahib, Nanded(Maharashtra) where Guruji spent last days of his life. One of his weapons, a very unique javelin, called 'Nagini Barcha', was used by Bhai HYPERLINK https://en.wikipedia.org/wiki/Bachittar_Singh"\t "_blank" Bachittar Singh, to kill the drunken mad elephant which was sent by the Mughal forces to attack the Sikhs, when they were in the fort of Chamkaur.

7. Guru Ji fought many battles, but his intention behind fighting battles was never political, ie., he did not fight to own a land or to increase his territory, like other kings did. His main purpose was to preach his Divine message, so fighting for materialistic gains was of no interest to him. But yes, he did fight against tyranny, oppression and injustice. He preaches the same in his Bani (words), that one must pick up the sword , only when all other efforts of curbing oppression have failed. In short span of 42 years he not only fought many battles against the injustice and atrocities on poor and depressed people of India and won all and on the other he started new "panth" i.e "Khalsa Panth" on a Baisakhi Day in 1699. He also wrote many Gurbani which is being recited on daily basis by Sikhs in daily life.

8. Guru Gobind Singh Ji cherished art. It is said that there were 52 celebrated poets in the Guru's darbar (court) and they, on daily basis, held regular darbar at "Poanta Sahib."

9. Guru Ji was the last of the human Gurus of Sikhism. As the reign of human Gurus was to end, Guru Ji made some practices official (which were prevalent in the times of the former Gurus), and also created a code of conduct for the Sikhs based on the teachings of the Gurus. in this way, he created the 'Khalsa', and ordered Sikhs, to accept the Guru Granth Sahib Ji as the Guru hereafter. Kindly note that Guru Ji did not start a new cult (as people normally perceive); he just made things official. It was the same Sikhi of Guru Nanak.

10. Guru Ji is referred to as 'Sarbansh Dani', as he sacrificed his entire lineage (father, mother, four little sons) for fighting against oppression and tyranny. He considered the entire Khalsa as his sons and daughters , not only his four biological sons. He proudly said, "In puttran ke sees par, vaar diye sut chaar, chaar mue to kya hua, jeevat kai hazaar" (For the Khalsa (my children), I have sacrificed my 4 (biological sons), So what if four are dead? Thousands of my sons will live hereafter!) Guru Dev considered the Khalsa as his own image, and said that he himself is present within the Khalsa.

11. Message of non-materialism: When Guru Sahib was a small child, his maternal uncle ,Kirpal Chand, gifted him two golden bangles. Little Gobind Rai, while playing beside the Ganges(River), dropped one of the bangles into the river. When his mother, Mata Gujri Ji, came to know about this, she rushed to him and asked, " Son where have you thrown the bangle? It was a gift from your uncle ". Gobind Rai Ji, took the other bangle off his wrist, threw it into the river and said, "It's there !".

Jagmohan Singh
(FCA)

SMOKING TO KILL 8 MILLION, COST $1 TRILLION A YEAR: WHO

Smoking costs the global economy more than $1 trillion a year and will kill one-third more people by 2030 than it does now, according to a study by the World Health Organisation and the US national cancer institute published on Tuesday. That cost far outweighs global revenues from tobacco taxes, which the WHO estimated at about $269 billion in 2013-2014. Tobacco kills. ReutersTobacco is likely to kill about 8 million annually by 2030. Reuters "the number of tobacco-related deaths is projected to increase from about 6 million deaths annually to about 8 million annually by 2030, with more than 80 percent of these occurring in LMICs (low- and middle-income countries)," the study said. Around 80 percent of smokers live in such countries, and although smoking prevalence was falling among the global population, the total number of smokers worldwide is rising, it said. Health experts say tobacco use is the single biggest preventable cause of death globally. "It is responsible for...likely over $1 trillion in health care costs and lost productivity each year," said the study, peer-reviewed by more than 70 scientific experts. The economic costs are expected to continue to rise, and although governments have the tools to reduce tobacco use and associated deaths, most have fallen far short of using those tools effectively, said the 688-page report. "Government fears that tobacco control will have an adverse economic impact are not justified by the evidence. The science is clear; the time for action is now." How to quit : cheap and effective policies included hiking tobacco taxes and prices, comprehensive smoke-free policies, complete bans on tobacco company marketing, and prominent pictorial warning labels. Tobacco taxes could also be used to fund more expensive interventions such as anti-tobacco mass media campaigns and support for cessation services and treatments, it said. Governments spent less than $1 billion on tobacco control in 2013-2014, according to a WHO estimate. Tobacco regulation meanwhile is reaching a crunch point because of a trade dispute brought by Cuba, Indonesia, Honduras and the Dominican Republic against Australia's stringent "plain packaging" laws, which enforce standardised designs on tobacco products and ban distinctive logos and colourful branding. The World Trade Organisation is expected to rule on the complaint this year. Australia's policy is being closely watched by other countries that are considering similar policies, including Norway, Slovenia, Canada, Singapore, Belgium and South Africa, the study said.

DEEPIKA, VIN TRY TO SAVE THIS FILM BUT FAIL

xXx: RETURN OF XANDER CAGE MOVIE REVIEW:

Before we talk about Deepika Padukone in Vin Diesel-starrer xXx: Return of Xander cage, who frankly is the only reason why most people in India care about this movie, let's talk about an important distinction. There have been good films with over-thetop characters or a ridiculous plot. But there is a difference between over-the-top characters and plots and downright stupidity. Having an outlandish plot or some crazy, wild characters does not mean that the filmmaker has the right to abandon logic altogether or make the film as unrealistic as possible. Keeping this in mind, let's now look at the basic plot of xXx. in the movie, a powerful device called 'Pandora's Box' - which can be used to send any artificial satellite revolving around the earth crashing into the planet to cause deaths - falls into the hands of the bad guys. And it is up to extreme athlete-turned-government spy Xander cage, played by Diesel, and his allies to recover Pandora's Box and save the day. Now, there is nothing wrong with the premise of the movie. Better movies have been based on more absurd plots. But what makes xXx seem like a movie made by a thirteen-year- old with some sort of teenage fantasy about mindless and unrealistic action scenes, sex and some cheesy one-liners is the horrible execution of this premise. And Vin Diesel's character Xander Cage, the super spy, is at the centre of this disaster. He obtains crucial information about his mission by seducing a group of beautiful women and later, when his boss asks him how he got such sensitive information so quickly, says that he had to go 'under cover' to get it. This is the kind of juvenile sex joke that high school kids laugh at when they are new to the concept of sex. When cage's boss Jane Marke (played by Toni Collette) offers him the assistance of some tough and experienced soldiers for his mission, Cage throws them off a plane and says he prefers some other teammates. He then chooses three other people. Two of these include a skilled sniper and an experienced driver, which makes sense because these skills are important for espionage missions. His third choice, out of all characters imaginable, is a talented DJ. What kind of people should you choose for assistance in a dangerous mission in which fatalities are expected? A tough soldier? A super spy? A brilliant hacker? Nope. According to Xander Cage, the answer is a brash disk jockey called nicks, played by Kris Wu. There is even a scene in which nicks uses his groovy tunes to save Cage's life. This would be hilariously apt if xXx was a spoof, which it is not, or at least that's what we're led to believe. Diesel basically tries to portray that brat with a good heart and quick wit whom we can't help but love. Instead, he ends up playing a downright jerk with lame jokes who makes no sense. For example, in another scene, cage tries to show off his knowledge about the world by saying that in today's times, there are only rebels and tyrants. When his boss cleverly asks him which one he is, setting up the scene for a powerful dialogue, Cage says, "I'm xXx", which — you guessed it - makes absolutely no sense. On the other hand, Deepika Padukone and Donnie Yen try to save the film in their own way. Padukone, who plays Cage's love interest Serena Unger, does the best an actor can do in a film in which a DJ is part of a super spy's team. Her character stands out from the others because of genuinely good acting and dialogue delivery. Unger is also the only character apart from Cage in the film with a hint of a backstory. And it is also a bit refreshing to see Padukone's Indian accent not getting replaced with some fake American accent, something which makes her character look more natural. Yen plays Xiang, who has many confrontations with Cage in the film. The best action sequences in the movie are because of

Yen, with a very well-choreographed melee combat scene between Xiang and some other characters towards the end of the movie which show how skilled Donnie Yen is in martial arts. But Padukone's charm and Yen's expertise in martial arts are not enough to save this film. But a good action movie or spy thriller is always much more than the action. Movies like Kingsman: the Secret Service, John Wick and the Raid also have some outlandish elements but are great action movies because apart from the mesmerising melee combat, explosions and gun fu, they focus equally well on the story, characters and the emotions associated with both.

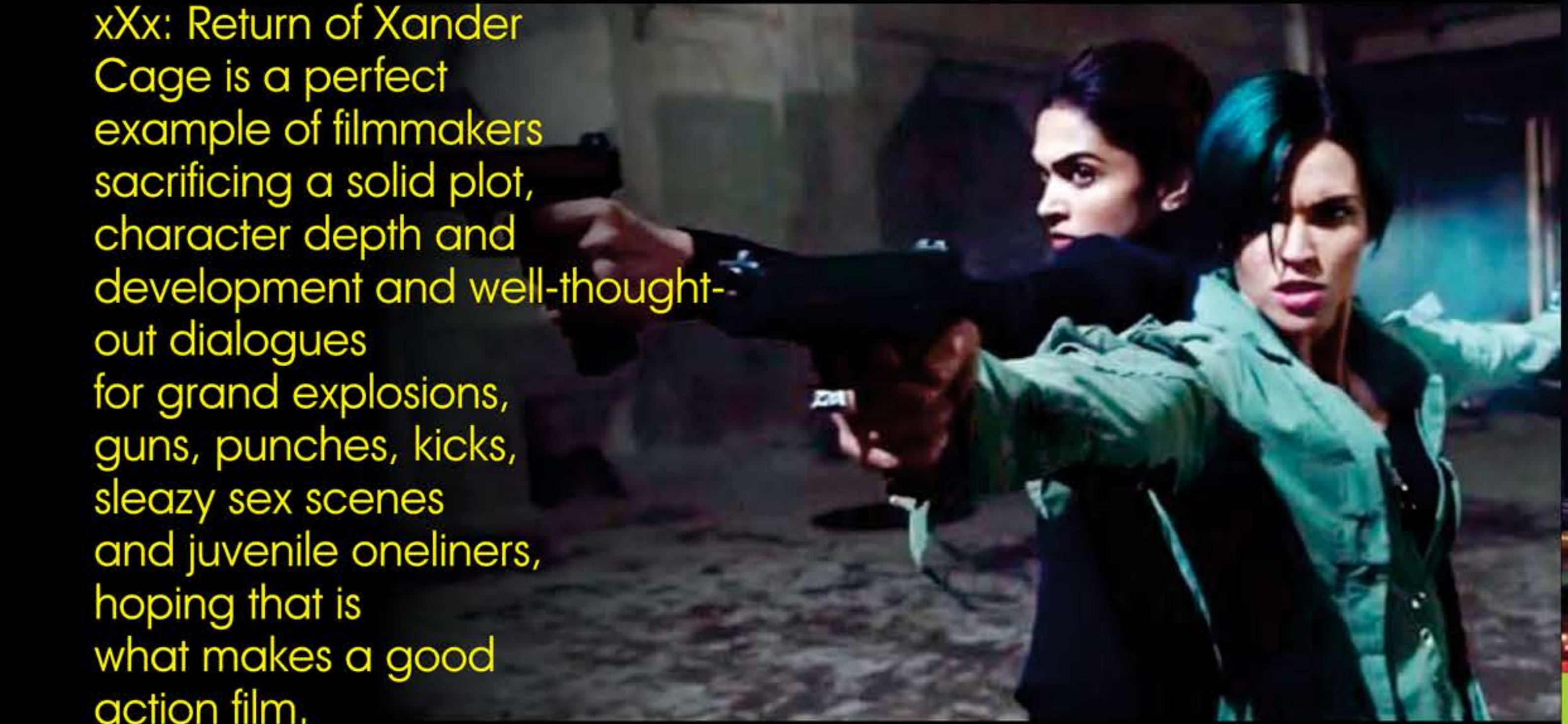

xXx: Return of Xander Cage is a perfect example of filmmakers sacrificing a solid plot, character depth and development and well-thought-out dialogues for grand explosions, guns, punches, kicks, sleazy sex scenes and juvenile oneliners, hoping that is what makes a good action film.

PRIYANKA SUFFERS HEAD INJURY

Priyanka Chopra, who is back in action shooting for the second season of Quantico in New York, was injured while shooting on the sets of the drama series. Sources said that Priyanka slipped and fell during a stunt and suffered a concussion after hitting her head. The network ABC, however, did not confirm this, although in its statement it did say that a "minor incident" took place on the sets here of the FBI drama series on Thursday night. "It would be premature to comment further until we have all the information," the network added. Priyanka's publicist confirmed the news saying, "Yes, we can confirm there was a minor incident last night on set. Priyanka was immediately taken to the hospital, examined by a doctor and released. She is resting comfortably at home on doctors orders, and will return to work after the weekend." Entertainment company Walt Disney's ABC also did not comment on whether the production would be halted. Quantico season 2 would be returning from hiatus from January 24, and would air on Star World and Star World HD. Priyanka Chopra portrays the role of a CIA agent, Alex Parrish in Quantico, and is set to play a baddie in her Hollywood debut film, alongside Dwayne Johnson, Zac Efron, Alexandra Daddario, Pamela Anderson, Jon Bass and many others. The Seth Gordon directed flick will hit theatres on May 19, next year. Priyanka was recently spotted at the Golden Globe awards, looking ravishing in golden Ralph Lauren gown. She presented an award at the ceremony to none other than Billy Bob Thornton for his bravura performance in TV series, Goliath, and that is the big win of the day.

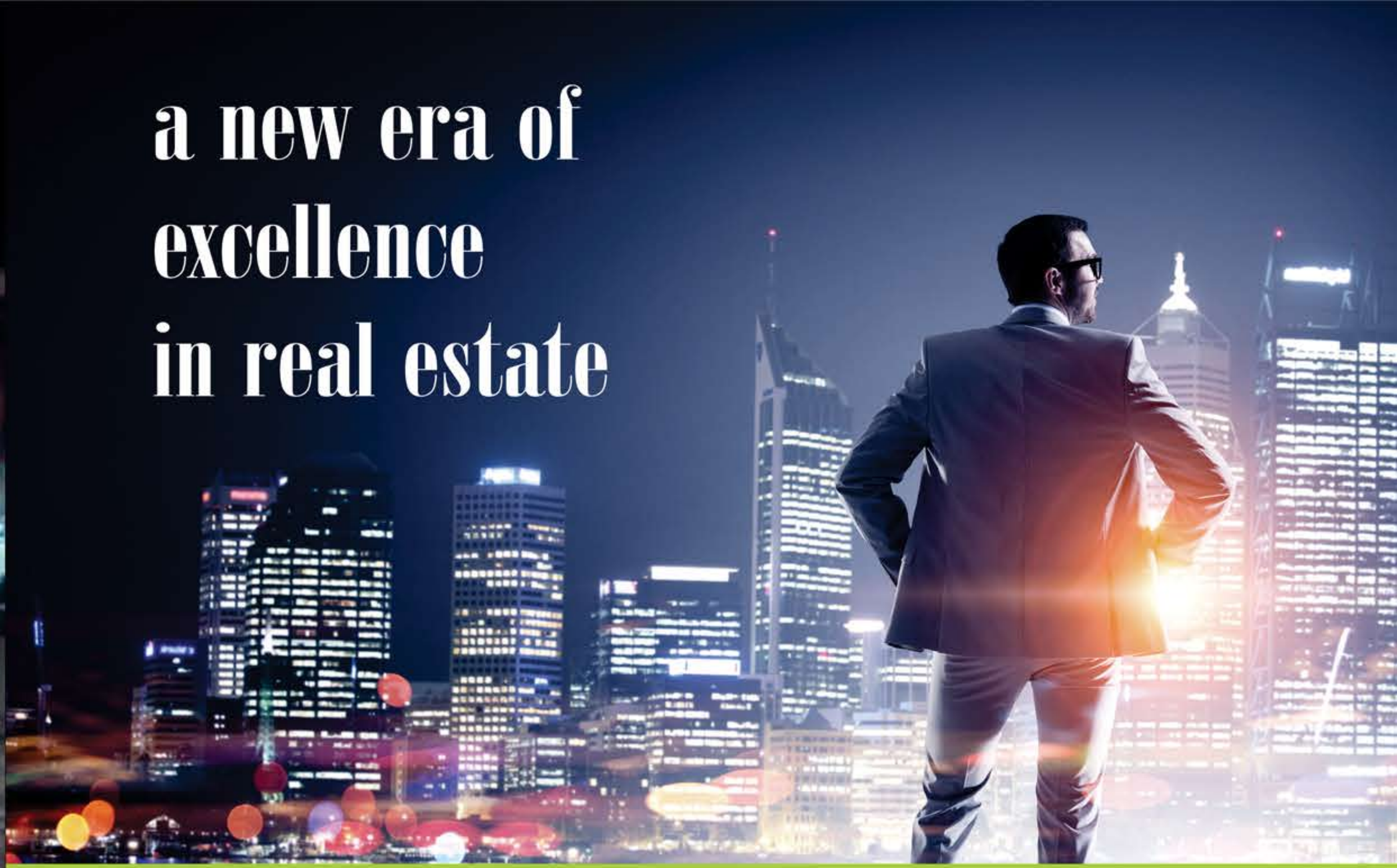

a new era of excellence in real estate

The group believes in understanding customers' needs comprehensively and offering them the finest real estate solutions. We envision at achieving excellence, applying state-of-the-art technologies, and continuously promoting high standards of quality, aesthetics and functionality.

Deepak Builders

Near Lodhi Club, Shaheed Bhagat Singh Nagar, Ludhiana-141012(Pb.) Ph: 91-161-2560106, Mobile: 98729-44011,98763-61111

आवरण कथा

पांच राज्यों में बज गई चुनावी रणभेरी

E9NEWS
MAKING POSITIVE CHANGE

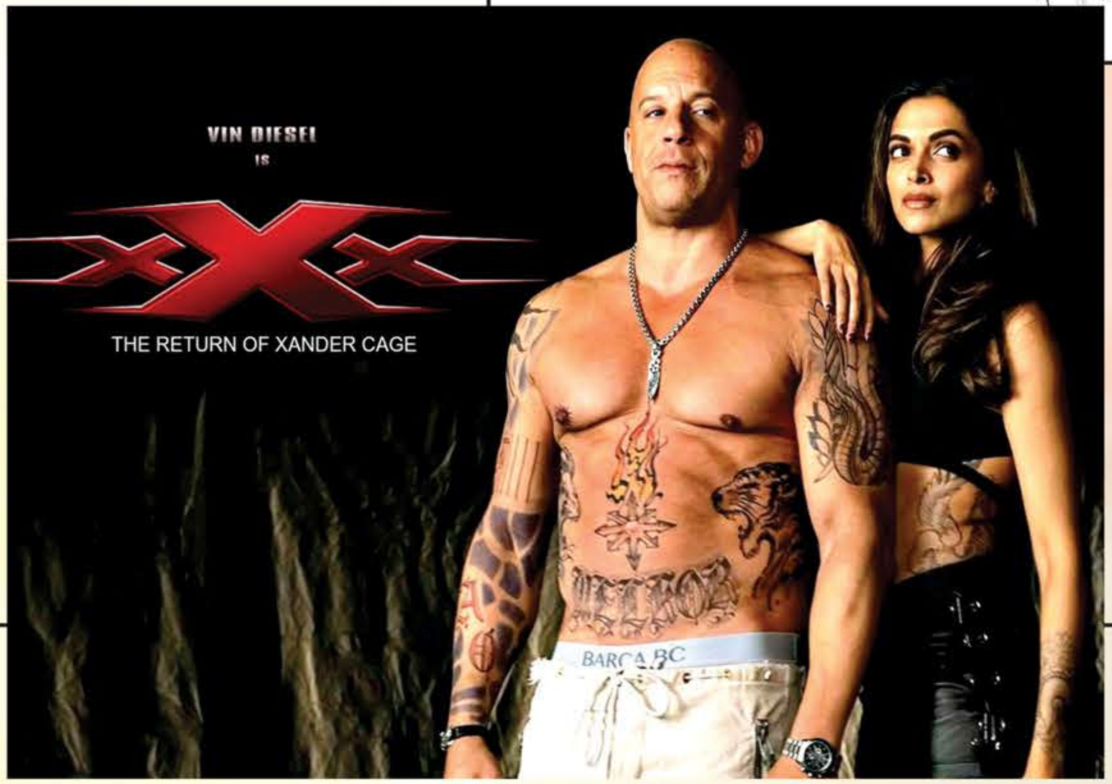

E9NEWS
MAKING POSITIVE CHANGE

Sr. No...............

SUBSCRIPTION FORM — MONTHLY NEW MAGAZINE

TIME PERIOD	TOTAL ISSUES	ORIGINAL COST	OFFER PRICE
ANNUAL	12	999	
2 YEAR'S	24	1899	

For ADVT. Contact : 98729-44011, 99149-02484, 98763-61111, 73077-77740 | e-mail : info@e9news.in

Fill the form below in capital letter and post to us.

Yes I wish to subscribe E9 News Magazine for the period of ____________________

NAME : ____________________

PROFESSION : ____________ ORGANIZATION : ____________

DELIVERY ADDRESS : ____________________

CONTACTS : ____________________

CITY : ____________ PIN CODE : ____________

TICK THE FOLLOWING : MODE OF PAYMENT : ☐ CASH ☐ CHEQUE ☐ DD

I AM ENCLOSING CHEQUE/ DD NO.: ____________ DATE : ________

DRAWN OF (NAME OF BANK) : ____________________

CHEQUE AND DD MUST BE FAVOURING **E9 NEWS** | **BANK NAME :** Punjab National Bank | **A/C TYPE :** Current Account
BRANCH : MODEL TOWN, LUDHIANA | **PNB ACCOUNT NO.:** 0304002100300339 **IFSC CODE :** PUNB0030400

TERMS & CONDITIONS

(1) Subscriber's mobile number is mandatory for subscription under this Scheme. (2) E9 NEWS (Monthly Magazine) will publish monthly in Hindi, English & Punjabi Collectively. (3) In Case of change of address, Subscribers need to notify E9 News (Magazine) one month in advance.(4) E9 NEWS (Magazine) reserves the right to terminate to extend or change this offer or any part here to at any time or to accept or reject any or all forms received at the Absolutely discretion without assigning any reasons. (5) No duplicate subscription receipt will be issued in case of loss or damage of receipt and subscriber has no right to claim any losses from E9 NEWS (Magazine). (6) All disputes are subject to the exclusive jurisdiction of Courts and Forums of Ludhiana Punjab Only. (7) Life time Subscription is for 10 years only.